वाई. एन. झा. तूफान

# भैरव सिद्धि

अकाल मृत्यु का निवारण, लक्ष्मी प्राप्ति, आरोग्य/ऐश्वर्य वृद्धि, भौमिक सुख, मनोकामना सिद्धि, शत्रु दमन, जादू, टोना-टोटका, परकृत्य, गृह क्लेश आदि विनाश के उपाय।



श्री

# भैरव उपासना




लेखक

**पंडित वाई.एन.झा तूफान**

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक



प्रकाशक

☎ 212696

## अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8

मूल्य 40 रुपये

*Published by :*

**AMIT POCKET BOOKS**

Sakhuja Market, Near Chowk Adda Tanda, Jalandhar City.

☎ (S) 212696 (R) 261421

Typesetting by : *Sunshine Computers*

Printing by : *Rachna Printing Press*

*Writer :*

**पंडित वाई.एन.झा तूफान**

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक

मकान न० 61, टोबरी मुहल्ला,

टांडा रोड, ( नजदीक देवी तालाब मंदिर )

जालन्धर शहर-144 004 ( पंजाब )

फोन न० 0181-490311

# विषय सूची

## प्रथम भाग – भगवान् भैरव अवतार खण्ड



## द्वितीय भाग - उपासना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड



## तृतीय भाग - उपासना हेतु विभिन्न आसन, मालाएँ, जल एवं पुष्पों का प्रयोग

## चतुर्थ भाग - भगवान भैरव पूजन खण्ड



## पंचम भाग - भगवान् भैरव षोड़षोपचार पूजन एवं साधना खण्ड

## षष्ठ भाग - भगवान् भैरव स्तोत्र खण्ड



## सप्तम् भाग - श्री भैरव यंत्र-मंत्र साधना खण्ड

# भूमिका

भगवान भैरव के भक्तों!

"भगवान भैरव" साक्षात शिव के पंचम अवतार हैं, अत: परब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। शिव जी की निन्दा के कारण ब्रह्मा के गर्व को चूर्ण करने के उद्देश्य से ही शिव ने "भैरव" रूप में अवतार लिए थे। श्री भैरव ने अपनी बांई अंगुली के तीक्ष्ण नख से ब्रह्मा के पांचवें मस्तक को काटा था। तभी से ब्रह्मा चतुर्मुख हो गए।

आज अधिकांश सद्गृहस्थ भगवान श्री भैरव जी को शनिदेव के समान ही क्रूर और भयंकर देवता मानते हैं, जबकि सबका कल्याण करने वाले भगवान शिव का साक्षात स्वरूप एवं अमर अवतार होने के कारण आप परम उदार दयालु तथा भक्तवत्सल हैं, जो थोड़ी सी आराधना-उपासना से ही प्रसन्न होकर साधकों को संसार का समस्त सुख प्रदान कर देते हैं।

भगवान भैरव के उपासकों की बहुत दिनों से यह मांग रही है कि कोई ऐसी पुस्तक प्राप्त हो जो कि "भैरव सिद्धि" के सभी अंशों को सरलता से समझाते हुए - साधना पूर्ण करा सके। इन्हीं मांग को देखते हुए "भगवान भैरव की साधना" के तथ्यों को कई वर्षों के गहन अध्ययन एवं साधना के पश्चात् इस ग्रन्थ का निर्माण कर रहा हूँ, जिससे साधक साधना में सफलता प्राप्त कर सकें। उपासना सम्बन्धी कठिनाईयों को देखते हुए मैंने समस्त देवी-देवताओं पर आधारित - "उपासना पद्धति" की रचना की है, जो "अमित पाकेट बुक्स" जालंधर सिटी से प्रकाशित है, उन्हीं उपासना पद्धति में से यह "भैरवोपासना" है।

इस उपासना पद्धति में भगवान भैरव का नित्य पूजन, पाठ, उपासना करने की विधि, उपासना के अनेकों स्तोत्र, मंत्र, यंत्र साधना की सरल विधि, श्री भैरव मूल मंत्र, पंचोंपचार पूजन विधि, षोड़शोपचार पूजन विधि, कलश स्थापना विधि, हवन विधि, माला जप विधि, आसन प्रयोग विधि, मातृका पूजन विधि, श्री भैरव के अनेकों अवतार कथा आदि अनेकों विषयों का वर्णन है।

जो भक्तगण संस्कृत पढ़ना नहीं जानते हैं, वे भी इस पुस्तक से उपासना-साधना कर सकते हैं, क्योंकि श्लोकों को सरल हिन्दी में भी अनुवाद किया गया है।

पाठकों! इस उपासना पद्धति को अपने जीवन में अपनाकर आप पूर्ण लाभान्वित होंगे, "श्री भैरव भक्तों के लिए यह अमोघ प्रसाद है।" इसके अलावा "लाल किताब" सहित ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान की अनेकों सरल पुस्तकें, यंत्र साधना पर आधारित पुस्तकें भी हमारी लिखी हुई "अमित पाकेट बुक्स से प्रकाशित हैं" जिसे पढ़कर विश्व का कोना-कोना लाभान्वित हो रहा है। साधना हेतु सिद्ध गुरू कवच यंत्र, नवग्रह दोष निवारक तांत्रिक सिद्ध यंत्र, किसी भी कामना की पूर्ति हेतु सिद्धतांत्रिक यंत्र, "जन्म पत्रिका" बनवाने हेतु, जीवन भर का "सम्पूर्ण भाग्यफल" प्राप्त करने हेतु आप हमारे कार्यालय से पत्राचार कर सकते हैं। आपके समस्त पत्रों का उत्तर देने हेतु मैं "कृत संकल्पित" हूँ। भगवान् भैरव आपकी कामना पूर्ण करें।

**कार्यालय का पता**
पंडित वाई. एन. झा तूफान
[ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक]
H. No. 61, टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,
नज़दीक देवी तालाब हॉस्पीटल
जालंधर सिटी-144004 [पंजाब] [भारत]
फोन नं. : 0181-490311

# प्रथम भाग



# भगवान् भैरव अवतार खण्ड

## भगवान भैरव नाथ का परिचय

पाठकों! तन्त्र शास्त्र के प्रवर्तक आचार्यों ने प्रत्येक उपासना कर्म की सिद्धि के लिए किए जाने वाले जप-पाठादि कर्मों के आरम्भ में - भगवान भैरव नाथ की आज्ञा प्राप्त करने का निर्देश किया है। इसलिए हम प्रार्थना करते हैं-

**अति क्रूर महाकाय, कल्पान्त-दहनोपम्।**
**भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातुभहसि॥**

इससे यह स्पष्ट है कि सभी पूजा-पाठों की आरम्भिक प्रक्रिया में भैरवनाथ का स्मरण, पूजन, मन्त्र जप आदि आवश्यक होते हैं। भगवान भैरव का नाम सुनते ही बहुत से लोग तो भयभीत हो जाते हैं और कहते हैं कि - "ये उग्र देवता है, अत: इनकी साधना उपासना में नहीं पड़ता। इनकी साधना वाम मार्ग से होती है, अत: हमारे लिए उपयोगी नहीं है।" किन्तु यह उनका भ्रम मात्र है। प्रत्येक देवता सात्विक, राजस और तामस स्वरूप वाले होते हैं, परन्तु ये स्वरूप उनके द्वारा भक्त के कार्यों की सिद्धि के लिए ही धारण व वरण किए जाते हैं। "जैसी स्थिति वैसी गति" के अनुसार ये प्रभु इतने कृपालु एवं भक्तवत्सल हैं कि सामान्य स्मरण एवं स्तुति से ही प्रसन्न होकर भक्त के संकटों का तत्काल निवारण कर देते हैं।

"श्री भैरव नाथ के अवतार का वर्णन पुराणों में विविध रूप से व्यक्त हुआ है। ये कहीं स्वयं शिव हैं तो कहीं शिव के पुत्र, कहीं भगवान विष्णु स्वरूप हैं तो अन्यत्र स्वतंत्र देव।" इसी प्रकार भैरव के उपासना विधानों के अनुसार भी इनके आकाश भैरव, स्वर्णाकर्षण भैरव, पाताल भैरव जैसे नामों से भी अनेक विधान प्राप्त होते हैं। इनकी महत्ता एवं बलवत्ता के कारण ही "रूद्रयामल" में अनेक विध प्रयोगों का निर्देश हुआ है।

"बटुकोपासना कल्पद्रुम" ग्रन्थ में इनका "बृहज्ज्योतिषार्णव" के निर्माता आचार्य श्री हरि कृष्ण जी ने अच्छा संकलन प्रस्तुत किया है। इनके अतिरिक्त भी

उत्तरकाल के प्रसिद्ध साधकों ने पर्याप्त विस्तार के साथ साधन पथ को प्रशस्त किया है। साधना की विविधता के कराण ही भैरव साधना सम्बन्धी साहित्य को भी विविधता उपलब्ध होती है। वेदों में जो रूद्र की भय-हरणकारी स्तुति की गई है और उपनिषदों में भयावह स्वरूप धारी होने से जिसके भय से इन्द्रादि देवों के द्वारा स्वकर्म सम्पादन का वर्णन हुआ है, वह भगवान भैरव नाथ की ही स्तुति और वर्णन है। शुक्ल यर्जुवेद संहिता का यह मंत्र इसकी पुष्टि करता है, इसमें शान्त एवं रौद्र दोनों प्रकार के स्वरूपधारी रूद्र से प्रार्थना की गई है-

**या ते रूद्र! शिवा तनूरधोरा अपाप काशिनी।**
**तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशान्ताभि चाकशीहि॥**

इतना ही नहीं, भैरव ही ब्रह्मा और विष्णु रूप भी हैं। भैरव नामावली पर खरड़ निवासी भागवत के व्याख्याकार पंडित श्री वंशीधर जी ने व्याख्या की है, उसमें 108 नामों को विष्णु स्वरूप बोधक ही व्यक्त किया है।

तन्त्र और पुराणों के आधार पर ज्ञात होता है कि भैरव के अनेक अवतार हुए हैं। एकादश रूद्रावतार बावन भैरव, क्षेत्रपाल भैरव और बेताल आदि स्वरूपों के अतिरिक्त भगवती के प्रमुख दश महाविद्याओं के भैरव आदि अवतारों की परम्परा विश्व व्यापी है।

## भगवान शिव के साक्षात अवतार भैरव देव जी

श्री भैरव देव जी। भगवान् शिव के साक्षात अवतार हैं। वे भोलेनाथ की तरह ही शीघ्र प्रसन्न होकर भक्तों को मनचाहा वरदान देने वाले हैं। शास्त्रों में ईश आराधना की सभी पद्धतियों में "उपासना" को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, वहीं भगवान् भैरव देव जी को सबसे शीघ्र प्रसन्न होकर सभी कामनाएँ पूर्ण करने वाले देव की संज्ञा दी गई है। इन्हें प्रसन्न करने के लिए कर्म काण्ड के कठोर नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं है, वे तो श्रद्धा, भक्तों के प्यार के भूखे हैं।

आम धारणा है कि भगवान भैरव देव उग्र व प्रचण्ड हैं, लेकिन सच्चाई इससे विपरीत है क्योंकि प्रसन्न होने पर वे सर्व फल प्रदाता हैं। एक सामान्य-गृहस्थ भी उनकी आराधना-उपासना कर सकता है। देवाधिपति महेश्वर के साक्षात स्वरूप एवं अमर अवतार होने के कारण आप परम उदार, दयालु तथा भक्तवत्सल तो हैं ही, भगवान विष्णु, भगवान शिव, श्री राम और योगेश्वर कृष्ण के समान ही साक्षात ईश्वर अर्थात् भगवान भी हैं। ब्रह्मा, विष्णु एवं भगवान शिव से अनेक वरदान तथा अधिकार प्राप्त होने के कारण आप सभी देवों और ईश्वर के अन्य अवतारों से अधिक शक्तिशाली भी हैं। भक्तवत्सल श्री हनुमान जी के समान ही आप भी इस भू-मण्डल

पर निवास करते हैं और अदृश्य रूप में अथवा विभिन्न रूप धारण करके हम लोगों के मध्य विचरण करते रहते हैं।

इसीलिए प्राचीन काल से ही भगवान भैरव देव जी की आराधना उपासना, उनके मंत्रों का जप और तांत्रिक सिद्धियां बड़े पैमाने पर होती आ रही है। उन्हें "तन्त्रशास्त्र" का मूलाधार माना गया है।

## "रूद्रावतार" भगवान शिव ही "भैरव" हैं

पाठकों! विश्व के विकाश का स्त्रोत है "सकल ब्रह्म"। उनकी यह स्थिति सृष्टि रचना विषयक संकल्प के समय होती है। इससे पूर्व वह "निष्कल" निर्गुण-निराकार-परमात्मा कहलाता है। वह वाणी और मन की पहुंच से परे हैं, उसमें द्रव्य, गुण आदि छहों प्राकृत भाव-पदार्थों का सर्वथा अभाव है। विश्व सृष्टि के पूर्व वह नाम रूप आदि भेदों से भी रहित है। वैरवरी वाणी के द्वारा लक्षित जो परावाक् है तथा श्रुति ने "सत् चित, एवं आनन्द"-इन तीनों शब्दों से जिसके स्वरूप की ओर संकेत-मात्र किया है, वही वह "निष्कल ब्रह्म" है। उसी का शुद्ध प्रकाश परासवित् पूर्ण हन्ता तथा चिति आदि शब्दों के द्वारा अभिहित किया गया है। वेदों में उसी का नाम "रूद्र" है तथा मन्त्र शास्त्रों में वही "भैरव" नाम से वर्णित हुआ है-

**भयादस्या ग्निस्तपति भयात् तपति सूर्यः।**
**भयादिन्द्र वायुश्च मत्युर्धावति पञ्चमः** [ कठ, 2/3/3 ]
**भीषास्माद् वातः पवते। भीषोदेति सूयः।**
**भीषास्मादग्नि श्चेन्द्रश्च। मृत्युर्वावति पञ्चमः॥** [ तैत्ति, 2/8/1 ]
**महद्भयं बज्रमुद्यतम्।** [ कठोपनिषद्-2/3/2 ]

अर्थात्-इसी के भय से अग्नि एवं सूर्य तपते हैं। इसी के भय से इन्द्र, वायु एवं पांचवें मृत्यु देवता अपने-अपने काम में तत्पर हैं, इसी के भय से वायु चलती है, इसी के भय से सूर्य उदित होता है। "उठे हुए वज्र के समान जो महान भय स्वरूप परमात्मा को जानता है"-इत्यादि श्रुतियां जिस सहस्त्रशीर्ष महा-भयंकर वेद पुरुष का वर्णन करती हैं-वही तन्त्रों में "भैरव" नाम से वर्णित हैं।

भगवान शिव के "रौद्र रूप" भैरव स्वरूप का वर्णन ऊपर वर्णित किया गया अब सौम्य रूप की झांकी भी देखिए-

**नमः शम्भवाय च मचोभवाय च शंकराय च।**
**नमः शिवाय च शिव-तराय च॥** [ शुक्ल यजुर्वेद सं.-16/41 ]

अर्थात्-

मोक्ष एवं संसार दोनों ही स्वरूप वाले, संसार के सभी सुख देने वाले कल्याणकारी परम मंगलमय शिव को नमस्कार है।

आगे एक उपमा और देखिए-

**या ते रूद्र शिवा तनूरघोराऽ पाप काशिनी।**

**तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाक शीहि॥** [ शुक्ल यजु. 16/2 ]

अर्थात्-

कैलाश पर्वत, वेदवाणी अथवा मेघमण्डल में विराजमान होकर प्राणियों को सुख देने वाले हैं-रूद्र! आपका जो शान्त [मंगलमय] और अघोर [विषम भाव से रहित अथवा सौम्य] तथा अपा काशी पुण्य फल को प्रकाशित करने वाला शरीर है, उसी अतिशय सुख प्रदान करने वाले शरीर से तुम मेरी ओर देखो। [मुझे सुख पहुंचाने के लिए मुझ पर कृपा दृष्टि करो।]

जिस प्रकार वेदों में सौम्य रूप का वर्णन है, उसी प्रकार तन्त्रों में भी - "शान्त: शान्त जन प्रिय: प्रशान्त: शान्तिद: शंकर: विष्णु"-आदि सौम्य रूप के बोधक नाम दृष्टि गोचर होते हैं।

"श्री बटुक भैरव" अष्टोत्तर शतनाम: स्त्रोत, के अन्त में विष्णु नाम है और - "पाञ्चरात्र आगम" में भगवान विष्णु का एक नाम - "भैरव" दिया है।

यजुर्वेदान्तर्गत- "रूद्राष्टाध्यायी" में "नमो दुन्दुभ्याय" पद आता है। बृहस्पति के साढ संवत्सर चक्र के अन्तर्गत 56 वें संवत्सर का नाम "दुन्दुभि" है, जिसके अभिमानी देवता "भैरव" हैं।

वेदों में परमात्मा के रौद्र रूप के लिए जो "कालाय नम:" पद आता है, वही काल: कपालमाली [बटुक भैरव स्त्रोत] तथा गीता में "कालोस्मि" के रूप में बताया गया है। अस्मि पद में जो पूर्णहन्ता है-वही "भैरव" है।

# विभिन्न पुराणों एवं तन्त्र शास्त्रों में श्री भैरव के अवतारों का वर्णन

## शिव पुराण के अनुसार भैरव अवतार कथा

पाठकों! भगवान शंकर के अवतारों में "भैरवावतार" का अपना एक विशिष्ट महत्व है। इनकी कथा के साथ भगवान शिव की उत्कर्ष कथा संलग्न है। "शिव पुराण" में भैरव को परमात्मा शंकर का पूर्ण रूप बतलाया है-

**"भैरव: पूर्णरूपो हि शंकरस्य परात्मन:।**

**मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिता: शिवमायया"**

तथा वहीं इनके अवतार की कथा इस प्रकार वर्णित है-

एक बार "सतुत्व" की [महर्षि] की जिज्ञासा से सभी देव तथा ऋषिगण सुमेरू पर्वत पर ब्रह्मा जी के पास गए और उनसे -"अव्यय तत्व" के बारे में पूछा। ब्रह्मा ने स्वयं को "सर्वातिशायी परम तत्व रूप" बतलाया। जब यह बात विष्णु को ज्ञात हुई तो उन्होंने ब्रह्मा को अज्ञानी कहकर अपने को ही परम तत्व (सर्वश्रेष्ठ देव) प्रतिपादित किया। किन्तु जब वेदों से पूछा गया तो उन्होंने शिव को ही सर्वश्रेष्ठ परमतत्व बतलाया। इस पर भी ब्रह्मा और विष्णु ने मोहवश उनके कथन का खंडन कर दिया। तब उसी समय वहां एक तेजपुंज के बीच एक पुरूषाकृति दिखलायी पड़ी, जिसे देखकर ब्रह्मा का पंचम सिर कोप से प्रज्जवलित हो उठा। ब्रह्मा जब तक उस आकृति को देखते हैं,तब-तक महा पुरुष "नील लोहित" के रूप में दिखलाई दिया।

उसे देखकर ब्रह्मा ने कहा-

चन्द्रशेखर! डरो नहीं। पूर्वकाल में तुम मेरे भाल स्थान से उत्पन्न हुए हो। मैंने ही तुम्हारा "रूद्र" नाम रखा था। तुम मेरे पुत्र हो। अतः मेरी शरण में आवो।

विधाता की इस गर्वपूर्ण उक्ति से भगवान शिव को बहुत क्रोध आया और उन्होंने एक अत्यन्त भीषण पुरूष को उत्पन्न करके कहा-

"काल की भांति शोभित होने के कारण आप साक्षात "कालराज" हैं। भीषण होने से "भैरव" हैं। आप से काल भी भयभीत होगा अतः आप "काल भैरव" हैं। दुष्टात्माओं का मर्दन करने से आप आमर्दक कहलायेंगे। काशी के आप अधिपति होंगे।"

शिव के इन वरों को प्राप्त कर श्री भैरव ने अपनी वामांगुली के नयाग्र से [बाएं हाथ की कनिष्ठा उँगली के नख के अग्र भाग से] ब्रह्मा के उस अपराध कर्ता पंचम सिर को काट दिया। लोक-मर्यादा रक्षक शिव ने तदनन्तर "भैरव" को ब्रह्म हत्या से मुक्त होने के लिए कापालिक व्रत धारण करके वाराणसी में निवास करने का आदेश दिया और वे वहीं "काल भैरव" के रूप में विराजमान हैं। यहाँ विशेष रूप से यह कहा गया है कि-

**विश्वेश्वरस्य ये भक्ता न, भक्ताः काल भैरवे।**
**ते लभन्ते महा दुःख काश्यां चैव विशेषतः ॥**

अर्थात्- "शिव के भक्त-होकर यदि "काल भैरव" की भक्ति नहीं रखते हैं तो वे महान दुःख को प्राप्त करते हैं," और यह बात काशी में-विशेष रूप से ध्येय है।

इसी पुराण में "कापालिक" का वर्णन "उत्तर वायवीय संहिता के" 31 वें अध्याय में हुआ है, जिनमें चार प्रकार के शैवों में कापालिक शैवों के आराध्य "भैरव" की अपूर्व महिमा बतलाई है। कापालिक सम्प्रदाय का मूलाधार "भैरव" ही हैं।

## "कूर्म पुराण" के अनुसार भैरव अवतार कथा

पाठकों! "कूर्म पुराण" में भगवान भैरव के बारे में वर्णित हैं कि - हिरण्याक्ष का पुत्र "अन्धक" दैत्यों का राजा बना। तब वह महेश्वर शिव की परम शक्ति पार्वती के रूप पर मोहित होकर उनका अपहरण करने की इच्छा से अवसर की प्रतीक्षा-करने लगा। एक समय जब भगवान शिव ब्राह्मणों के हित के लिए भूमण्डल में भ्रमणार्थ चले गए तो उसने अवसर पाकर कैलाश पर आक्रमण कर दिया। इधर भगवान विष्णु पार्वती की सहायता के लिए स्त्री रूप धारण कर पार्वती की सखी के रूप में वहां रहने लगे। नन्दीश्वर और गणपति द्वारपाल के रूप में नियुक्त थे। अन्धक को उस समय तो इन्होंने परास्त कर दिया। किन्तु दूसरी बार पुनः विशेष तैयारी करके आक्रमण किया तब भगवान विष्णु ने शिव से कहा-

"हे रूद्र! आप इस राक्षस का संहार करें। आपके बिना यह अन्य किसी से नहीं मारा जायेगा।" तब शिव ने "भैरव" का रूप धारण किया तथा भीषण युद्ध के पश्चात् उसका वध कर दिया। तभी से शिव-अन्धकारि, अन्धाकान्तक, अन्धक रिपु आदि नाम से विख्यात हुए।

## अन्य पुराणों में "श्री भैरव" अवतार का वर्णन

पाठकों! "स्कन्द पुराण" के अन्तर्गत "शंकर संहिता" तथा "भैरव खण्ड" भी भैरव चरित्र का वर्णन करते हैं।

"ब्रह्मवैवर्त पुराण" के प्रकृति खण्ड के अन्तर्गत "दुर्गो पाख्यान" में भी आठ पूज्य भैरवों का निर्देश है, इनमें-

1. महाभैरव, 2. संहार भैरव, 3. असितांग भैरव, 4. रूद्र भैरव, 5. काल भैरव, 6. क्रोध भैरव, 7. ताम्र चूड़ भैरव तथा आठवां 8. चंद्र चूड़ भैरव के नाम हैं तथा इनकी पूजा करके मध्य में नवशक्तियों की पूजा करने का आदेश है। वही गणपति खण्ड के 41 वें अध्याय में सात और आठ संख्या वाले भैरवों के स्थान पर "कपाल भैरव" और "रूद्र भैरव" का नामोल्लेख हुआ है।

"तन्त्रसार" में- 1. असितांग 2. रूरू, 3. चण्ड, 4. क्रोध, 5. उन्मत्त, 6. कपाली, 7. भीषण, तथा 8. संहार नामक आठ भैरवों का वर्णन है।

"कालिका पुराण में"-शिव जी के 1. नन्दी, 2. भृंगी, 3. महाकाल, 4. बेताल तथा 5. भैरव ये गण बतलाए गए हैं।

भक्तों के हितकर शिव के अमित अवतार हो चुके हैं, उनमें दस अवतार अति महत्वपूर्ण हैं। ये अवतार शक्ति-सहित इस प्रकार हैं-

1. महाकाल और महाकाली, 2. तार तथा तारा, 3. बाल भुवनेश एवं बाला भुवनेशी, 4.षोडश श्री विद्या और षोड़शी श्री विद्या, 5. भैरव तथा भैरवी, 6. छिन्न मस्तक एवं छिन्न मस्ता, 7. घूमवान तथा घूमावती, 8. बगलामुख और बगलामुखी, 9. मातङ्ग तथा मातङ्गी और कमल एवं कमला। इन दस अवतारों का माहात्म्य सर्व कामप्रद है। ये अवतार "तन्त्र शास्त्र" में दस महाभैरव तथा दस महा-विद्याओं के रूप में पूजित हैं। खलों को (शत्रुओं को) दण्ड देना तथा ब्रह्मतेज की वृद्धि करना इनके मुख्य कार्य हैं। [शिव०-13/17/16]

## भगवान "बटुक भैरव" अवतार कथा

पाठकों! "शक्तिसंङ्गम तंत्र" के "काली खण्ड" में भैरव की उत्पत्ति के बारे में वर्णन है कि-

"आपद्" नामक राक्षस ने कठोर तपस्या करके वर प्राप्त कर लिया था, जिसके कारण वह सभी देवी-देवताओं से अजेय बन गया। उसने अपनी मृत्यु पाँच वर्ष के विशिष्ठ रूप, तेज एवं गुणों से सम्पन्न बालक के हाथों चाही थी और वह वर उसे प्राप्त हो चुका था। इसके फलस्वरूप उस महाबली, पर्वताकार एवं अति क्रूर राक्षस के आसुरी अत्याचारों से तीनों लोकों में उत्पीड़न मच गया और त्राहि-त्राहि की पुकार उठने लगी।

देव वर्ग उसके अत्याचारों से बहुत भीत और त्रस्त था। इस घोर-संकट से त्राण पाने एवं त्रिलोकी को उबारने के लिए सभी देवता एक होकर "आपद" के वध का उपाय सोचने लगे।

अकस्मात उन सब के देह से एक-एक तेजोधारा निकली और प्रत्येक देव युगल के सम्मिलित [रजत एवं श्वेत] "तेजस" के मिलन बिन्दु पर एक-एक पंचवर्षीय "बटुक" का आविर्भाव हुआ, जो उस युगल का "बटुक" कहा जाता है। इन असंख्य बटुकों के अद्‌भव के बाद भी वह तेजोधारा और आगे बढ़ी तथा एक निश्चित बिन्दु पर "पुञ्जी भूत" हो गई। विभिन्न-विभिन्न देव युगलों के तेज से वैसे ही एक अन्य पंचवर्षीय बालक (बटुक) का प्रादुर्भाव हुआ, जैसे "शप्तसती वर्णित" "महालक्ष्मी" का देवताओं के तेज से हुआ था। इस बटुक ने "आपद" राक्षस को मारकर देवताओं को संकट से मुक्त किया और त्रैलोक्य की रक्षा की। इसी कारण इन्हें "आपादुद्धारक बटुक भैरव" कहा जाता है।

## क्षेत्रपाल और भैरव

पाठकों! जन साधारण में क्षेत्रपाल और भैरव को पृथक-पृथक रूप में पहचाना जाता है। वस्तुतः यह नाम कर्म विशेष की दृष्टि से भिन्न रूप से निर्दिष्ट है। उन पचास

क्षेत्रपालों का आकारादि अक्षरों के आधार पर "संयोजन" भी प्राप्त होता है। भैरव नामावली में क्षेत्रपाल को भैरव के रूप में ही पूज्य माना जाता है। "प्रयोग सार" में कहा गया है कि-

**क्षेत्रपालम सम्पूज्य चः कर्म कुरूते नरः।**
**तस्य कर्मफलं हन्ति क्षेत्रपालो न संशयः॥**

ये क्षेत्रपाल भी भिन्न-भिन्न रूप से संख्याओं में वर्णित हैं। इनके नाम आकारादि क्रम से मातृका वर्णों के आधार पर बने हुए हैं। अतः कहीं 49, कहीं 51 और कहीं इससे भी अधिक बताये गये हैं।

## श्री भैरव जी के वर्ण, वस्त्र, आसन और आयुधं

पाठकों "भैरव" शब्द में तीन अक्षर होते हैं -

"भ, र, व" और इन तीनों अक्षरों के अलग-अलग अर्थ हैं। "श्री तत्व निधि" और अन्य तन्त्रों में इन तीनों अक्षरों के ध्यान का वर्णन इस प्रकार बतलाया है, जिससे भगवान भैरव के वर्ण, वस्त्र, आसन और आयुध का वर्णन स्पष्ट हो जाता है-

**"भ"- भाख्या तु श्यामला चैकव वक्त्रा भद्रासने स्थिता।**
**उद्यदर विनिभा छत्ते शर-चाप-वराभयान॥**

अर्थात्-"भ" नाम वाली जो भैरव मूर्ति हैं, वह श्यामला है, भद्रासन पर विराजमान है तथा उदयकालीन सूर्य के समान। [सिन्दूर वर्णी] उसकी कान्ति है। उनके एक मुख है और उन्होंने चार हाथों में धनुष वाण, तथा अभय धारण कर रखे हैं।

**"र"- रेफाख्या रेचिका श्यामा सिंहस्था लोहितांशुका।**
**पञ्चास्याष्ट करा धत्ते दक्षवाम करैस्तु सा॥**
**खड्ग खेटाडकुशगदा-पाश शूल वराभयान्।**

अर्थात्-

"रेफ" नामवाली भैरव मूर्ति श्याम वर्ण है, वह रेचिका कही गयी है। उनके वस्त्र लाल हैं। वह सिंह की पीठ पर आरूढ़ है। उनके पाँच मुख और आठ हाथ है। वह अपने दाहिने और बाएँ हाथों में खड़ग, खेट, (मूसल) अंकुश, गदा, पाश, शूल, वर तथा अभय धारण करती है।

**"व"— वाख्या परायणी देवी स्फटिका भरणांशुका।**
**स्फुटपद्यासना धत्ते पद्मद्वय-वराभयान्॥**

अर्थात्-

"व" नाम वाली भैरवी शक्ति के आभूषण और वस्त्र स्फटिक के समान श्वेत है, वह देवी लोकों का परम आश्रय है। विकसित कमल पुष्प उसका आसन है। वह चार हाथों में क्रमशः दो कमल, वर एवं अभय धारण करती है।

इनमें सिन्दूर, श्याम तथा श्वेत वर्ण क्रमशः रजस्, तमस तथा सत्व गुणों के द्योतक हैं। तन्त्रों में भी भैरव के सात्विक, राजस और तामस तीनों प्रकार के ध्यान तथा पूजा के विधान मिलते हैं। इस ध्यानों के फल भी "शारदा तिलक" और "मेरू तन्त्र" में उपलब्ध हैं, जिनकी चर्चा आगे की जायेगी।

## शक्ति उपासना का अभिन्न अंग भैरव उपासना

उपासकों! शास्त्रों में कहा गया है कि शक्ति उपासना के बिना भैरवोपासना और भैरवोपासना के बिना शक्ति उपासना परिपूर्ण नहीं होती है, अतः दोनों एक-दूसरे के अविभाज्य एवं अच्छेद्य अंग हैं। अनिष्ट निवृति तथा अभीष्ट पूर्ति के लिए इन दोनों की साधना का विधान बताया गया है। "चतिदण्डैश्वर्य विधान" में कहा गया है कि-

**शक्तयः सर्वदा सेव्याः साधकै भैरवार्चिताः।**
**अतोऽन्यथा न सिद्धिः स्यात् कल्पकोटि शतैरपि॥**

इसी प्रकार अन्यत्र स्पष्ट कहा गया है कि शक्ति की उपासना में श्री भैरव जी की उपासना अनिवार्य है। इसके बिना शक्ति मंत्र सिद्ध नहीं होते।

**केवल यो जपेच्छाक्तं मन्त्रं शैवं च योजयेत।**
**कोटि जन्म जपेनापि न मन्त्रः सिद्धि भाग भवेत्॥**
**यस्या देव्यास्तु यो देवः शिवस्तस्याः शिवो भवेत्।**
**तेन विद्या महादेवि कलौ सिद्ध्याति सत्वरम्॥ [ रूद्रयामल ]**

अर्थात्- "जो साधक शिव मंत्र को छोड़कर केवल शक्ति मंत्र का जप करता है, उसको कोटि जन्म पर्यन्त जप करने से भी "मन्त्र सिद्धि" की प्राप्ति नहीं होती है। जिस देवी के जो शिव हैं,वे उसके उसी रूप में मंगलकारी होते हैं। हे महादेवि! कलियुग में उससे शक्ति मंत्र विद्या की सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।"

"शक्तिसंङ्गम तंत्र" में भी इस कथन की पुष्टि इस प्रकार की गई है-

**क्रोध भैरव-संयोगाद् यक्षिण्यः सिद्धिदा यथा।**
**तथा विद्याः प्रसिद्ध्यन्ति पुंयोगादेव पार्वति॥**

अर्थात्-

हे पार्वती! जिस प्रकार "क्रोध भैरव" के संयोग से यक्षिणियाँ शीघ्र फलदायिनी होती हैं, उसी प्रकार पुंयोग से ही शक्ति विद्याएं शीघ्र सिद्धि दायिनी होती हैं।

अतः श्री भैरव की साधना सभी शक्ति के उपासकों के लिए अत्यावश्यक है, तथा जो भगवान शिव के उपासक हैं, उनके लिए तो श्री भैरव शिव-रूप होने से उपास्य हैं ही।

श्री भैरव और भैरवी की सामूहिक उपासना भी होती है। उनके स्वरूप का स्मरण करते हुए वन्दन किया जाता है कि-

**''जपा-कुसुम साङ्कशौ मदघूर्णित-लोचनौ।**
**जगतः पितरौ बन्दे भैरवी-भैरवात्मकौ॥''**

अर्थात्-

''जपा-कुसुम'' के समान कान्ति वाले, मद्विह्वल नेत्र, संसार के माता-पिता श्री भैरवी और भैरव को मैं वन्दन करता हूँ।

## [ तंत्र शास्त्र के अनुसार ]
## भिन्न-भिन्न शक्तियों के विभिन्न भैरव

उपासकों! विविध शक्तियों के अपने-अपने भैरव रूपों का वर्णन तंत्र शास्त्रों में प्राप्त होता है। यहाँ मैं दस महाविद्याओं एवं उनके भैरवों का नाम ''रूद्रयामल'' तथा अन्य तंत्रों के आधार पर प्रस्तुत कर रहा हूँ-

**कालिकाया महाकालः सुन्दर्या ललितेश्वरः।**
**तारायाश्च तथा अक्षोभ्यश्छिन्नाया विकरालकः॥**
**भुवनाया महादेवी धूम्रायाः काल भैरवः।**
**नारायणो महालक्ष्म्या भैरव्या बटुकः स्मृतः॥**
**मातङ्ग्यास्तु मतङ्गः स्यादथवा स्यात सदाशिवः।**
**मृत्युञ्जयश्च बगलाविद्यायाः परिकीर्तितः॥**

उपरोक्त श्लोकानुसार निम्न तालिका द्रष्टव्य है-

| दस महाविद्याएं | - | दस भैरव |
|---|---|---|
| 1. महाकाली | - | 1. महाकाल भैरव |
| 2. सुन्दरी | - | 2. ललितेश्वर भैरव |
| 3. तारा | - | 3. अक्षोभ्य भैरव |
| 4. छिन्न मस्तिका | - | 4. विकरालक भैरव |
| 5. भुवनेश्वरी | - | 5. महादेव भैरव |
| 6. धूमावती | - | 6. काल-भैरव |
| 7. महालक्ष्मी | - | 7. नारायण भैरव |

8. भैरवी - 8. बटुक भैरव
9. मातङ्गी - 9. सदाशिव भैरव
10. बगलामुखी - 10. मृत्युञ्जय भैरव

रूद्रयामल तंत्र के अनुसार-पाठकों! रूद्रयामल तंत्र में चौसठ भैरवों का वर्णन है-

**असिताङ्गो विशालाक्षो मार्तण्डो मोदक प्रियः।**
**स्वच्छन्दो विघ्न संतुष्टः खेचरः सचराचरः॥**
**रूरूश्च क्रोडदंष्ट्रश्य तथैव च जटाधरः।**
**विश्वरूपो विरूपाक्षो नाना रूप धरः परः॥**
**बज्रहस्तो महाकायश चण्डश्च प्रलयान्तकः।**
**भूमिकम्पो नीलकण्ठो विष्णुश्च कुलपालकः॥**
**मुण्डपालः कामपालः क्रोधो वै पिङ्गलेक्षणः।**
**अभ्ररूपो धरापालः कुटिलो मन्त्र नाचकः॥**
**रूद्रः पितामहाख्यश्च ब्युन्मन्तो बटुनायकः।**
**शङ्करो भूत वेताल स्त्रिनेत्र स्त्रि पुरान्तकः॥**
**वरदः पर्वता वासः कपालः शशि भूषणः।**
**हस्ति चर्माम्बर धरो योगीशो ब्रह्म राक्षसः॥**
**सर्वज्ञः सर्वदेवेशः सर्वभूत हृदि स्थितः।**
**भीषणाख्यो भयहरः सर्वज्ञाख्य स्तथैव च॥**
**कालाग्निश्च महारौद्रो दक्षिणो मुखरोस्थिरः।**
**संहारश्चातिरिक्ताङ्गः कालाग्निश्च प्रियंकरः॥**
**घोर नादौ विशालाङ्गो योगीशो दक्षसंस्थितः॥**

नोट :-उपरोक्त संस्कृत श्लोकों में 64 भैरवों का नाम दर्शाया गया है, जो हिन्दी में निम्न प्रकार हैं-

1. असितांग, 2. विशालाक्ष, 3. मतिण्ड, 4. मोदक प्रिय, 5. स्वच्छन्द, 6. विघ्नसंतुष्ट, 7. खेचर, 8. सचराचर, 9. रूद्र, 10. क्रोडदंष्ट्र, 11. जटाधर, 12. विश्वरूप, 13. विरूपाक्ष, 14. नानारूपधर, 15. नर, 16. वज्रहस्त, 17. महाकाय, 18. चण्ड, 19. प्रलयान्तक, 20. भूमिकम्प, 21. नीलकंठ, 22. विष्णु, 23. कुल पालक, 24. मुण्डपाल, 25. कामपाल, 26. क्रोध, 27. पिंगलेक्षण, 28. अभ्ररूप, 29. धरापाल, 30. कुटिल, 31. मन्त्रनायक, 32. महारूद्र, 33. पितामह, 34. उन्मत्त, 35. वटुनायक, 36. शंकर, 37. भूतबेताल, 38. त्रिनेत्र, 39. त्रिपुरान्तक, 40. वरद, 41. पर्वतावास, 42. कपाल, 43. शशि भूषण, 44. हरित चर्माम्बर धर, 45. योगीश,

46. ब्रह्म राक्षस, 47. सर्वज्ञ, 48. सर्वदेवेश, 49. सर्वभूतहृदिस्थित, 50. भीषण, 51. भयहर, 52. सर्वेश, 53. कालाग्नि, 54. महारौद्र, 55. दक्षिण, 56. मुकर, 57. अस्थिर, 58. संहार, 59. अतरिक्तांग, 60. कालाग्नि, 61. प्रियंकर, 62. घोरनाद, 63. विशालाक्ष, तथा 64. दक्षसंस्थित योगीश [रूद्रयामल तंत्र]

इन चौंसठ भैरवों की शक्तियां 64 योगिनियाँ प्रसिद्ध हैं। युगल स्वरूप की साधना के अभिलाषी साधक प्रत्येक भैरव नाम के साथ योगिनी के नामों का संयोजन करके पूजन आराधना करते हैं।

## द्वितीय भाग



# उपासना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

## उपासना का अर्थ

उपासकों! "उपासना" का शाब्दिक अर्थ है-समीप बैठने का प्रयास। सन्धि विच्छेद के अनुसार-उप + आसना = उपासना। उप = समीप, आसन = स्थिति = इति-उपासना।

अर्थात्-अपने भगवान से तल्लीनता का प्रयास। "कुलार्णव तंत्र" में "उपासना" की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-

**कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।**
**समीप सेवा विधिना उपास्तिरिती कथ्यते॥**

हिन्दी अनुवाद-सब प्रकार से समीप रहकर सेवा करना ही उपासना है।

"श्रीमद् भागवत" के अनुसार-

अर्थात् - पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही उपासना है।

इसी प्रकार भागवत में अन्य स्थानों पर-

**त्वतापार विग्वं भर्वासन्धुषोत्तम।**
**उपासते कामलवाय तेषां॥**

अर्थात्-"उपासना" शब्द को पूजा भक्ति में लीन रहना कहा गया है।

इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें-

**"उपासते योग रथेन धीराः"**

इसमें भी उपासना का अर्थ "ध्यान" ही है।

अर्थात्-अपने इष्टदेव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, दास्य सुख, सामीप्य, सेवा शुश्रुषा, परिचर्या, आराधना, चिन्तन, मनन आदि सभी क्रियाओं को हम "उपासना" कहते हैं।

अब "श्री भैरव उपासना" का शाब्दिक अर्थ निकला-भगवान भैरव देव के समीप बैठने का प्रयास करना, उनसे जुड़ने का प्रयास करना, उनमें तल्लीन होने का प्रयास करना।

इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं-

जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में रूद्रावतार भगवान भैरव को प्रसन्न करने हेतु पूजन, स्तुति, वन्दना, यंत्र-मंत्र की वैदिक व लौकिक विधि वर्णित की गई है, उसे हम-"भैरव उपासना" पद्धति कहते हैं।

## उपासना क्यों करें ?

पाठकों! संसार के समस्त धर्म ग्रन्थ अध्यात्म का निष्कर्ष यह है कि उन्हें ढूंढने, पाने और मनन करने का उद्देश्य यह है कि-"मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है, परन्तु सम्पूर्ण सुख साधन प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे "शान्ति" नहीं मिलती तो वह देवि-देवताओं से इसे प्राप्त करना चाहता है, परन्तु उन्हें प्राप्त करना तो आसान नहीं, उन्हें प्रसन्न करना भी आसान नहीं।"

फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूंढता है, तब उसे उनकी उपासना, पूजा, अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वही "उपासना रहस्य" इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में छुपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से नमन-मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

यही है उपासना का रहस्य और यही है उनकी मनोवृत्ति।

## उपासना की आवश्यकता

उपासकों! "ईश्वर और जीव के मध्य में जगत के आ जाने से जीवात्मा की बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो गया है।" इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गई हैं तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विविध रमणीय वस्तुएँ जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जिसके कारण जीवात्मा की बुद्धि विषय प्रबल मन की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।

उपासना से-ज्ञान का विकास होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है, उसी को - "उपासना" कहते हैं।

उपासना से-भगवत सानिन्ध्य की प्राप्ति होती है और उसी के फलस्वरूप जीव मुक्त हो जाता है।

जीवात्मा को उचित है कि वह सम्पूर्ण जगत के कारण, रक्षक अन्तर्यामी तथा अंशी परमात्मा को प्राप्त करे।

उपासना के द्वारा-अन्तः करण ही शुद्धि एवं परमात्मा के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की बुद्धि, रक्षा का सम्पूर्ण भार परमात्मा पर डाल देता है, जिसके कारण "उपासक" परमात्मा का कृपापात्र बन जाता है।

उपासना से-उपासक के चित्त को स्थिरता, सांसारिक विषयों से विमुखता और उसके फलस्वरूप परमात्मा का "सामीप्य एवं मुक्ति" की प्राप्ति होती है। इसलिए उपासना करना मानव प्राणी के लिए परम आवश्यक कहा गया है।

## उपासना में "भावना" का महत्व

पाठकों! भगवान भैरव देव जी की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष विधिवत पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए आराधना की जाए अथवा केवल मन्त्रोच्चार करते हुए मानसिक उपासना! महत्व उपादानों [पूजन सामग्री] का नहीं, आपकी भावना की होती है।

आदि देव रूद्रावतार भगवान् भैरव जी को किसी वस्तु की कमी नहीं है, जो हम उन्हें दे सकते हैं। पूजा-अर्चना और आराधना में जो वस्तुएँ-देवताओं को अर्पित की जाती हैं, वे हमारी भावनाओं का ही दिग्दर्शक होती हैं, जबकि उपासना में हम केवल भावों के ही पुष्प चढ़ाते हैं। भक्तों के दुःख हर्ता भगवान भैरव की उपासना की जाये अथवा मूर्ति पूजन, अपने आराध्य की सेवा-पूजा और अर्चना अराधना का क्षेत्र है, जहां हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है।

भक्तवत्सल-भगवान भैरव देव जी अत्यन्त दयालु हैं,. परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गयी तर्क शक्ति, बुद्धि, धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना होगा।

## उपासना में भावना का प्रभाव और कामना

पाठकों! जो व्यक्ति निष्कपट भाव से प्रभु का स्मरण करते हुए हरि चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य भगवान के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

श्री भैरव जी की उपासना मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिए ही अधिक की जाती है। अतः हम ये तो नहीं कह सकते कि आप उनसे कुछ मांगिए ही नहीं, परन्तु

उनसे यही मांगिए कि आप में सद्‌गुणों का विकास हो। किसी की बुराई-हानि अथवा स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की मांग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए।

उपासना का क्षेत्र तो पूरी तरह से भावना पर ही आधारित है, जबकि संसार में भी व्यक्ति को उसके कर्मों का फल उसकी भावनाओं के अनुरूप ही मिलता है।

एक सीधे-सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी।

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक [डॉक्टर] भी शरीर पर छुरी चलाता है और एक क्रूर हत्यारा भी। परन्तु डाक्टर को धन,यश, सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को "प्राण दण्ड"। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छुरा तथा समान रूप से ही व्यक्ति रक्त रंजित हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान-सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान और दूसरे से घृणा क्यों ?

क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर रोगी को रोगमुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुंचाना। यही भावना के फर्क का उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था श्री भैरव देव की उपासना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्तवत्सल भगवान श्री भैरव महाप्रभु हम पर अनुकम्पा तो क्या करेंगे, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि "हृदय की निर्मलता"-उपासना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराईयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन-मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं प्रभु की आराधना अथवा उपासना। जो व्यक्ति लोभ, मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उनका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं-जहाँ से उपासना-आराधना प्रारम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गए हों, ऐसा तो हो ही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भगवान श्री भैरव जी से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर, उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार-बार मांगता रहे।

किसी भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान-सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन-दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना अथवा शत्रु विनाश की कामना मन में रखकर भजन, जप, पूज़ा,पाठ या आराधना, उपास़ना करना वास्तव में भक्ति नहीं, भगवान से की जाने वाली "सौदेबाजी" है।

प्रभु से मांगिए, अवश्य मांगिए, उनसे निरन्तर सद्भावों का ज्ञान और भक्ति-भावना का वरदान मांगिए। उनसे कहिए-हे प्रभु! मैं कभी आपको भुलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यह मांगते रहने से ही सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति स्वत: हो जाती है, क्योंकि परमात्मा स्वयं जानते हैं कि आपको किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता है,वे स्वत: पूर्ण कर देते हैं।

## उपासना में दृढ़ निश्चय और श्रद्धा का महत्व

उपासकों! उपासना की शक्ति ही उपासक को सर्वत्र विजय हासिल कराती है। किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि - उपासना की नींव केवल श्रद्धा है और जहां पर "श्रद्धा" है वहीं पर "सिद्धि" है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से "सिद्धि" को प्राप्त करने का आरम्भ करने जा रहा है, उस पर "पूर्ण विश्वास" रखे, उस पर पूरी आस्था होनी चाहिए-जो उपासना का "मेरू दण्ड" है।

जिसे उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परिक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों में लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है।

साधना मार्ग का प्रथम सोपान, प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता-कैसी सिद्धि-कैसा विजय ? पराजय, असफलता व असिद्धि मात्र ही अवश्यम्भावी है।

वास्तव में ही आप यदि अपने कार्यों में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या, साधना और उपासना का दूसरा नाम ही "सफलता" है।

यदि आप साधना-सिद्धि में सफल होना चाहते हैं, यदि आप श्री भैरव जी का कृपा पात्र बनना चाहते हैं तो तप करना होगा, त्याग करना होगा, दृढ़ संकल्प करना होगा-तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए आपको बार-बार अपने दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से हृदय में- बिठाना होगा, तभी आप भक्तवत्सल भगवान भैरव जी की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

## उपासना में सहायक

उपासकों! उपासना के प्रारम्भिक चरण "ज्ञान" और इसमें सहायक "गुरू" के अतिरिक्त कुछ यम-नियम आदि भी इस मार्ग में साहयक होते हैं।

संक्षिप्त में शरीर की भीतरी बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख-भोग में संयम उपासक को आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व हैं-विश्वास, संकल्प, लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्वप्रथम अपने इष्ट देव पर दृढ़ विश्वास, फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

"दृढ़ निश्चय" तथा "संकल्प" से प्रेरित होती है "लगन" अर्थात् "अथक प्रयास" और अन्तत: अभ्यास से प्राप्त होती है-"सिद्धि"। जो मनुष्य और समाज के चरम आनन्द से ओत-प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य, इस्लामी, यहूदी, पारसी, इशाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध "स्वर्ग की परिकल्पना" अथवा उपनिषदों और उनके प्रेरित जैन, बौद्ध आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शाश्वत निर्विकल्प, आत्मिक आनन्द जो सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य की आदिम खोज है और जिसका सहज मार्ग है- "उपासना"।

## उपासना जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी

उपासको आनन्द की लालशा और सम्पत्ति अर्जण की अंधी दौड़ ने आज मानव को "पशुवत" बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति, परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाईचारा आज बीते युग की बात बनकर रह गई है, और इसका एक मात्र कारण है - "भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीम आकांक्षा।"

तन-मन में सभी क्लेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार तथा व्यक्तिगत विद्वेश एवं असंतोष का मूल कारण-"धन के प्रति यह अन्धी दौड़" ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा है-विनाश की ओर ही जा रहा है, बुद्धिहीन हो गया है।

अत: इससे बचने के लिए इन सभी समस्याओं का समाधान है-परब्रह्म परमेश्वर के किसी भी रूप-स्वरूप, अवतार अथवा देवि-देवता की- "उपासना"।

"उपासना" से ज्ञान का विकाश होता है।

उपासना से-जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत की माया तिरोहित हो जाती है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है।

उपासना से-भगवत् सानिध्य की प्राप्ति होती है।

उपासना को ही-इस कलिकाल में सर्वदुख भंजक, एवं अराधना का सर्वश्रेष्ठ और आसान माध्यम कहा गया है।

उपासना के द्वारा–जीवात्मा के अन्तः करण की शुद्धि एवं उपास्य देव के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की वृद्धि होती है।

उपासना के द्वारा–उपासक अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार अपने आराध्य देव और उसके माध्यम से "परमात्मा" पर डाल देता है, जिससे वह परमात्मा का कृपा पात्र तो बन ही जाता है। साथ ही जीवन के अधिकांश तनावों और चिन्ताओं से भी छुटकारा मिल जाता है और इस प्रकार एक अलौकिक शान्ति और मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है–"उपासक को।"

## एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

उपासकों! खेल, तमाशों, सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है, परन्तु उपासना भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिनों तक की रहती है।

शुरू–शुरू में बालक को स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में न केवल मन लगने लगता है, बल्कि उन्हें वहां पूर्ण आनन्द भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना–उपासना और भगवद् भक्ति की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही, आराधना–उपासना में मन नहीं लगता–परन्तु कुछ समय बाद ही उपासना में भी सच्चा आनन्द आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भगवान भैरव जी की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोइये, गिड़गिड़ाईये और प्रार्थना कीजिए "हे प्रभु! मैं आपकी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ–परन्तु मैं क्या करूँ ? हे दयालु भगवान हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।"

दयालु रूद्रावतार श्री भैरव जी को भक्त की इस पुकार को सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि वे हमारे ही नहीं सम्पूर्ण जीवों के पिता तुल्य हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं, परन्तु ये हमसे विमुख नहीं हो सकते। पिता के समक्ष पुत्र कुछ भी मांग सकता है। फिर हम तो पिता श्री से उनके प्रेम की भिक्षा ही मांग रहे हैं अतः शर्म या झिझक कैसी ? जितना अधिक मांगना हो मांगिए प्रभु से–"प्रेम, दया और भक्ति भाव की भिक्षा।"

## उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाले, समस्त कामना प्रदान करने वाले भगवान भैरव जी की कृपा प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में शान्त मन से उपासना करें।

आराधना, उपासना, पूजा, पाठ, जप-तप, अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाये, यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है, बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो सकता है।

आराधना-उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझाने का झूठे गर्व तो दिला सकता है, परन्तु दयालु परम पिता परमेश्वर का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं।

प्रभु हमारे हैं और हम उनके पुत्र, फिर पिता-पुत्र के बीच में अन्यों का क्या काम ? इसलिए जहाँ तक हो सके एकान्त में ही भगवान भैरव की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

भक्ति का प्रदर्शन किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं। भक्तराज प्रहलाद और भक्त ध्रुव को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएँ करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को पता लग गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्द क्षण ही ईश्वर का सुमिरन करता था, परन्तु रावण तो क्या उसकी पत्नी तक से छुपी हुई थी- "उनकी भक्ति"। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रहलाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक आराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान श्रीराम का सानिन्ध्य प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए भगवान भैरव जी की दया पाने के लिए, कामनाओं की प्राप्ति के लिए, अनिष्ट ग्रहों के निवारण के लिए, धन-जन-सुख-सम्पदा व शान्ति की प्राप्ति के लिए उपासना नियमित रूप से अवश्य कीजिए, परन्तु उपासना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप जो भी चाहेंगे प्राप्त कर लेंगे।

## उपासक की योग्यता

उपासकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि-उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इंन्द्रिय संयमी और कुल-प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा, विधान पूर्वक, स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि-विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ उपासना पूरी कर सके।

## उपासना का स्थान

उपासकों! उपासना से पूर्व - "उपासना का स्थान" कैसा हो, उसे भली-भांति समझ लेना चाहिए। जहां भी पायें, बैठकर उपासना करने लगें, ऐसा ठीक नहीं क्योंकि उपासना करते समय बाह्य रूप से उपासक कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि उपासना पूर्ण रूपेण मानसिक क्रिया है। कोई भी मानसिक क्रिया या ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने तन-मन-सुध तक को भूल जाये। भीड़-भाड़ में हो ही नहीं सकती। चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन-मनन। अतः उपासना विशिष्ठ स्थान पर ही किया जाये, तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में उपासना ग्रन्थ का निर्देश है कि-काशी-प्रयाग जैसे तीर्थों अथवा गंगा तट पर, श्मशान भूमि, पर्वत की गुफा, जंगल या कोई वाटिका, कोई भी मंदिर, पार्क अथवा खेत एवं खलिहानों में बताया गया है। अंततः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा भी माना गया है, जहां उपासक एकान्त में बैठकर उपासना कर सकता है।

## उपासना के दस कर्म

उपासकों! भगवान विष्णु के अंशावतार महर्षि वेदव्यास जी ने उपासना के अन्तर्गत दस कर्म बतलाए हैं। इनमें से किसी भी एक कर्म के द्वारा आप उपासना कर सकते हैं। इन दस कर्मों में से समस्त कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं, एक कर्म करने से भी आप अपनी उपासना सफल बना सकते हैं।

ये दस कर्म हैं-

मूर्ति पूजा, इष्ट देव का नाम जप, स्तोत्रों का पाठ शतनाम पाठ, सहस्त्र नामपाठ, भजनोंका गायन, इष्ट देव के विविध चरित्रों व कार्य कलापों का पठन-पाठन और श्रवण-मनन, आराध्य देवि या देवता के प्रति आत्म समर्पण, इष्ट देव की साधना, आराध्य देव से सम्बन्धित यंत्रों की विधि-विधान से साधना, आराध्य को प्रणाम एवं वन्दना, प्रदक्षिणा, तथा विशेष अवसरों पर उत्सव अभिषेक करना।

## नित्य नियम उपासना का फल

उपासकों! कोई भी कर्म हो, नियम पूर्वक निरन्तर करने से ही उसमें सफलता

प्राप्त होती है। वर्ष भर नियम पूर्वक-बिना क्रम तोड़े पढ़ने वाला विद्यार्थी ही "प्रथम श्रेणी" प्राप्त करता है।

ठीक यही दशा पूजा-आराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपासना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है। जबकि प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर ही देता है, बार-बार का यह प्रमाद उपासना को खंडित भी कर देता है और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा-पाठ में भी नहीं लगता है।

जहां तक उपासना में लगाए जाने वाले समय का प्रश्न है, जितना नियम है- उतनी आराधना-उपासना तो प्रतिदिन कम से कम निश्चित समय पर अवश्य कीजिए ही, जितना अधिक हो जाये उतना ही अच्छा है। नियम कम से कम के लिए होता है, अधिकतम की कोई सीमा नहीं।

क्या धन से किसी का मन भरा है ? पांच वाला पचास के लिए, लाख वाला करोड़ के लिए सतत् चेष्टा करता रहता है, कभी उसे संतोष नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं, तब प्रभु के उस असीम धन को ही सीमा में कैसे बांध सकते हैं। जितने अधिक समय तक परमात्मा का चिन्तन-मनन, ध्यान आराधना और उपासना हो जाए, उतना ही कम है परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

## तृतीय भाग



# उपासना हेतु विभिन्न आसन, मालाएँ, जल एवं पुष्पों का प्रयोग

## उपासना हेतु विभिन्न आसन

उपासकों! किसी भी उपासना में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है- कुशासन, मृग चर्म ब्याघ्र चर्म, ऊनी वस्त्र, रेशमी वस्त्र, काष्टासन।

## कुशा आसन

साधारण कोई भी उपासना हो, यदि कुशा आसन पर बैठकर जप एवं पूजा-पाठ किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है।

इसके विपरीत कुछ आसनों को त्याज्य बताकर उनके उपयोग को निषिद्ध कहा गया है। बाँस, पत्थर, घुनी लकड़ी, तिनके अथवा पत्तों से बने आसन पर बैठकर जप करना या उपासना करना वर्जित है। इन आसनों का प्रभाव उपासक के लिए क्लेशकारी होता है।

अर्थात्-

(क) बांस के बनाए आसन पर बैठकर जप करने से दरिद्रता आती है।

(ख) पत्थर का आसन उपासक को व्याधि ग्रस्त करता है।

(ग) धरती पर बैठकर [बिना कोई आसन बिछाए] अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाले व्यक्ति दुःख से आक्रान्त होते है, तथा उनकी उपासना का फल आधा धरती प्राप्त कर लेती है।

(घ) छेद वाली लकड़ी [घुन लगे हुए काष्ट आसन] का प्रयोग दुर्भाग्य कारी होता है।

(ङ) तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(च) पल्लवों (पत्तों) से निर्मित आसन मानसिक विभ्रम उत्पन्न करता है।

(छ) सामान्य वस्त्र कपड़ा और कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में निन्दित कहा गया है।

## कुशा-आसन पर उपासना से लाभ

पाठकों! कुशासन पर बैठकर उपासना करने से निम्नलिखित लाभ होते हैं-

(क) अन्तः करण पवित्र होता है।

(ख) उपासक को फल की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।

(ग) उपासक की दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

(घ) दूषित प्रभावों अर्थात् भूत बाधाओं का शमन होता है।

(ङ) उपासक की उपासनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

## मृग-चर्म आसन पर उपासना के लाभ

"मोक्ष प्राप्ति" अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना में "कृष्ण मृग चर्म" विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

## व्याघ्र चर्म आसन पर उपासना के लाभ

पाठकों! व्याघ्र चर्म का आसन रजोगुणी आसन है। राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उद्देश्य की पूर्ति की जाने वाली उपासना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावशाली होता है। सिंह के स्वभाव वाले लगभग सभी गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परिक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई जीव-जंतु नहीं जाते। इस पर बैठे हुए उपासक को सांप-बिच्छू का भय नहीं रहता क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उन पर आसीन उपासक को छूने का प्रयास साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न उपासना के लिए व्याघ्र चर्म विशेष उपयोगी है।

## कम्बल के आसन की उपयोगिता

कर्म सिद्धि की लालसा से की जाने वाली उपासना में कम्बल का आसन लाभदायक होता है।

## रेशमी आसन की उपयोगिता

ऊनी आसन तथा रेशमी आसन भी उपासना में प्रयुक्त होते हैं। इस पर बैठकर जप या उपासना करने वाले उपासक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती है। वस्तुत: ये दोनों आसन भी कुचालक (असंक्रामक, नान कण्डक्टर) पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्व पूर्ण माना गया है। कामना पूर्ति हेतु लाल कम्बल या सतरंगे रंग का कम्बल विशेष प्रभावशाली होता है।

## माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

**माला की आवश्यकता**-किसी भी देवी-देवता की उपासना से "मंत्र का जप करने हेतु" माला की जरूरत होती है और इन्हीं माला के द्वारा जप की संख्या याद रखी जाती है, अत: मंत्र जप के लिए आपके पास माला का होना अति आवश्यक है।

**माला की बनावट**-सामान्य माला में 108 मनके अर्थात् दाने होते हैं तथा एक "सुमेरू" होता है। ये मालाएँ रूद्राक्ष, तुलसी, चन्दन, हल्दी, स्फटिक, कुशा, शंख, कमलगट्टे, मूंगे तथा मणियों आदि की बनी होती हैं। प्रत्येक मनके के बीच में गांठ लगी होनी चाहिए, ताकि प्रत्येक मनका अलग-अलग रहे।

माला को गूंथने के लिए सोना, चांदी अथवा रेशमी धागे का प्रयोग करना चाहिए। यह मनके साफ और स्वच्छ हों, टूटे-फूटे न हों। मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है।

माला जपते समय माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर सुमेरू तक पहुंचकर वहां से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

"सुमेरू" को लांघकर जप करना वर्जित है।

माला जपने का नियम :-

जप करते समय मंत्र को गुप्त रखना चाहिए। अत: "गोमुखी" (लाल कपड़े की थैली) में हाथ रखकर जप करें। खुली माला से जप करने पर यक्ष, राक्षस, बेताल, पिशाच, सिद्ध और विद्याधर आदि प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं और खुली माला से जप करने पर आपका ध्यान सुमेरू या माला समाप्ति की ओर भी जा सकता है, जिससे विघ्न उत्पन्न होता है।

प्रात: काल जप के समय माला नाभि के सामने, मध्याह्न में हृदय के सामने और सायंकाल मस्तक के सामने रखकर जप करना चाहिए। जप करते समय मंत्र का उच्चारण साफ और स्पष्ट हो।

माला को मध्यमा उँगली के मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें व अंगुष्ठ (अंगूठे) के प्रथम पर्व से एक-एक मनके को एक-एक मंत्र बोलने के बाद आगे बढ़ाईये। तर्जनी माला से स्पर्श नहीं होनी चाहिए। जप के समय परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए।

"सुमेरू" का उल्लंघन करना निषिद्ध है। सुमेरू तक पहुंचने पर हृदय की ओर से माला को घुमाकर पुनः जप आरम्भ करें।

"सुमेरू" एक माला के पूर्ण होने का "संकेतक" है। सुमेरू पर जप नहीं होता है। माला घुमाते समय बाएं से दाहिनी ओर घुमावें।

माला जप के समय हाथ से गिरा देने पर दोष उत्पन्न होता है, अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जप के समय मन प्रसन्न रखें, पूर्ण निष्ठा भाव रखें। स्वयं को जप के योग्य और समर्थ समझें। इष्ट के प्रति श्रद्धा रखें।

## विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

| | | |
|---|---|---|
| शत्रु नाश के लिए | - | कमलगट्टे की माला, हल्दी की माला। |
| सन्तान प्राप्ति हेतु | - | पुत्रजीवा की माला। |
| कामना सिद्धि हेतु | - | चांदी की माला। |
| धन प्राप्ति हेतु | - | मूंगे की माला। |
| पाप नाश हेतु | - | कुशा जड़ की माला। |
| 'भैरव सिद्धि हेतु" | - | मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला। |
| देवी-देव साधना हेतु | - | चन्दन एवं रूद्राक्ष की माला। |
| वैष्णवी मत साधना हेतु | - | तुलसी की माला। |
| गणेश पूजन हेतु | - | हाथी दांत की माला। |

## पूजन हेतु फूल तोड़ने की विधि और मंत्र

उपासकों! किसी भी देवि-देवता की पूजन करने हेतु प्रातः काल स्नान के बाद ही पुष्प, बिल्व पत्र और तुलसी पत्र तोड़ने चाहिए। स्नान के बाद जब फूल तोड़ने बाग में जायें तो हाथ-पैर धोकर आचमन कर लें, तत्पश्चात् पूरब की दिशा की ओर मुख करके हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

**"मानु शोकं कुरुष्व त्वं स्थान त्यागं च मा कुरू।**
**देवपूजनार्थाय प्राथयामि वनस्पते॥"**

अब पुष्प तोड़ना आरम्भ करें-

पहला फूल तोड़ते समय - ॐ वरूणाय नमः।

दूसरा फूल तोड़ते समय - ॐ ब्योमाय नमः।

तीसरा फूल तोड़ते समय - ॐ पृथिब्यै नमः बोलें।

फिर आवश्यकतानुसार बिना मंत्र का ही आगे फूल तोड़ लें। [तत्व सागर संहिता से]

## बिल्व पत्र तोड़ने का मंत्र, विधि तथा बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

उपासकों! स्नान से पवित्र होकर निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए क्रमशः पाँच बिल्वपत्र पांच बार मंत्र पढ़कर तोड़ें-

**''अमृतोद्भव श्री वृक्ष महादेव प्रिय सदा।**
**गृहणामि तव पत्राणि भैरव पूजनार्थ मादरात॥''**

ध्यान रहे-

चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को तथा संक्रान्ति के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें। निषिद्ध समय से पहले दिन तोड़कर रखा हुआ बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों ने तो यहां तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्व पत्र को ही धोकर बार-बार चढ़ाते रहें। [लिङ्ग पुराण से]

## बासी जल-फूल का निषेध

उपासकों! जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवि-देवताओं पर न चढ़ायें। किन्तु तुलसी दल और गंगाजल बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में निर्माल्य का दोष नहीं आता। माली के घरों में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, सुवर्ण वस्त्र आदि से बनाए गये फूल बासी नहीं होते। इन्हें ''प्रोक्षण'' कर चढ़ाना चाहिए।

## ''मानस फूल'' चढ़ाने का विधान

उपासकों! किसी-किसी उपासक को नित्य ही भगवती व भगवान को चढ़ाने हेतु पुष्प उपलब्ध नहीं होते। ऐसे उपासकों के लिए ''देवर्षि नारद'' जी ने ''मानस फूल'' [मन के द्वारा रचे हुए पुष्प] चढ़ाने का विधान बताये हैं, जो इस प्रकार हैं-

**"तस्मान्न मान समेवातः शस्त पुष्पं मनीषिणाम् ॥"**

**[ तत्व सागर संहिता ]**

देवर्षि नारद जी ने "तत्व सागर संहिता" के अन्तर्गत देवराज इन्द्र को उपदेश दिए हैं कि - "हजारों करोड़ों बाह्य फूलों को चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जाता है, वह केवल एक "मानस फूल" चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है।" देखिए संस्कृत श्लोक-

**बाह्य पुष्पं सहस्त्राणां सहस्त्रा युत कोटिभिः ।**
**पूजिते यत्फलं पुसां तत्फलं त्रिदशाधिप ॥**
**मानसे नैकेन पुष्पेण विद्वानां नोत्य संशयम् ॥**

**[ तत्व सागर संहिता वीर. पूजा. पृ. 57 ]**

अर्थात्-

"तत्व सागर संहिता में" कहा गया है कि पुष्पों में "मानस पुष्प" ही सबसे उत्तम है। मानस पुष्प में बासी आदि का दोष नहीं होता। इसलिए पूजा करते समय- "मन से गढ़कर" फूल चढ़ाने का आनंद अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

## सामान्यतया निषिद्ध पुष्प

यहाँ उन निषेधों को दिया जा रहा है, जो सामान्य तथा सभी देवि-देवता के पूजन में सब पुष्पों पर लागू होते हैं-

"भगवान् या भगवती पर चढ़ाया हुआ पुष्प "निर्माल्य" कहलाता है, सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल उसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ायें। भौंरे के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता।"

"जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियां बिखर गई हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिससे खट्टी गंध या सड़ान्ध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गंध वाला हो- ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए।"

"जो फूल बायें हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक या रेंड के पत्ते में रखकर लगाये गए हों, वे फूल त्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध कमल पर लागू नहीं है।"

फूल को जल में डुबोकर धोना मना है, केवल इसका जल से प्रोक्षण कर देना चाहिए।

## पुष्पादि चढ़ाने की विधि

**पाठकों! "फूल और पत्ते जैसे उगते हैं वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते**

समय इसका मुख ऊपर की ओर होता है, अत: चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए।''

''दुर्वा एवं तुलसी पत्र को अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनसे भिन्न पत्तों को ऊपर मुख कर या नीचे मुख कर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है।''

''दाहिने हाथ के करतल को उतान कर, मध्यमा-अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।''

''चढ़े हुए फूल को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।''

[सार दीपिका, आचारेन्द और कालिका पुराण से आधारित प्रमाण]

## उपासना आरम्भ से पूर्व उपासकों के लिए अति आवश्यक निर्देश

उपासकों! उपासना मंत्रानुष्ठान एवं यंत्र-मंत्र की साधना हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम भी हैं, जिसका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों, मर्मज्ञों ने परीक्षण करके इनकी व्यवाहिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है। स्वयं हमारी अनेकों सिद्धि साधना का यह नियम जीता-जागता कटु सत्य प्रमाण है, जो इस प्रकार है-

1. स्नान करके, शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर ही उपासना स्थल में जाना चाहिए।

2. वस्त्र दो हों और सिले हुए नहीं हों।

3. साधना या उपासना स्थल पूर्णत: शान्त, सुरक्षित और एकान्त हो।

4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र उपासना के समय नहीं पहनने चाहिए।

5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर बार-बार उठना उचित नहीं होता।

6. बैठने में सदैव शरीर सीधा रहे, ''मेरू दण्ड'' को झुकाना नहीं चाहिए।

7. उपासना या अनुष्ठान अथवा मंत्र-यंत्र सिद्धि में पूजन, जप एवं आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

8. उपासना या अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहूर्त्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

9. उपासना काल में नित्य ही अपने इष्टदेव का आवाहन-विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है।

10. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, गंगाजल, बिल्व-पत्र, पुष्प और नैवेध नियमानुसार प्रयोग अवश्य किया जाये।

11. उपासना या अनुष्ठान में हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक

है। इसके पश्चात् दान, ब्राह्मणों की एवं कुमारियों का पूजन तथा भोजन की भी वरीयता दी गई है।

12. सम्पूर्ण साधनाकाल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

13. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा पर स्पर्श न करके अपना काम स्वयं करें।

14. कार्य और विचार दोनों ही पवित्र एवं स्वच्छ हों।

15. उपासना या सिद्धि अनुष्ठान आरम्भ करते समय जैसा "संकल्प" किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिए।

16. अनुष्ठान से बचे समय में धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याण कारी होता है।

17. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

## उपासना में निषेध

उपासकों!

1. उपासना काल में प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्जाज्य है। गरिष्ठ, तामसिक भोजन से उपासक की मनोशांति और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तु दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु-फकीर गांजे, चरस का दम लगाकर कहते हैं कि- "इससे ध्यान लगता है" - यह सर्वथा असंगत है। उपासक के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ [नशीली वस्तुएँ] की स्वीकृति नहीं दी गई है।

4. मांस-मदिरा, अंडे, मछली एवं लहसुन-प्याज का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

5. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में उपासना करना वर्जित है।

6. नग्न होकर उपासना नहीं करनी चाहिए।

7. शिखा खोलकर उपासना करना वर्जित है।

8. बिना आसन बिछाए, नंगी भूमि पर जप व उपासना करना निषेध है।

9. जप के समय वार्तालाप नही किया जाता।

10. भीड़-भाड़ वाले जनसंख्या स्थान में उपासना या ज़प करना वर्जित है।

11. माला जपते समय हाथ और सिर खुला नहीं रहना चाहिए।

12. राह चलते या राह में कहीं बैठकर उपासना या जप नहीं किया जाता।

13. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप करना वर्जित है।

14. आसन विरूद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेटकर या पैर पसारकर उपासना नहीं की जाती।

15. छींक खंखार, खांसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

## भगवान भैरव की जन्म तिथि

भगवान् शिव के "पाँचवें अवतार" माने जाने वाले "भगवान भैरव" "काशी के कोतवाल" प्रसिद्ध हैं। ऐसी मान्यता है कि काशी में जिन साधकों का शरीर त्याग होता है, उन्हें वे "मोक्ष" देते हैं। वैसे तो भगवान भैरव के असंख्य अवतार हुएं हैं, परन्तु वटुक भैरव अवतार में श्री ब्रह्म जी का पांचवां मुख अपने नखाग्र से काटने के प्रायश्चित करने के पश्चात् भगवान शिव ने अपने पांचवें अवतार रूप भैरव को काशी का कोतवाल नियुक्त किए थे।

शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि उपरोक्त अवतार "मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी" को हुआ माना जाता है। इस तिथि पर भगवान भैरव का जन्मोत्सव मनाते हुए व्रत रखना, उनका पूजन और गुणगान करना बहुत पुण्य फल प्राप्त करता है। यह दिन सभी पापों की विशेषकर "ब्रह्म हत्या की" निवृत्ति के लिए अत्यन्त शुभ एवं कल्याणकारी है। इस आविर्भाव दिवस के अतिरिक्त भी, प्रत्येक मास की "अष्टमी" अथवा "चतुर्दशी" भी भैरव पूजन के लिए उपयुक्त है। वारों में रविवार और मंगलवार मुख्य हैं।

किन्तु भैरवोपासना के लिए काशी तीर्थ सब प्रकार की सिद्धि देने वाला है। जो उपासक निरन्तर काशीवास नहीं कर सकते, वे उपासना का आरम्भ काशी में करके, बाद में अन्य उपयुक्त स्थान पर निवास करके सिद्धि साधना सम्पन्न करें, मैंने भी ऐसा ही किया था। भारत वर्ष में अनेक स्थानों, नगरों, ग्रामों आदि में भैरव पीठ अथवा भैरव मंदिर विद्यमान है, वहां भी साधना की जा सकती है।

भैरव उपासना में विधि पूर्वक पूजन, मंत्रादि का जप आदि करना चाहिए। उनके लिए अपेक्षित भोग, [प्रसाद, भोज्य वस्तु] पानादि की व्यवस्था भी की जाती है। इस साधना में "दीप-दान" का भी अत्यधिक महत्व है। साधना में अशुद्धि और प्रमाद सर्वथा वर्जित है। साधकों को चाहिए कि वे मन्त्र-यन्त्र-तंत्र आदि का ज्ञान सर्वप्रथम-भैरव साधना प्राप्त किए हुए किसी "सिद्ध गुरू" से प्राप्त कर लें, तभी साधना आरम्भ करें। इसके लिए सिद्ध तांत्रिक वाई. एन. झा. [लेखक] के कार्यालय से भी सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

## भगवान भैरव का विग्रह स्वरूप

उपासकों! पवन पुत्र माता अंजनी कें दुलारे श्री राम भक्त हनुमान की तरह ही भगवान भैरव देव जी भी महादेव रूद्रावतार शिव के अवतार हैं। जिस प्रकार भगवान शंकर अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म लपेटते हैं, उसी प्रकार हनुमान जी व भैरव जी की प्रतिमा पर भी चोले के रूप में सिन्दूर का लेप किया जाता है। सिन्दूर का लेप हनुमान

जी को लगाने हेतु शुद्ध घी में घोला जाता है, परन्तु भैरव जी के लिए यह सिन्दूर लेप चमेली के तेल से तैयार होता है।

पाठकों! भगवान भैरव का मंदिर हमारे देश में अधिक नहीं है, परन्तु मातेश्वरी दुर्गा के प्रत्येक मंदिर में प्रवेश द्वार के निकट भैरव का स्थान और उनका विग्रह अवश्य होता है। भगवान भैरव देव के अधिकांश भक्त पहले तो उनके चित्र की सामान्य रूप से पूजा करते हैं और कुछ समय बाद घर के आस-पास किसी पेड़ के नीचे या बाग-बगीचे में अथवा अपने निवास स्थान में ही किसी पवित्र स्थान पर कोई अनगढ़ पूजन करने लगते हैं। भगवान देव की प्रतिमा अत्यन्त भव्य होती है और न ही शिवलिंग के समान तराशी हुई। अत: शुद्ध और पवित्र स्थान से कोई अच्छा सा प्रस्तरखण्ड लेकर उसे गंगाजल से धोकर, चमेली तेल में घोले हुए सिन्दूर का उस पर लेप करें। इसके साथ ही थोड़ा-सा चमेली के तेल में काजल घोलकर, सिन्दूर लेप किए शिला खण्ड पर आंखें, मुख आदि अन्य अंगों का चित्र निर्माण करें। तत्पश्चात् पवित्र स्थान पर स्थापित कर भैरव देव जी के रूप में उनकी पूजा उपासना करें।

यह उपासना भैरव देव जी का चित्र-तस्वीर, मूर्ति स्थापना करके भी कर सकते हैं।

## अवतार शब्द का अर्थ और आवश्यकता

उपासकों! "अवतार" शब्द का "अर्थ" है- "किसी उच्च स्थान से नीचे के स्थान पर उतरने की क्रिया अथवा उतरने का स्थान।" यह सामान्य अर्थ है जबकि इस शब्द का विशिष्ट अर्थ है- "किसी लोकातिशायी ऐश्वर्य-सम्पन्न भगवत्पदाभिधेय सत्ता अथवा देवता का उर्ध्व लोक से भूतल पर उतरना तथा अपनी इच्छानुसार मानव, अति मानव अथवा अमानव रूप को धारण करना।"

यह क्रिया तीन रूपों में सम्पन्न होती है। यथा - 1. कार्यवश [किसी भक्त की रक्षा के लिए] 2. रूप परिवर्तनाथे [किसी प्रसंग वश स्वरूप का परित्याग करके नवीन रूप धारण करने के लिए] 3. नवीन जन्म धारणार्थ [सामान्य प्राणी के समान मातृगर्भ में रहकर जन्म लेने के लिए।] भगवान शिव ने विभिन्न अवसरों पर बिना रूप परिवर्तन किए ही अवतार लिए हैं।

धर्म नियम, धर्म संस्थापन एवं भक्तसंरक्षण ही अवतार के मुख्य प्रयोजन [आवश्कता] हैं। भगवान शिव के अवतारों का प्रयोजन धर्म एवं भक्त का संरक्षण ही रहा है और यही सर्व शक्तिमान शिव की विशिष्ट शक्ति का विलास भैरवावतार में भी परिलक्षित होता है। समय एवं कार्य के अनुरूप ही अवतार में भी विभिन्नता आती है। कार्य विशेष के कारण ही शरभ, स्वर्णाकर्षन, मार्तण्ड, मञ्जुघोष, दुन्दुभि, आनन्द , दीप नाथ, वीरभद्र, काल भैरवादि अवतार हुए हैं और वासे कर्मो की सिद्धि के लिए साधक भी तदनुरूप ही ध्यान एवं मंत्र का प्रयोग करते हैं तथा फल प्राप्त करते हैं।

## श्री भैरव उपासना में ध्यान की विशिष्टता और उसकी प्रक्रिया

उपासकों! शास्त्रों में कहा गया है कि "ध्यानं-बिना भवेन्मूक:" अर्थात्- "ध्यान के बिना साधक मूक [गूंगे] के सदृश है।" अत: उपासना के समय इष्टदेव का ध्यान परम आवश्यक है। जिससे उपाष्य-तत्व अपने समस्त गुणों को प्रकट कर साधक के अभीष्ट को पूर्ण करता है, उसे - "ध्यान" कहते हैं।

श्री बटुक भैरव के "सात्विक, राजस तथा तामस" - तीन रूपों का वर्णन अनेक तन्त्रों में है। "शारदा तिलक" और "मेरू तन्त्र" में तीनों ध्यान भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णित हैं। मंत्र एक ही है, रूप उपासना भेद से फल भिन्न है।

जैसा कि कहा गया है-

**"यथा कामं तथा ध्यानं कारयेत् साधकोत्तमः"**

अर्थात् - "जैसा कार्य हो उत्तम साधक वैसा ही ध्यान करे।"

"विशेष फल की दृष्टि से भी बताया है कि-

**सात्विकं ध्यान माख्यात् मपभृत्यु निवारणम्।**
**आयुरारोग्य जनन मपवर्ग फल प्रदम्॥**
**राजस ध्यान माख्यातं धर्म कामार्थ सिद्धिम्।**
**तामसं शत्रु शमनं कृत्या भूत ग्रहास्पदम्॥"**

**हिन्दी अनुवाद**-"सात्विक ध्यान" अपमृत्यु का निवारक, आयु-आरोग्य का कारण तथा मोक्ष फल का देने वाला है। धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि देने वाला "राजस ध्यान" है। कृत्या-भूतग्रहादि के द्वारा शत्रु का शमन करने वाला "तामस" ध्यान कहा गया है।

## भगवान बटुक भैरव की पूजा में "दैनिक नैवेद्य"

उपासकों! आप यदि भगवान भैरव की दैनिक-उपासना-आराधना या सिद्धि-साधना करने जा रहे हैं तो पूजन काल में दैनिक नैवेद्य निम्न प्रकार अर्पित करें-

**"रविवारे पायसान्नं सोमवारे च मोदकम्।**
**भौमे गुडाज्यगोधूमा बुधे च दधि शर्करा॥**
**गोधूमपूरिका युक्ता घृत मध्ये सुपाचिता।**
**गुरौ चणक खण्डाज्यं केवलं चणकं भृगौ॥**
**शनौ माषान्त तैलं इति वारबलिः क्रमात्॥"**

**हिन्दी अनुवाद**-साधना के दिनों में श्री बटुक भैरव की विशेष पूजा करके विशेष नैवेद्य अर्पित करना चाहिए। यह नैवेद्य प्रत्येक बार के लिए पृथक-पृथक होता है। यथा-रविवार को पायसान्न अथवा दूध की खीर, सोमवार को मोदक [गेहूं के आटे का बना हुआ अथवा खोए का] मंगलवार को गुड़ एवं घी से बनी हुई आटे की लपसी। बुधवार को-गेहूं आटे का शुद्ध घी में तली हुई पूरी और दहीबारा। गुरूवार को - चने के आटे [बेसन] के लड्डू। शुक्रवार को भुने हुए चने। शनिवार को माह [उड़द] के बड़े तेल में तले हुए। इनके अतिरिक्त श्री भैरव जी को जलेबी, इमरती, सेव, भजिये और तले हुए पापड़ का भी नैवेद्य लगाया जाता है।

## पूजा के विविध उपचार

उपासकों! संक्षेप व विस्तार के भेद से पूजा के अनेकों प्रकार के उपचार हैं - पाँच, दस, सोलह, अट्ठारह, छत्तीस, चौंसठ तथा राजोपचार आदि।

### पांच उपचार - [ पंचोपचार ]

1. गन्ध 2. पुष्प 3. धूप 4. दीप और 5. नैवेद्य इन पाँच वस्तुओं से जो पूजा की जाती है, उसे "पंचोपचार" पूजन कहते हैं।

दस उपचार - [दशोपचार]

1. पाद्य - इष्टदेव की प्रतिमा के चरणों को पखारना।
2. अर्घ्य - अर्थात् जल चढ़ाना।
3. आचमन - तीन बार बूंद-बूंद जल चढ़ाना।
4. स्नान कराना
5. वस्त्र पहनाना
6. गन्ध - चन्दन लगाकर चावल चढ़ाना।
7. पुष्प - फूल तथा फूलों की माला चढ़ाना।
8. धूप दिखाना।
9. दीप दिखाना।
10. नैवेद्य अर्पण अर्थात् भोग लगाना।

### सोलह उपचार : [ षोड़शोपचार ]

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र 6. आभूषण 7. गन्ध 8. पुष्प 9. धूप 10. दीप 11. नैवेद्य 12. पुनः आचमन 13. ताम्बूल 14. स्तवन पाठ 15. तर्पण और 16 नमस्कार।

### अट्ठारह उपचार

1. आसन 2. स्वागत 3. पाद्य 4. अर्घ्य 5. आचमन 6. स्नान 7. वस्त्र

8. यज्ञोपवीत 9. भूषण 10. गन्ध 11. पुष्प 12. धूप 13. दीप 14. नैवेद्य 15. दर्पण 16. माल्य 17. अनुलेपन और 18. नमस्कार।

## छत्तीस उपचार

1. आसन 2. अभ्यञ्जन 3. अद्धर्तन 4. निरूक्षण 5. सम्मार्जन 6. सीर्प: स्नपन 7. आवाहन 8. पाद्य 9. अर्ध्य 10. आचमन 11. स्नान 12. मधुपर्क 13. पुनराचमन 14. यज्ञोपवीत वस्त्र 15. अलङ्कार 16. गन्ध 17. पुष्प 18. धूप 19. दीप 20. नैवेद्य। 21. ताम्बूल 22. पुष्पमाला 23. अनुलेपन 24. शय्या 25. चामर 27. व्यञ्जन 27. आदर्श 28. नमस्कार 29. गायन 30. वादन 31. नर्तन 32. स्तुतिगान 33. हवन 34. प्रदक्षिणा 35. दन्तकाष्ठ और 36 विसर्जन।

पाठकों! इसी प्रकार इष्टदेव पूजन के विस्तृत–चौंसठ उपचारों एवं राजोपचार का वर्णन भी शास्त्रों में वर्णित हैं, परन्तु आम लोगों के लिए षोड़शोपचार [सोलह उपचार] विधि से पूजन करना ही विशेष कल्याणकारी है।

उपासकों! आइये, अब हम भगवान भैरव देव की "उपासना" आरम्भ करें।

उपासना के प्रथम चरण में सर्व प्रथम – "मानस पूजा" का विधान बता रहा हूँ।

## चतुर्थ भाग



# भगवान भैरव पूजन खण्ड

## पूजन को हजार गुणा महत्वपूर्ण बनाने हेतु "मानस पूजा" का वैदिक विधान

उपासकों! शास्त्रों में पूजा को हजार गुणा महत्वपूर्ण बनाने के लिए एक उपाय बतलाया गया है, जिसमें पूजन सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। वह उपाय है - "मानस पूजा", जिसे सामग्री के साथ पूजन करने से पहले या बाद में भी की जा सकती है। जिन उपासकों के पास पूजन सामग्री नहीं है, वे उपासक सामग्री के बदले मात्र जल चढ़ाकर ही "मन से कल्पना करके" सामग्री अर्पित करें।

"मुदगल पुराण" में कहा गया है कि "मनः कल्पित" यदि एक फूल भी चढ़ा दिया जाये तो करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होता है। इसी प्रकार - मानस चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य भी भगवान को करोड़ गुणा अधिक संतोष दे सकेंगे। अतः मानस पूजा बहुत अपेक्षित है।

वस्तुतः भगवान को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, वे तो भाव के भूखे हैं। संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे परमेश्वर की पूजा की जा सके, इसलिए पुराणों में मानस पूजा का विशेष महत्व माना गया है। मानस पूजा में भक्त अपने इष्ट देव भगवान भैरव को - "कल्प-वृक्षों से आवृत्त कदम्ब वृक्षों से युक्त मुक्तामणि मंडित भवन में चिन्तामणि से निर्मित सिंहासन पर विराजमान कराता है। स्वर्ग लोक की मन्दाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को स्नान कराता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वी रूप गन्ध [चन्दन] का अनुलपन करता है। अपने अराध्य के लिए कुबेर की पुष्प वाटिका से स्वर्ण कमल पुष्पों का चयन करता है। भावना से वायु रूपी धूप, अग्नि रूपी दीपक, तथा अमृत रूपी नैवेद्य भगवान को अर्पण करने की विधि है। इसके साथ ही त्रिलोकी की सम्पूर्ण वस्तुएं सभी उपचार सच्चिदानन्द धन परमात्मा प्रभु के चरणों में "भावना से" भक्त अर्पण

करता है।'' यह है मानस पूजा का स्वरूप। इस पूजा की एक संक्षिप्त विधि भी पुराणों में वर्णित है, जो निम्नलिखित है–

## भगवान भैरव देव का संक्षिप्त मानस पूजा

### [ पूजन प्रारम्भ ]

उपासकों! भगवान भैरव देव की पूजा हो या किसी भी अराध्य देव की पूजा। यदि आपके पास पूजन सामग्री ना हो या आप पूजन सामग्री खरीदने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं तो काल स्नान से पवित्र होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर-भगवान भैरव जी का ध्यान करते हुए हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

**1. '' ॐ लं पृथिब्या त्मकं गन्धं परिकल्पयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवान् भैरव देव जी। मैं पृथ्वी रूप गन्ध [चन्दन] आपको अर्पित करता हूँ।

**2. '' ॐ हुं आकाशत्मकं पुष्पं परि कल्पयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे दुष्ट दमनक रूद्र। मैं आकाश रूपी पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।

**3. '' ॐयं वाच्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे रूद्रावतार भैरव। मैं वायुदेव के रूप में धूप आपको प्रदान करता हूँ।

**4. '' ॐ रं वह्नयात्मकं दीपं दर्शयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे देव! मैं अग्नि देव के रूप में दीपक आपको प्रदान करता हूँ।

**5. '' ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभो! मैं नैवेद्य के रूप में अमृत आपको निवेदन करता हूँ।

**6. '' ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।''**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवन्! मैं सर्वात्मा के रूप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

## वृहद् वैदिक भगवान भैरव मानस पूजा

**पूजन विधि**-उपासकों! प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान भैरव की पिंडी या तस्वीर के समक्ष कम्बल का आसन बिछाकर बैठ

जाएं। एक अगरबत्ती तस्वीर के समक्ष जलावें। इसके पश्चात् एक लोटा जल सामने रख लेवे। अब नीचे लिखित "स्तोत्र" या "हिन्दी अनुवाद" अंजुली में जल लेकर पढ़ें। मंत्र स्तोत्र पाठ समाप्त होते ही अंजुली जल भैरव की आकृति पर चढ़ा दें। क्रमानुसार नीचे लिखित हर श्लोक में ऐसा ही करें :-

**[ प्रथम पूजन श्लोक ]**

**रत्नैं कल्पित मासनं हिम जलैः स्नानं दिव्याम्बरम्।**
**नाना रत्न विभूषितं मृगमदा मोदाङ्कितं चन्दनम्॥**
**जाति चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा।**
**दीपं देव दयानिधे भैरव हृदय कल्पितं गृह्यताम॥१॥**

**हिन्दी अनुवाद**-"हे भगवान भैरव देव! यह रत्न निर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान नाना रत्नावलि विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरी का गन्ध समन्वित चन्दन, जूही-चम्पा और बिल्व पत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप- यह सब मानसिक पूजनोपहार ग्रहण कीजिए।"

**[ द्वितीय श्लोक ]**

**सौवर्णे रत्न खण्ड रचिते पात्रे घृतं पायशं।**
**भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधि युतं सम्भाफलं पानकं॥**
**शाकानाम युतं जलं रूचिकरं कर्पूर खण्डोजज्वलं।**
**ताम्बूलं मनशा मया विरचित भक्त्या प्रभो स्वीकुरू॥२॥**

**हिन्दी अनुवाद**-हे शिव के पंचम अवतार भगवान भैरव देव! मैंने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पंच प्रकार का व्यञ्जन, कदली फल, शर्बत, अनेकों शाक, कर्पूर से सुवाशित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल - ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किए हैं। प्रभो! कृप्या इन्हें स्वीकार कीजिए।

**[ तृतीय श्लोक ]**

**छत्रं चामरयो युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं।**
**वीणा भेरि मृदंग काहल कला गीतं च नृत्यं तथा**
**साष्टांग प्रणतिः स्तुति बर्हुविद्या ह्योतत्स मस्त मया।**
**संकल्पेन समर्पित-तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥३॥**

**हिन्दी अनुवाद**-"हे भगवन्! छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टांग प्रणाम, नानाविध स्तुति - ये सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ। प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए।"

[ चतुर्थ श्लोक ]

**आत्मा त्वं भैरव देवः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।**
**पूजा ते विषयोप भोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः ॥**
**सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणा विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।**
**यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं भैरव देव तवाराधनम् ॥४॥**

**हिन्दी अनुवाद**-"हे भगवन! मेरी आत्मा आप हैं, ऋद्धि-सिद्धि सहित मेरे प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मंदिर है। सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है। मेरा चलना-फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं। इस प्रकार मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ, वह सब आपकी आराधना ही है।"

[ पंचम श्लोक ]

**कर चरण कृतं वाक्का यजं कर्मजं वा।**
**श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम् ॥**
**विहित मविहितं वा सर्वमेतत्क्ष मस्व।**
**जय-जय करूणाब्धे श्री भैरव देवः ॥५॥**

**हिन्दी अनुवाद**-"हे देव! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किए हों, विहित हों अथवा अविहित, उन सबको आप क्षमा कीजिए। हे करूणा सागर श्री भैरव देव जी आपकी जय हो।"

*[इति श्री भैरव मानस पूजन सम्पन्न]*

## मानस पूजा से लाभ

उपासकों! "मानस पूजा" में जो समय लगता है, वह समय भगवान के सम्पर्क में बीतता है और तब तक संसार उससे दूर हटा रहता है। अपने आराध्य देव के लिए बढ़िया से बढ़िया रत्नजड़ित आसन सुगन्ध के बौछार करते हैं। दिव्य फूल की वह कल्पना करता है और उसका मन वहां से दौड़ कर उन्हें जुटाता है। इस तरह मन को दौड़ने की और कल्पनाओं की उड़ान भरने की इस पद्धति में पूरी छूट मिल जाती है। इसके दौड़ने के लिए क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है। इस दायरे में अनन्त ब्रह्माण्ड ही नहीं अपितु इसकी पहुंच के परे गोलोक, साकेत लोक, सदा शिव लोक भी आ जाते हैं। अपने आराध्य देव को इसे आसन देना है, वस्त्र और आभूषण पहनाना है, चन्दन लगाना है, मालाएँ पहनानी हैं, धूप-दीप दिखाना है और उसे इन्द्रलोक से ब्रह्मलोक तक दौड़ लगाना है। पहुंचे या न पहुंचे किन्तु अप्राकृतिक लोकों के चक्कर लगाने से भी वह नहीं चूकता, ताकि उत्तम साधन जुट जाये और भगवान की अद्भुत सेवा हो जाये।

इतनी दौड़-धूप से लायी गई वस्तुओं को अराधक जब भगवान के सामने रखता है, तब उसे कितना संतोष मिलता होगा ? उसका मन तो निहाल ही हो जाता होगा।

इस तरह पूजा सामग्रियों के जुटाने में और भगवान के लिए उनका उपयोग करने में साधक जितना भी समय लगा पाता है, उतना समय वह "अन्तर्जगत" में बिताता है। इस तरह मानस पूजा साधकों को समाधि की ओर अग्रसर करती रहती है और उसके रसास्वाद का आभास भी कराती रहती है। जैसे कोई प्रेमी कान्ता भाव से अपने इष्ट देव की मानसी सेवा कर रहा हो, चाह रहा है कि अपने पूज्य प्रियतम को जूही, चमेली, चम्पा, गुलाब और बेला की तुरंत की गुंथी गमगमाती हुई बढ़िया से बढ़िया माला पहनाये। बाहरी पूजा में इसके लिए बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। आर्थिक कठिनाई मुंह बाये अलग खड़ी हो जाती है, तब तक भगवान से बना यह मधुर सम्बन्ध भी टूट जाता है पर मानस पूजा में यह अड़चन नहीं आती। इसलिए बना हुआ वह सम्पर्क और गाढ़ से गाढ़ होता जाता है। मन की कोमल भावनाओं से उत्पन्न की गई वे बन मालाएँ तुरन्त तैयार मिलती हैं। पहनाते समय पूज्य प्रियतम की सुरभित सांसों से जब इसकी सुगंध टकराती है, तब नस-नस में मादकता व्याप्त हो जाती है, पूज्य प्रियतम का स्पर्श पाकर वह उद्वेलित हो उठती है और साधक को समरस कर देती है। अब न आराधक है न आराध्य है और न अराधना ही है। आगे की पूजा कौन करे ? धन्य हैं वे जिनकी पूजा अधूरी रह जाती है और पूर्ण मानस पूजा से करता है।

## भगवान भैरव "पंचोपचार" पूजन विधि

### [ नित्य पूजन विधि ]

उपासकों! निष्काम भाव से नित्य ही श्री भैरव का "पंचोपचार उपासना" करने वाले उपासक को चाहिए कि वे ब्रह्ममुहूर्त्त में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नानादि से पवित्र हो जावे तत्पश्चात् अपने कमरे में पवित्र स्थान पर पूर्व दिशा में आम लकड़ी से बना, काले रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन के ऊपर काले रंग के कपड़े का आसन बिछावें। स्वयं भी नवीन काला वस्त्र बिना सिले हुए पहनें। सिंहासन पर भगवान भैरव जी की तस्वीर की स्थापना करें। पूजन सामग्री अपने पास एकत्र करके काले रंग के कम्बल के आसन पर बैठ जायें। धूप और चमेली तेल का दीपक जगावें।

### पंचोपचार पूजन सामग्री

1. पुष्प 2. चन्दन 3. धूप 4. दीप 5. नैवेद्य

## पंचोपचार पूजन आरम्भ

उपासकों! अब सिर के ऊपर काले रंग का अंगोछा, रूमाल या तौलिया रखें। इसके बाद दाहिने हाथ में गंगाजल या पवित्र जल लेकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़ें, मंत्र समाप्त होने के बाद अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें।

### [ शरीर पवित्र करने का मंत्र ]

**ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।**
**यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

**हिन्दी अनुवाद**-कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो "पुण्डरी काक्ष" का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अतः हे ॐ रूप पुण्डरी काक्ष हमें पवित्र करें।

**नोट**-उपासकों! कोई भी उपासना हो, चाहे हम किसी भी देवी-देवता की उपासना करें, उनमें सर्व प्रथम "श्री गणेश जी" की आराधना की जाती है। श्री गणेश आराधना प्रथम करने के बिना उपासना का फल प्राप्त नहीं होता। अतः नीचे लिखित श्लोक दोनों हाथ जोड़कर, मुख से उच्चारण करते हुए गणपति जी का ध्यान करें -

### [ श्री गणेश ध्यान मंत्र ]

**विश्वेश माधवं ढुण्डि दण्डपाणि।**
**बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कर्णिकाम्॥**
**बक्र तुण्ड महाकाय कोटि सूर्य सम प्रभ।**
**निर्विघ्न कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥**
**सुमर वश्यैक दंतस्य कपिलो गज कर्णकः।**
**लम्बोदरस्य विकटो विघ्न नासो विनायकः॥**
**धूम्र केतु गर्णाध्यक्षतो भाल चन्द्रो गजाननः।**
**द्वादशैतानि नामानि य पदेच्छ णुयादपि॥**
**विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।**
**संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥**
**शुक्लावरं धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम।**
**प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोप शान्त ये॥**
**अभीत्सि तार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरासुरैः।**
**सर्वविघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपतये नमः॥**

**हिन्दी अनुवाद**-हे विश्वनाथ, माधव, ढुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। कोटि सूर्य के समान महा तेजस्वी विशालकाय और टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव! आप सर्वथा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन-ये गणपति जी के बारह नाम हैं। जो मनुष्य विद्यारम्भ, विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

चन्द्रमा के समान शक्ल धारण करने वाले और गौर चार भुजाधारी एवं प्रसन्न मुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो समस्त विघ्न-बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

**नोट**-अब सिंहासन पर भगवान भैरव देव की पूजा करें। मंत्र उच्चारण करते हुए क्रमशः पूजन की वस्तुएँ सिंहासन पर समर्पित करें।

**[ श्री भैरव पूजन मंत्र ]**

**ॐ स्नानं जलं समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नमः।**

**[ जल चढ़ावें ]**

**ॐ पुष्पं समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नमः।**

**[ पुष्प चढ़ावें ]**

**ॐ चन्दनम् समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नम।**

**[ चन्दन लगावें ]**

**ॐ सुगन्धित गन्धं समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नमः।**

**[ सुगन्धित धूप दिखावें ]**

**ॐ प्रज्जवलित दीपं समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नमः।**

**[ प्रज्जवलित दीप दिखावें ]**

**ॐ नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री भैरवे नमः।**

**[ नैवेद्य चढ़ावें ]**

**नोट**-पूजन के पश्चात् श्री भैरव चालीसा का पाठ करें।

# श्री भैरव चालीसा

## दोहा

श्री भैरव संकट हरन, मंगल करन कृपालु।
करहु दया निज दास पे, निशिदिन दीनदयालु॥

## चौपाइयां

जय डमरूधर नयन विशाला, श्यामवर्ण, वपु महा कराला।
जय त्रिशूलधर जय डमरूधर,काशी कोतवाल, संकट हर।
जय गिरिजासुत परम कृपाला, संकटहरण, हरहु भ्रमजाला।
जयति बटुक भैरव भयहारी, जयति काल भैरव बलधारी।
अष्ट रूप तुम्हरे सब गाये, सकल एक ते एक सवाये।
शिवस्वरूप शिव के अनुगामी, गणाधीश तुम सब के स्वामी।
जटाजूट पर मुकुट सुहावै, भालचन्द्र अति शोभा पावै।
कटि करधनी घुंघरू बाजैं, दर्शन करत सकल भय भाजैं।
कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर, मोर पंख को चंवर मनोहर।
खप्पर खड्ग लिये बलवाना, रूप चतुर्भुज नाथ बखाना।
वाहन श्वान सदा सुखरासी, तुम अनन्त प्रभु तुम अविनासी।
जय जय जय भैरव भय भंजन, जय कृपालु भक्तन मनरंजन।
नयन विशाल लाल अति भारी, रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी।
बं बं बं बोलत दिनराती, शिव कहं भजहु असुर आराती।
एक रूप तुम शम्भु कहाये, दूजे भैरव रूप बनाये।
सेवक तुमहिं तुमहिं प्रभु स्वामी, सब जग के तुम अन्तर्यामी।
रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा, श्यामवर्ण कहुं होइ प्रचारा।
श्वेतवर्ण पुनि कहा बखानी, तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी।
तीन नयन प्रभु परम सुहावहिं, सुरनरमुनि सब ध्यान लगावहिं।
व्याघ्रचर्म धर तुम जग स्वामी, प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी।
चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा, निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा।
क्रोधवन्त भूतेश कालधर, चक्रतुण्ड दशबाहु व्यालधर।
अहहिं कोटि प्रभु नाम तुम्हारे, जय सदा मेटत दुःख भारे।
चौंसठ योगिनि नाचहिं संगा, क्रोधवान तुम अति रणरंगा।
भूतनाथ तुम परम पुनीता, तुम भविष्य तुम अहहु अतीता।

वर्तमान तुम्हरो शुचि रूपा, कालजयी तुम परम अनुपा।
ऐलादी को संकट टारयो, साद भक्त को कारज़ सारयो।
काली पुत्र कहावहु नाथा, तब चरणहु नावहुं नित माथा।
श्री क्रोधेश कृपा विस्तारहु, दीन जानि मोहि पार उतारहु॥
भवसागर बूढ़त दिन राती, होहु कृपालु दुष्ट आराती।
सेवक जानि कृपा प्रभु कीजे, मोहि भगति अपनी अब दीजै।
करहुं सदा भैरव की सेवा, तुम समान दूजो को देवा।
अश्वनाथ तुम परम मनोहर, दुष्टन कहं प्रभु अहहु भयंकर।
तुम्हरो दास जहां जो होई, तां कहं संकट परै न कोई।
हरहु नाथ तुम जन की पीरा, तुम समान प्रभु को बलबीरा।
सब अपराध क्षमा कर दीजै, दीन जानि अपना मोहि कीजै।
जो यह पाठ करै चालीसा, तापै कृपा करहु जगदीशा।

दोहा

जय भैरव जय भूतपति, जय जय जय सुख कन्द।
करहु कृपा नित दास पै, देहु सदा आनन्द॥

**नोट**-चालीसा पाठ समाप्त होने के पश्चात् कांसे या तांबे की थाली पर पान का पत्ता [डंठल वाला] रखकर उस पर कपूर जलाकर भगवान भैरव देवी जी की आरती उतारें। आरती उतारते समय पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर छपा आरती गीत गावें। आरती के पश्चात् भगवान भैरव देव को प्रणाम कर चाय-नाश्ता ग्रहण कर अपने नित्य कार्य में लग जावें।

उपरोक्त विधि से भैरव देव जी की उपासना करने से उपासक की सफलता के मार्ग की बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं।

*॥ इति श्री भैरव देव नित्य पूजन सम्पूर्णम॥*

## भैरव देव के किसी भी स्वरूप की साधना हेतु अनिवार्य षोड़शोपचार पूजन

साधकों! यदि आप भगवान भैरव देव जी के किसी भी स्वरूप की साधना [सिद्धि] करना चाहते हैं तो नीचे लिखित विस्तृत ''षोड़शोपचार पूजन'' सोलह उपचारों द्वारा पूजन अवश्य करना होगा, तभी आप साधना में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

ध्यान रहे, यह साधना आसान भी है और जटिल भी। क्योंकि सिद्धि काल में छोटी-छोटी गलतियां हो जाने पर साधक को इसका अनिष्ट परिणाम भुगतना होता है। अतः योग्य गुरू से साधना की दीक्षा प्राप्त कर तथा गुरू से प्राप्त किया "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" धारण करके ही सिद्धि हेतु साधना आरम्भ करें।

## सिद्धि साधना के क्षेत्र में गुरू की महानता

साधकों! समस्त सिद्धियां एवं तांत्रिक वाङ्मय में उपासना का मंगल प्रस्थान- "श्री गुरू की उपासना" से ही होता है। "गुरू" शब्द का अर्थ शास्त्रों ने इस प्रकार वर्णित किया है-

**गु शब्दश्चांधकारः स्याद्र शब्द स्तन्नि रोधकृताः।**
**अंधकार विरोधित्वाद गुरू रित्य भिधीयते॥**

**भावार्थ**-"गु" का तात्पर्य अंधकार है और "रू" का तात्पर्य अंधकार का निरोध करना है अर्थात् जो अज्ञान रूपी अंधकार का निरोध कर दे या नाश कर दे- वही "गुरू" है।

"गुरू" शब्द की उपमा एक और इस प्रकार है-

**गुकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रकारः पाप हारकः।**
**उकारस्तु भवोद्विष्णु स्त्रित्रयात्मा गुरूः स्वयम्॥**

**भावार्थ**- "गु" अर्थात् सिद्धदाता, "रू" अर्थात् पापहर्ता, "उं" अर्थात् विष्णु स्वरूप। आशय यह है कि गुरू सिद्धिदाता, पापहर्ता और विष्णु रूप होता है।

इसीलिए-"गुरू बिनु ज्ञान नहीं" वाली उक्ति वस्तुतः सत्य है। प्रत्येक प्रकार का ज्ञान गुरू द्वारा ही प्राप्त होता है। यह बात सिद्धि साधना व तांत्रिक उपासना के क्षेत्र में और भी अधिक महत्व रखती है, क्योंकि इस क्षेत्र में अनेक रहस्यों को गुप्त रखने के लिए पद-पद पर शास्त्रकारों ने आदेश दिए हैं। इनके साथ ही मंत्र-तंत्र, सिद्धि-साधना में ज्ञान के साथ-साथ कर्म का भी उतना ही महत्व दिया गया है। जिस प्रकार कोई पक्षी आकाश में एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार केवल ज्ञान अथवा केवल कर्म से इस मार्ग में सिद्धि नहीं मिलती है। ज्ञान तो हमें ग्रन्थों से भी कुछ अंशों में मिल जाता है, किन्तु कर्म-क्रिया की पद्धति तो गुरू से ही प्राप्त होती है।

एक और महत्व की बात यह है कि गुरू द्वारा मिले हुए मार्ग दर्शन से एक निश्चित संरक्षण मिल जाता है। उसमें शंकाओं को कोई अवकाश नहीं रहता।

रूद्रयामल उत्तर तन्त्र में "गुरू महिमा" बतलाते हुए कहा गया है कि-

**गुरूपाद विहीना ये, ते नश्यन्ति ममाज्ञया।**
**गुरूर्मूलं हि मन्त्राणां, गुरूर्मूलं परम तपः॥१।१८८॥**

**गुरोः प्रसाद मात्रेण, सिद्धि रेव न संशयः।**
**अहं गुरू रहं देवो, मन्त्रार्थोस्मि न संशयः ॥१८९॥**

**अर्थात्**-भगवती भैरवी ने यहाँ स्वयं कहा है कि "गुरू सेवा से विहीन मेरी आज्ञा से नष्ट हो जाते हैं। समस्त मंत्रों का मूल गुरू ही है। गुरू ही परम तप है। गुरू की केवल प्रसन्नता से ही अवश्य सिद्धि मिलती है, इसमें संशय नहीं है। मैं भैरवी ही गुरू हूँ और मैं ही मन्त्रार्थ हूँ।"

इस कथन से यह स्पष्ट है कि उपास्यदेव और गुरू दोनों में समान श्रद्धा रहने पर ही उपासना फलवती होती है। गुरू की कृपा से शक्ति प्रसन्न होती है और शक्ति की प्रसन्नता से मोक्ष प्राप्त होता है। गुरू की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा अर्हिनस दास की तरह उनकी आज्ञा माननी चाहिए। इतना ही नहीं, गुरू की पादुका, वस्त्र, शैय्या, भूषण आदि देखकर भी उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

गुरू प्रणाम के लिए कतिपय नियमों का निर्देश भी यहां किया गया है। जिसमें बतलाया गया है कि सदा पादुका मंत्र का स्मरण करता रहे। जब गुरू और शिष्य एक स्थान अथवा एक ग्राम में रहते हों तो प्रतिदिन उनके पास जाकर प्रणाम करना चाहिए। सात योजन तक के विस्तार में यदि गुरू रहते हों तो मास में एकबार दर्शन करना चाहिए। श्री गुरू जिस दिशा में रहते हों, उस दिशा में भक्ति पूर्वक प्रणाम करें। उनके साथ एक आसन पर नहीं बैठें।

## सिद्धि साधना में गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध कवच यंत्र सिंहासन पर स्थापित करना व मंत्र जप की आवश्यकता क्यों ?

साधकों! सद गुरूदेव की लीला एवं स्वरूप को जानना सहज नहीं कहा जा सकता। गुरू तत्व, गुरू शिष्य सम्बन्ध, गुरू कवच यंत्र कृपा, गुरू योग इत्यादि क्रियाओं की विशद विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य परम्परा में उपनिषदों में गुरू की परम महत्ता के दुःखों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरू ही एकमात्र गति है।

शास्त्रों में गुरू को भगवान शिव स्वरूप माना गया है, क्योंकि वे ही वास्तव में "**शं**" अर्थात् "कल्याण", "कर" अर्थात् करने वाले हैं। वस्तुतः श्री भगवान की अनुग्रह शक्ति ही शुभ योग, शुभ आग्रह और शुभ सन्धि द्वारा केन्द्रीभूत होकर गुरू शक्ति के रूप में मूर्त हो अभिव्यक्ती होती है।

गुरू देव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्र-छाया के बिना कोई भी सिद्धि में सफलता मिल ही नहीं सकती। सभी साधकों के सिद्धि काल में गुरू का उपस्थित होना भी मुश्किल है। अतः इस समस्या का समाधान हेतु - गुरू द्वारा प्राप्त - "सिद्ध

गुरू कवच यंत्र'' - सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। गुरू द्वारा प्रदत्त सिद्ध यंत्रराज में ''गुरू की परम दिव्य शक्ति'' छिपी रहती है, जो सिंहासन पर स्थापित होकर ''रिमोट कंट्रोल'' बनकर साधक के तन-मन-ज्ञान और मस्तिष्क को संचालित करते हैं और साधना काल में आने वाली समस्त बाधाओं का नाश करते रहते हैं। परिणाम स्वरूप साधक प्रथम बार में ही साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है। इसलिए गुरू द्वारा सिद्ध कवच यंत्र साधना काल में पूजन स्थल के सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। सिद्ध गुरू यंत्र की शक्ति सिंहासन पर स्थापित होकर साधक को साधना मे लीन कर देता है।

गुरू देव जानते हैं कि साधक के भीतर ऊर्जा है और जब उसका संचारण बाहर की दिशा में होता है तो वह ऊर्जा बाहर निकलकर छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसका प्रभाव तीव्रतम नहीं हो सकता। ''सिद्ध गुरू कवच यंत्र'' उस ''ऊर्जा'' को भीतर से ''उर्ध्वगति'' प्रदान करता है, उसे संयोजित करके साधना को सफलता की दिशा में मोड़ देता है। गुरू यंत्र इस ऊर्जा के वर्तुल को निरस्त नहीं होने देता। यंत्र की शक्ति साधक को हृदय में अवस्थित ''आज्ञाचक्र'' को स्पर्श करता है, तब आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे पुर, अनाहत, विशुद्ध चक्रों में ऊर्जा का प्रवाह, शक्ति का प्रवाह जहां भी अवरूद्ध हो गया है उसे हटाकर आज्ञा चक्र की ओर ''उधर्वगति'' देता है और यह आज्ञा चक्र से सहस्त्रार में स्थापित हो जाता है, तो साधना काल के रोग, शोक, अनिष्ट, व्याधि आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाता है।

साधकों ! मंत्र जप की आवश्यकता सिद्धि काल में क्यों पड़ती ? इसे ऐसे समझें —

मनुष्य के मुख से जो भी शब्द निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द या ध्वनि कभी मिटता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। महाभारत काल में भी ध्वनि संवाद हुए थे, वे आज भी वायुमण्डल में व्याप्त हैं, आवश्यकता है—उस "FREQUENCY" को पकड़ने की, जिसके माध्यम से हम उस ध्वनि को सुन सकें।

वैज्ञानिकों के अनुसार ध्वनि कंपनों के माध्यम से जो कार्य सामान्यत: असम्भव लगते हैं, उन्हें भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु ध्वनि कम्पनों में विशिष्ठ गुण हों।

''डॉ० फ्रिस्टलोव'' ने ध्वनि कंपनों के माध्यम से शरीर के परमाणुओं में कंपन उत्पन्न कर दिखाया। इसी कंपन से शारीरिक रोगों को ध्वनि तंरगों द्वारा दूर करने में सफलता मिली है। जेट विमान के तीव्र ध्वनि तरंगों से ही खिड़कियों के शीशे चटक जाते हैं या टूट जाते हैं। इस प्रकार ध्वनि तरंगों का प्रभाव पड़ता है और निर्विवाद रूप से होता है।

मंत्र का उच्चारण करने से भी एक विशिष्ठ ध्वनि कम्पन्न उत्पन्न होती है। जब

साधक मंत्र जप करता है तो मंत्र से उत्पन्न कम्पन "ईथर" के माध्यम से कुछ ही क्षणों में यंत्र—मंत्र देव तक पहुंचकर लौट आते हैं। लौटते समय उन कम्पनों में यंत्र—मंत्र देव की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं प्राणवत्ता व्याप्त हो जाती है, जो पुनः साधक के शरीर से टकराकर उसमें उन गुणों को बढ़ा देती है, जिससे साधक साधना में सफल हो जाता है।

## यंत्र-मंत्र साधना में कितने साधकों को सफलता पहली बार ही क्यों नहीं मिलती

उपासकों ! यहाँ ध्यान देने योग्य और भी बात हैं कि "साधक" उपहास का पात्र तब ही बनता है, जब तक उसे कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती, और यही बात प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जीवन में भी लागू हुई है। जब तक उन्होंने कोई आविष्कार कर नहीं लिया, लोगों ने उपहास ही किया कि—"क्या पागलों की तरह हर समय अपनी प्रयोगशाला में बन्द रहता है।" और जब एक दिन व्यक्ति प्रसिद्धि पा लेता है तो वही उपहास करने वाले लोग उनका यशोगान करते हैं—कि अमुक को मैंने अथक परिश्रम करते देखा है, अमुक अपनी प्रयोगशाला में घंटों जुटे रहते थे—भूख—प्यास की सुध—बुध छोड़कर।

आज भी हजारों लोग हैं, अनेकों मेरे शिष्य ही हैं, जिन्होंने यंत्र—मंत्र साधना में सफलता प्राप्त की है और कर रहे हैं इन्ही साधनात्मक विधि—विधान को अपनाकर। किसी-किसी साधक को तो सफलता पहली बार इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि साधक पूर्ण रूप से अनुभवी नहीं होता है, सिद्ध गुरू कवच यंत्र का उपयोग नहीं करता है। रेडियो में जब गाने सुनने होते हैं तो उसकी सूई को एक निश्चित आवृत्ति [FREQUENCE IN MHZ 0 KHZ] पर ट्यून किया जाता है। यदि 500 K.H.Z का स्टेशन है तो किसी अन्य FREQUENCE पर आवाज नहीं आएगी या साफ नहीं आएगी और कई बार यह सेटिंग ठीक से नहीं हो पाती। K.H.Z. ही रह जाती है। यही हाल साधनाओं में भी होता है। हमारे मन की भी सेटिंग ठीक ढंग से नहीं हो पाती। कभी घर में अशान्त वातावरण होता है तो कभी मंत्र का उच्चारण अशुद्ध होता है आदि।

इन सब कारणों से कई बार साधक साधना लक्ष्य के बिलकुल निकट भी पहुंचकर सफल नहीं हो पाता। वह 499 या 501 पर पहुंच कर निराश हो जाता। परन्तु बार-बार प्रयास करने पर जिस तरह वह 499 पर पहुंचा था। 500 पर भी पहुंच सकता है, और वह पहुंचाने की शक्ति "गुरू कवच यंत्र" रूपी "रिमोट कंट्रोल" के पास होती है। जो साधक सिद्ध गुरू से "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" प्राप्त कर साधना आरम्भ करता है तो उस साधक के समक्ष "सिद्धि" हाथ बांधे खड़ी हो जाती है।

# सिद्धि-साधना के मंत्रों में सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य

साधकों ! सिद्धि मंत्रों में "नमः, स्वाहा, वषट, वौषट, हुम और फट्" शब्दों का उपयोग होता है। यहां इन्हीं सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य बतला रहा हूँ।

अन्तः करण को शान्त अवस्था में "नमः" शब्द का प्रयोग होता है। सारी दुर्धर्ष, घातक एवं अपकारी शक्तियां विनय के सामने नत हो जाती हैं। जो मनुष्य यथाशक्ति परोपकार में रत रहकर दूसरों के हित के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देता है, अथवा यों कहिये कि अपने आप को "स्वाहा" कर देता है वह अपने शत्रुओं की सारी विरोध भावनावों को हटाकर उन पर पूरा अधिकार कर लेता है। "वषट" अन्तःकरण की उस वृत्ति का लक्ष्य कराता है जिसमें अपने शत्रुओं के सम्बन्धियों का अनिष्ट साधन करने अथवा उनका प्राण हरण करने की भावना रहती है। "वौषट्" अपने शत्रुओं के हृदयों में एक दूसरे के प्रति द्वेष उत्पन्न करने का सूचक है। "हुम" बल तथा अपने शत्रुओं को स्थानच्युत करने के निमित्त क्रोध का ज्ञापक है। "फट्" अपने शत्रु के प्रति शस्त्र प्रयोग को व्यक्त करता है।

उपयुर्क्त शब्दों का उड्डीस तन्त्र (श्लोक १६३) में वर्णन मिलता है। महानिर्वाण तंत्र (५—१२६—१२८) में इन्हीं शब्दों का प्रयोग अंगन्यास तथा करन्यास के लिए किया गया है। इस प्रकार के सांकेतिक शब्दों का प्रयोग केवल तंत्र शास्त्र में ही नहीं, अपितु वेदों में भी उसी रूप में मिलता है। वेदों में इनके अतिरिक्त और भी कई शब्द मिलते हैं। अर्थवेद (११—९—९—१०) में उल्कापात के शुभ फल के लिए, आभिचारिक प्रयोगों की निष्फलता के लिए तथा पुल इत्यादि को उड़ा देने के निमित्त प्रयुक्त हुए डाय जैसे—विध्वंशक पदार्थों की व्यर्थता तथा सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई है। यहाँ "शम्" इस सांकेतिक शब्द का प्रयोग किया गया है। उक्त वेद के एकादश काण्ड के द्वितीय सूक्त में रूद्र की शक्ति एवं ऐश्वर्य का खासा वर्णन किया गया है और "नमः" शब्द के द्वारा उनका कई बार अभिवादन किया गया है। जिस प्रकार अग्निहोत्र एवं वषट् कार से यश का लाभ होता है, उसी प्रकार वरूण वृक्ष की मणि से यश एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। "अग्निहोत्र" का अर्थ है अग्नि अथवा परम गुरू को अपना मन "WILL" सौंप देना और "वषट्कार" का अर्थ है मन के समर्पण के मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओं का नाश करना अथवा उन्हें असक्त बना देना।

"अर्थवेद" (७/९७) में "वषट" का प्रयोग एक दूसरे अर्थ में भी आता है। वहाँ एक "स्वाहा" शब्द और है, जिसका प्रयोग इस मंत्र के अतिरिक्त अन्य स्थलों में भी मिलता है। "स्वाहा" का अर्थ बहुधा यह होता है कि—"मैं अमुक बात को सच्चे मन से कहता हूँ।" एक जगह "वषड्हुतेभ्यः वषड् हुतेभ्यः"—इन शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है—"वर्तमान एवं अनागत विघ्नों का निराकरण।"

"नमः" का भाव हम ऊपर में बतला चुके हैं। उदाहरणार्थ अथर्ववेद (७/८७) का पहला मंत्र देखिये। उसमें रूद्र का अग्नि रूप से वर्णन किया गया है। "वे अग्नि में, जल में, वनस्पति में, लताओं में सर्वत्र व्याप्त हैं और समस्त लोकों के रचयिता हैं। उनकी वन्दना करो।" वेदों में ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ किसी शक्तिशाली पुरूष के सामने विनय का भाव प्रदर्शित किया गया है। विनय शक्तिशाली पुरूष की शक्ति का ह्रास कर देता है। वेद में इस भाव की ध्वनि मिलती है कि विनय से बढ़कर शक्ति पर विजय प्राप्त करने का कोई और प्रबल उपाय नहीं है।

अब हम "फट" के सम्बन्ध में कुछ निवेदन करेंगे। अथर्ववेद (४/१८/३) में इस शब्द का उल्लेख मिलता है। जो लोग पुल, जेल इत्यादि को उड़ा देने के लिए शक्तिशाली "डायनामाइट" जैसे—ध्वंसक पदार्थ बनाते हैं उन्हें इस बात का पता है कि इस प्रकार उड़ाये जाने पर पत्थर, कंकड आदि "फट" इस प्रकार शब्द करते हैं। "फट" यह फूटने के शब्द का अनुकरण है।

"अथर्ववेद" (१/२/१) में से हम एक उदाहरण और उद्धत करेंगे। उपर्युक्त मंत्र सुगमता से प्रसव कराने के सम्बन्ध में है। प्रसव की सुगमता के लिए गर्भाशय के बन्धनों को शिथिल करना आवश्यक है। यह कार्य एक कुशल दाई के हाथ से होता है। वेद में यह कार्य "पूषण" का बताया गया है। "वषट्" शब्द से इस बात की ध्वनि निकलती है। इसीलिए "वषट्" का अर्थ है बन्धनों का स्लथीकरण। इसी प्रकार "अथर्ववेद" [५/२६/१२] में इसी शब्द का प्रयोग शत्रु विनाश के अर्थ में हुआ है। अर्थवेद (९/७/५) में प्राणायाम के द्वारा मन को स्थिर करते उसका निरोध करने के अर्थ में "वषट्" का प्रयोग किया गया है। "वषट्" का यह अर्थ अथर्ववेद (१५/१४/१७) में जिस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया है उससे ठीक मेल खाता है।

## सिद्धि साधना में भगवती को नर बलि एवं पशु बलि चढ़ाना भयानक अपराध

भगवती की साधना करने वाले साधकों ! यद्यपि "तंत्र शास्त्र" समस्त श्रेष्ठ साधन शास्त्रों में एक बहुत उत्तम शास्त्र है, उसमें अधिकांश बातें सर्वथा अभिनन्दनीय और साधकों को परम सिद्धि मोक्ष प्रदान कराने वाली है। तथापि सुन्दर बगीचे में भी जिस प्रकार असावधानी से कुछ जहरीले पौधे उत्पन्न हो जाया करते हैं और फलने-फूलने भी लगते हैं, इसी प्रकार तंत्र में भी बहुत सी अवांछनीय गन्दगी आ गई हैं। यह विषयी कामान्ध मनुष्यों और मांसाहारी, मद्यलोलुप, अनाचारियों की ही "काली करतूत" मालूम होती है, नहीं तो श्रीसीय ऋषिप्रणीत मोक्ष प्रदायक "पवित्र तंत्र शास्त्र" में ऐसी बातें कहाँ से और क्यों आती ?

जिस शास्त्र में अमुक—अमुक जाति की स्त्रियों का नाम ले लेकर व्यभिचार की आज्ञा दी गई हो और उसे धर्म तथा साधना बताया गया हो, जिस शास्त्र में पूजा की पद्धति में बहुत ही गन्दी वस्तुएँ पूजा सामग्री के रूप में आवश्यक बतायी गयी हो,

जिस शास्त्र के मानने वाले साधक हजार स्त्रियों के साथ व्यभिचार को, और अष्टोत्ररशत नर बालकों की बलि को अनुष्ठान की सिद्धि में कारण मानते हैं, वह शास्त्र तो सर्वथा "अशास्त्र" और शास्त्र के नाम को कलंकित करने वाला ही है।

व्यभिचार की आज्ञा देने वाले तन्त्रों के अवतरण हमने पढ़े हैं, और तंत्र के नाम पर व्यभिचार और "नरबलि" करने वाले मनुष्यों की घृणित गाथाएं विश्वस्त सूत्रों से सुनीं है। ऐसे महान तामसिक कार्यो को शास्त्र सम्मत मानकर भलाई की इच्छा से इन्हें करना सर्वथा भ्रम है, भारी भूल हैं और ऐसी भूल में कोई पड़े हुए हों तो उन्हें तुरन्त ही इससे निकल जाना चाहिए। और जान—बूझकर धर्म के नाम पर व्यभिचार, हिंसा आदि करते हों, उनको तो माँ काली का भीषण दंड प्राप्त होगा, तभी उनके होश ठिकाने लगेंगे। दयामयी माँ अपनी भूली हुई सन्तान को क्षमा करें और उन्हें रास्ते पर लावें, यही प्रार्थना है।

इसके अतिरिक्त "पंचामकार" के नाम पर भी बड़ा अन्याय अनाचार हुआ तथा अब भी बहुत जगह हो रहा है, उससे भी सतर्कता से बचना चाहिए। बलिदान और मद्य प्रदान भी सर्वथा त्याज्य हैं। माता की जो सन्तान अपनी भलाई के लिए उसी माता की प्यारी भोली—भाली सन्तान की हत्या करके उसके खून से माँ को पूजती है, जो माँ के बच्चे को खून से माँ के मन्दिर को अपवित्र और कलंकित करता है, उस पर माँ कैसे प्रसन्न हो सकती है।

माँ दुर्गा, काली "जगज्जननी विश्वमाता" है। स्वार्थी मनुष्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धन, पुत्र, स्वार्थ, वैभव सिद्धि या मोक्ष के लिए भ्रम वश निरीह बकरे, भैंसे और अन्यान्य पशु—पक्षियों के गले पर छुरी फेरकर माता से सफलता का वरदान चाहता है, यह कैसी असंगत और असम्भव बात हैं। निरपराध प्राणियों की नृशंसता पूर्वक हत्या करने कराने वाला कभी सुखी हो सकता है ? उसे कभी शान्ति मिल सकती है ? कदापि नहीं।

दयाहीन मांस लोलुप मनुष्यों ने ही इस प्रकार की प्रथा चलायी है, जिसका शीघ्र ही अन्त हो जाना चाहिए। जो दूसरे निर्दोष प्राणियों की गर्दन काटकर भला मनायेगा, उसका यथार्थ भला कभी नहीं हो सकता। यह बात स्मरण रखनी चाहिए। ख्याल करो—तुम्हें खूंटे से बांधकर यदि कोई मारे या तुम्हारे गले पर छुरी फेरे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा ? नन्हीं सी सूई या कांटा चुभ जाने पर ही तिल-मिला उठते हो। फिर इस पापी पेट के लिए राक्षसों की भांति मांस से जीभ को तृप्त करने के लिए गरीब पशु-पक्षियों को धर्म के नाम पर—अरे, माता के भोग के नाम पर मारते तुम्हें शर्म नहीं आती ? मानो उन्हें कोई कष्ट ही नहीं होता। याद रखो, वे सब तुमसे बदला लेंगे। और तब तुम्हें अपनी करनी पर निरूपाय होकर "हाय तौबा" करना होगा। अतएव सावधान ! माता के नाम पर गरीब निरीह पशु—पक्षियों की बलि देना तुरन्त बन्द कर दो। माता के पवित्र मंदिरों को उसी की प्यारी सन्तान के खून से रंगकर माँ के अकृपा भाजन मत बनो।

"बलिदान" जरूर करो, परन्तु करो अपने स्वार्थ का और अपने दोषों का। माँ

के नाम पर माँ की दुखी सन्तान के लिए अपना न्यायोपार्जित धन दान कर धन का बलिदान करो। माँ की दुखी सन्तान का दुख दूर करने के लिए अपने सारे सुखों की, अपने प्यारे शरीर की भी बलि चढ़ा दो निष्काम भाव से माँ के चरणों पर अपना सारा धन, जन, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य, सत्ता और साधन, उसकी दीन—हीन, दुखी, दलित सन्तान को सुखी करने के लिए। तब तुम पर माँ की कृपा होगी। माँ के पुलकित हृदय से जो आर्शीवाद मिलेगा, माँ की गद्‌गद्‌ वाणी तुम्हें अपने दुखी भाईयों की सेवा करते देखकर जो स्वाभाविक वरदान देगी उससे तुम निहाल हो जाओगे। तुम्हारे लोक-परलोक दोनों उत्तम हो जायेंगे। तुम प्रेय और श्रेय दोनों को अनायाश पा जाओगे, माँ तुम्हें गोद में लेकर तुम्हारा मुख चुमेगी और फिर तुम कभी उसी शीतल-सुखद नित्यानन्दमय परमधाममय गोद से नीचे नहीं उतरोगे।

''बलिदान'' करना है तो—

बलि चढ़ाओ काम की, क्रोध की, लोभ की, हिंसा की, असत्य की और इन्द्रिय विषया शक्ति की। माँ तुम्हारी इन चीजों को नष्ट कर दे—ऐसी माँ से प्रार्थना करो। माँ के चरण रज रूपी तीक्ष्ण धार तलवार से इन दुर्गुण रूपी असुरों की बलि चढ़ा दो। अथवा प्रेम की कटारी से ममत्व और अभिमान रूपी राक्षसों की बलि दे दो।

तुम कहोगे फिर माँ के हाथ में ''नरमुण्ड'' क्यों है ? माँ भैंसे को क्यों मार रही हैं ? क्या वे माँ के बच्चे नहीं है ? उन अपने बच्चों की बलि माँ क्यों स्वीकार करती हैं? तुम इसका रहस्य नहीं समझते । उनकी बलि दूसरा कोई चढ़ाता नहीं, वे स्वयं आकर बलि चढ़ जाते हैं। अवश्य ही वे भी माँ के बच्चे हैं, परन्तु वे ऐसे दुष्ट हैं कि माँ के दूसरे असंख्य निरपराध बच्चों को दुःख देकर—उनके गले काटकर स्वयं राजा बने रहना चाहते हैं, स्वयं माँ लक्ष्मी को भोग्या बनाकर मातृगामी होना चाहते हैं, माँ उमा से विवाह करना चाहते हैं, ऐसे दुष्टों को भी माँ मारना नहीं चाहती, शिव को दूत बनाकर उनको समझाने के लिए भेजती है। पर जब वे किसी प्रकार नहीं मानते, तब दयापरवश हो उनका उद्धार करने के लिए उनको बलि के लिए आवाहन करती हैं और वे आकर जलती हुई अग्नि में पतंगों की भांति माँ के चरणों पर चढ़ जाते हैं।

माँ दूसरे बालकों को आश्वासन देने और ऐसे दुष्टों को शासन में रखने के लिए ही ''मुण्डमाला'' धारण करती हैं। मारकर भी उनका उद्धार करती हैं। इन असुरों की इस बलि के साथ तुम्हारी आज की यह स्वार्थ पूर्ण बकरे और पक्षियों की निर्दयता और कायरता पूर्ण बलि से कोई तुलना नहीं हो सकती। हाँ, यह तुम्हारा आसुरी पन, राक्षसी पन, अवश्य है, और इसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। अतएव राक्षस न बनो, माँ की प्यारी—दुलारी सन्तान बनकर उसकी सुखद गोद में चढ़ने का प्रयत्न करो।

राग द्वेश पूर्वक किसी का बुरा करने के लिए माँ की आराधना कभी न करो। याद रखो, माँ तुम्हारे कहने से अपनी सन्तान का बुरा नहीं कर सकती। जो दूसरे का बुरा चाहेगा, उसकी अपनी बुराई होगी। स्त्री वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिए भी उनको मत पूजो, उन्हें पूजो दैवी गुणों की उत्पत्ति के लिए, सबकी भलाई के लिए अथवा मोक्ष के लिए।

पाठकों ! साधना हो या उपासना, इनमें षोड़शोपचार पूजन इष्टदेव का करना अत्यन्त जरूरी है और इस पूजा में ''बलिदान'' एक प्रधान उपचार है, इसके बिना पूजा पूरी ही नही होती। इसका कारण यह है कि साधक ने यदि साधना के अन्त में, पूजक ने पूजा के अन्त में इष्टदेव में अपना सब कुछ बलिदान देकर उपाष्यदेव से अपना भेद—भाव मिटा न दिया तो पूजा की पूर्णता ही क्या हुई ? इसी कारण ''बलिदान'' पूजा का प्रधान अंग है। बलिदान के बिना न जगन्माता ही प्रसन्न होती और न भारत माता ही प्रसन्न हो सकती है। जिस देश में जितने बलिदान करने वाले देश सेवक, देश नेता उत्पन्न होते हैं, उस देश की उतनी ही सच्ची उन्नति होती है।

यह बलिदान चार प्रकार का होता है—

सबसे उत्तम कोटि का बलिदान ''आत्म बलिदान'' कहलाता है। इसमें साधक जीवात्मापन को काटकर परमात्मा पर आहुति चढ़ा देता है। इस बलिदान के द्वारा परमात्मा से अज्ञानवश जीवात्मा की जो पृथकता दिखती थी वह एक बारगी ही नष्ट हो जाती है और साधक स्वरूप स्थित होकर अद्वितीय ब्रह्म का साक्षातकार करता है। जब यह न हो सके तब तक द्वितीय कोटि का बलिदान करना चाहिए। इसमें कामरूपी बकरे,. क्रोध रूपी भेड़, मोह रूपी महिष आदि का बलिदान किया जाता है। अर्थात् षडरिपु का बलिदान ही द्वितीय कोटि का बलिदान है। तृतीय कोटि में, इतना न हो सकने पर किसी इन्द्रिय प्रिय वस्तु का बलिदान होता है। प्रत्येक विशेष पूजा के अन्त में जिसको जिस वस्तु पर लोभ है उसका बलिदान अर्थात् संकल्प पूर्वक त्याग कर देना चाहिए। यही तृतीय कोटि का बलिदान है। इस प्रकार से मिठाई, प्याज—लहुसन, मादक वस्तु आदि के प्रति आसक्ति छूट सकती है। यदि ऐसा भी नहीं हो सके तो क्रमशः छुड़ाने के लिए चतुर्थ कोटि का बलिदान है।

महाकाल संहिता में ''बलि'' शब्द का रहस्य इस प्रकार उपदेशित किया गया है—

**सात्विको जीव हस्यां वै कदाचिदपि नाचरेत।**
**इक्षुदण्डश्च कुवमाण्डं तथा वन्य फलादिकम्॥**
**क्षीरपिण्डेः शालिचूर्णे पशुं कृत्वा चरेद्बिलिम्।**

**हिन्दी अनुवाद**—''सात्विक अधिकार के उपासक कदापि पशु बलि देकर जीव हत्या नहीं करते, वे ईख, कोहड़ा तथा वन्य फलों की बलि देते हैं। अथवा खोआ, आटा या चावल के पिंड का पशु बनाकर बलि देते हैं। यह सब भी रिपुओं (दुष्टों) के बलिदान का निमित्त मात्र ही है।''

**महानिर्वाण तन्त्रानुसार—**

**काम क्रोधो पशु इमावेव मनसा बलिमर्पयेत।**
**काम क्रोधो विघ्नकृतौ बलिं दत्वा जपं चरेत्॥**

**हिन्दी अनुवाद**—''काम और क्रोध रूपी दोनों विघ्नकारी पशुओं का बलिदान करके उपासना करनी चाहिए। यही शास्त्रोत्क बलिदान रहस्य है।''

## देवि-देवताओं की साधना में षोड़शोपचार पूजन की प्रधानता और षोड़शोपचार पूजन का अर्थ

सिद्धि—साधना करने वाले साधकों! किसी भी देवी—देवताओं की सिद्धि साधना आरम्भ में उपास्य देव का षोड़शोपचार पूजन करना अति आवश्यक होता है। इस पूजन के बिना साधना सम्पन्न नहीं हो सकती। षोड़शोपचार पूजन का अर्थ होता है—"सोलह उपचारों द्वारा पूजन" ये सोलह उपचार निम्न प्रकार है—

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. स्नान, 7. वस्त्र, 8. यज्ञोपवीत, 9. चन्दन, 10. अक्षत, 11. पुष्प, 12. सिन्दूर, 13. पान—सुपारी, 14. धूप—दीप, 15. नैवेद्य और 16. दक्षिणा एवं प्रदक्षिणा।

उपासकों ! इन षोड़शोपचार पूजन में एवं सिद्धि साधना में निम्नलिखित पूजन सामग्रियों की आवश्यकता होती है—

## पूजन सामग्री

श्री भैरव साधना में :- गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध गुरू कवच यंत्र, आम की लकड़ी से बना काले रंग से बना सिंहासन (यदि प्रतिमा स्थाई रूप से मंदिर में प्रतिष्ठित हो तो सिंहासन की आवश्यकता नहीं) सिंहासन पर बिछाने हेतु काला नवीन वस्त्र, माता हेतु काली साड़ी व अन्य वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएँ, पूजन सम्पन्न कराने वाले पुरोहित के लिए एवं साधक के लिए नवीन वस्त्र (पुरोहित के लिए धोती एक जोड़ा, बनियान, चादर, तौलिया और साधक के लिए काली धोती व काला चादर, जनेऊ—10, लाल अबीर, (गुलाल) गेहूं का आटा, पान पत्ता, सुपारी, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी, धूप, सुगन्धित अगरबत्ती, रूई, कपूर, पंचरत्न, सर्वोसधि, कलश हेतु मिट्टी का घड़ा, पानी वाला नारियल—1, सूखा नारियल—1, केले, फल 5 तरह का, लड्डू, फूल माला, पुष्प, बिल्वपत्र, आम का पल्लव, केले का पत्ता, गंगाजल, अरघी, पंचपात्र, कांशे की कटोरी—2, थाली—2, ग्लाश—2, आसन कम्बल का—2, चौमुखी दीपक, रूद्राक्ष की 108 दाने वाली पवित्र माला, आम की लकड़ी, माचिस, दुर्वादल, गाय का गोबर, शहद, गाय का दही, गाय का कच्चा दूध, शक्कर (गुड़) भगवान भैरव की तस्वीर, आरती स्टैन्ड, साधना की पुस्तक, जौ, अभिषेक पात्र, विग्रह को पोंछने हेतु काला वस्त्र, शंख, केसर, पंचमेवा, मोली, सात रंगों में रंगाया चावल, भेंट में देने हेतु द्रव्य आदि।

# पूजा के कुछ आवश्यक नियम

**आसन सर्म्पण में**—आसन के ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिए।

**पाद्य में**—चार पल जल और उसमें श्यामाघास, (दूर्व) कमल और अपराजिता देनी चाहिए।

**अर्घ्य में**—चार पल जल और गन्ध—पुष्प, अक्षत (चावल) दूर्वादल, काले तिल, कुशा का अग्र भाग तथा श्वेत सरसों देना चाहिए।

**आचमनीय में**—छः पल जल, जायफल, लौंग और कंकोल का चूर्ण देना चाहिए।

**मधुपर्क में**—कांश्य पात्र स्थित घृत, मधु (शहद) और दधि (दही) देना चाहिए।

**स्नान कराने हेतु ( विग्रह को )**—पचास पल जल का विधान है।

**वस्त्र**—जोड़ा देना चाहिए।

**आभरण**—स्वर्ण निर्मित हों और उसमें मोती आदि जड़े हों।

**गन्ध द्रव्य में**—चन्दन, अगर, कपूर आदि एक में मिला दिये गये हों। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है।

**पुष्प**—पचास से अधिक हों और अनेक रंग के हों।

**धूप**—गुग्गल का हो और कांश्य पात्र में निवेदन किया जाए।

**नैवेद्य**—एक पुरूष के भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिए।

**दीप**—कपास की बत्ती से कपूर आदि मिलाकर बनाया जाये। बत्ती की लम्बाई चार अंगुल के लगभग हो और दृढ़ हो। दीप के साथ "शिलापिष्टका" भी उपयोग करना चाहिए।

**दूर्वा और अक्षत की संख्या**—सौ से अधिक समझनी चाहिए।

एक-एक सामग्री अलग—अलग पात्र में रखी जाए। वे पात्र सोने, चांदी, तांबे पीतल या मिट्टी के हों। व्यवस्था अपनी शक्ति अनुसार ही करनी चाहिए। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार जो सामग्री मिल सकती है, उनके प्रयोग में आलस्य, प्रमाद और संकीर्णता नहीं करनी चाहिए।

(नित्य पूजा प्रकाश से उद्धृत)

# पंचम भाग



# भगवान् भैरव षोड़षोपचार पूजन एवं साधना खण्ड

## भगवान भैरव साधना

साधकों ! सावधान ! श्री भैरव की साधना समस्त साधनाओं में से सर्वोत्तम साधना है और अति जटिल व कठिन साधना है, अतः छोटी—छोटी साधनाएँ सम्पन्न करने के पश्चात् ही यह महान साधना करने की हिम्मत करें।

यह महान साधना करने के पश्चात् साधक समस्त कामनाओं की पूर्ति करने में सक्षम हो जाता है। साथ ही शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमें में जीत धन की प्राप्ति, प्रगति, व प्रसन्नता के साथ अन्त काल में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्री भैरव की साधना के लिए सर्वोत्तम स्थान श्मशान भूमि है। श्मशान भूमि एक ऐसा स्थान है, जहां जाते ही संसार की नश्वरता का आभास होता है और वैराग्य की भावना जागृत होती है।

**शास्त्रों का मत है—**

**भोजनांते मैथुनांते श्मशानांते च या मते।**
**सामते सर्वदा चेतसात् नरो नारायण भवेत॥**

**हिन्दी अनुवाद—**"भोजन के पश्चात् पेट भर जाने पर जिस प्रकार भोजन से जीव उपरांत हो जाता है, जिस प्रकार स्त्री सम्भोग के पश्चात् कुछ समय सम्भोग से मन हट जाता है, उसी प्रकार श्मशान में किसी दाह कर्म में जाने के पश्चात् कुछ समय संसार से वैराग्य हो जाता है। मस्तिष्क का यह विचार थोड़ी देर के लिए होता है। यदि ऐसा विचार सदैव रह जाये तो नरसाक्षात नारायण हो जाये।"

वास्तविकता यह है कि श्मशान भूमि में साधना करने से जातक का मन माया मोह से बाहर होकर साधना में पूर्ण नियंत्रित हो जाता है।

यह साधना दिवाली की रात्रि में, अमावस्या की रात्रि में या किसी भी शनिवार की रात्रि में बारह बजे आरम्भ करनी चाहिए। साधना आरम्भ करने के लिए तिथि, मुर्हुत आदि का शुभ लग्न पंडित से निकलवा लेना चाहिए और यह महान साधना का प्रारम्भिक पूजन किसी योग्य वैदिक पंड़ित द्वारा ही सम्पन्न करायें। ये साधना 40 दिन

की है। प्रथम रात्रि पूजन का शुभारम्भ पंडित से सम्पन्न कराये, फिर दूसरे दिन से स्वयं मंत्र जप करें। फिर अन्तिम दिन पंडित को बुलवा कर हवन कर्म, विसर्जन आदि सम्पन्न करावें। विसर्जन के बाद ब्राह्मण भोजन व कुमारी कन्याओं को भोजन करावें। ब्राह्मण की संख्या 5 और कुमारी कन्याओं की संख्या 11 होनी चाहिए।

यदि श्मशान भूमि में साधना करना मुश्किल लगे तो शिव मंदिर, काली मंदिर अथवा अपने घर के पवित्र कमरे में ही यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

उपरोक्त दिन रात्रि के बारह बजे स्नानादि से पवित्र हो जावें। पूजा स्थल पर गंगाजल छिड़कर आम लकड़ी से बना, काले रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। समस्त पूजन सामग्री अपने पास कर लें। सिंहासन उत्तर दिशा में स्थापित करें। स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे। सिंहासन उत्तर दिशा से दक्षिण तरफ रूख होगा अर्थात् आपके सामने होना चाहिए। वैदिक पंडित पश्चिम के तरफ मुख करके बैठे। बैठने हेतु साधक व पंडित दोनों ही कम्बल के आसन का प्रयोग करें। इसके बाद सिंहासन पर काला वस्त्र बिछाकर माता काली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। इसके पश्चात् स्वयं नवीन काला वस्त्र धारण कर, पवित्र तन मन से धूप, गाय का घी और रूई की बाती का चौमुखी दीपक प्रज्जवलित करें। दीपक प्रज्जवलित कर माता जी के सिंहासन के सामने पास में दाहिनी ओर अक्षत पूंज पर ( चावल छिड़क कर) रख दें। पूजन आरम्भ से पहले सिर पे काला रूमाल या काला तौलिया अवश्य रख लें।

याद रखें। कोई भी साधना गुरू के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती। गुरू भी वही होना चाहिए जिसने श्री भैरव की साधना पूर्व सम्पन्न किए हुए हों। साधना काल में गुरू का होना भी जरूरी है। यदि गुरू स्वयं उपस्थित नहीं हो सकें तो उनके द्वारा सिद्ध किया हुआ—''सिद्ध गुरू कवच यंत्र'' पूर्व ही प्राप्त कर लें। पूजन ( साधना) आरम्भ से पूर्व गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र को पवित्र जल या गंगाजल से धोकर, माता काली सिंहासन पर तांबे के प्लेट में स्थापित करें।

इसके बाद साधना का प्रथम चरण षोड़शोपचार पूजन आरम्भ करें।

## षोड़शोपचार पूजन आरम्भ

**नोट**—पूजन आरम्भ से पूर्व दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी उँगली में सोने, चांदी, तांबे या कुशा की बनी पवित्री धारण करें और पवित्री धारण करते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें—

### पवित्री धारण मंत्र

**ॐ पवित्रे स्थौ वैष्णब्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रशिमभिः। तस्यते पवित्रपते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेयम॥**

**नोट**—पवित्री धारण करने के बाद दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े और मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें।

## शरीर पवित्र करने का मंत्र

**ॐ अपिवत्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।**
**यः स्मरते पुण्डरी काक्षं स बाह्यभ्यंतरः शुचिः॥**
**ॐ पुण्डरी काक्षं पुनातु।।**

**हिन्दी अनुवाद**—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो "पुण्डरी काक्ष" का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अत: हे ॐ रूप पुण्डरी काक्ष हमें पवित्र करें।

**नोट**—अब दीपक की पूजा करें।

## *प्रज्जवलित दीप पूजन मंत्र*

**"ॐ ज्योतिषे नमः"**

उपरोक्त मंत्र मुख से बोलकर—दीपक के पास जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, नैवेद्य चढ़ावें। फिर उस दीप में भगवान भैरव रूप की भावना करते हुए हाथ जोड़कर यह श्लोक बोलें—

**"भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्वविघ्न कृत।**
**यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥"**

**हिन्दी अनुवाद**—"हे दीप ! आप श्री भैरव के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं। जब तक पूजन कर्म पूर्ण न हो जाये, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।"

**नोट**—अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा (टीक) बांधें—

## शिखा बन्धन मंत्र

**ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।**
**मानो वीरान रूद्र भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥**

**नोट**—अब "आचमन" करें। आचमन क्रिया में दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेवें और मंत्र पढ़कर वह जल अपने होंठ से लगाकर एक बूंद मुख में लें। आचमन का जल कंठ से नीचे नहीं उतरना चाहिए। यह क्रिया नीचे लिखित मंत्र द्वारा क्रमशः तीन बार करें।

## आचमन मंत्र

**ॐ केशावय नमः।**
**ॐ नाराणाय नमः।**
**ॐ माधवाय नमः।**

**तत्पश्चात्**—

**"ॐ हृषिकेषवाय नमः"**—मंत्र पढ़कर हाथ धो लें। इसके पश्चात् मस्तक पे त्रिपुण्ड चन्दन अथवा तिलक के समान लाल चन्दन निम्न मंत्र पढ़कर धारण करें।

## मस्तक चन्दन लेपन मंत्र

**ॐ चन्दनस्य—महत्वपुण्यं पवित्र पाप नाशनम्।**
**आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा॥**

**नोट**—अब वैदिक पुरोहित यजमान के हाथ में निम्न मंत्र पढ़कर मौली (रक्षा सूत्र) बांधें।

## रक्षा सूत्र बन्धन मंत्र

**ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम गरूड़ऽध्वजः।**
**मंगलम् पुण्डरी काक्षं मंगलायच तनो हरिः॥**

**नोट**—अब दोनों हाथ जोड़कर नीचे लिखित "विनियोग मंत्र" का जप करें अर्थात् पढ़े—

## विनियोग मंत्र

**अस्य श्री महाकाली मन्त्रस्य भैरव ऋृषिः, उष्णिक—**
**छन्दः, महाकाली देवता, ह्रीं बीजं हुं शक्ति, क्रीं कीलकं**
**मम अभिष्ठ सिद्धि यर्थे जपे बिनियोगः॥**

**नोट**—अब "न्यास" करें। न्यास कई प्रकार के होते हैं, किन्तु भैरव की साधना ऋृष्यादि न्यास, हृदयादि न्यास अंगन्यास, करन्यास मुख्य हैं। न्यास विधि में दाहिने हाथ की पांचों उँगलियों द्वारा अंगों का क्रमशः स्पर्श करने का विधान है।

सर्वप्रथम ऋृष्यादि न्यास सम्पन्न करें—

## ऋृष्यादि न्यास

"**ॐ भैरव ऋृषये नम शिरसि**"—दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से सिर का स्पर्श करें।

"**ॐ उष्णिक छन्दसे नमः मुखे**"—मुख स्पर्श करें।

"**ॐ महाभैरव देवतायै नमः हृदि**"—हृदय का स्पर्श करें।

"**ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये**"—मल निकाश मार्ग का स्पर्श करें।

"**ॐ शक्तये नमः पादयोः**"—दोनों घुटनों एवं पैर के दोनों पंजों को स्पर्श करें।

"**ॐ क्रीं कीलकाय नमः नाभौः**"—नाभिस्थल का स्पर्श करें।

"**ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे**"—इस क्रिया में दोनों हाथों की पाँचों उँगलियों से दोनों भुजाओं एवं समस्त बाकी अंगों का स्पर्श करें।

**नोट**—अब "करन्यास" क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखकर यह न्यास सम्पन्न किया जाता है। यह क्रिया दोनों हाथों की हथेलियों एवं उँगलियों से की जाती है।

## करन्यास मंत्र और विधि

"**ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः**"—मंत्र बोलकर तर्जनी को मोड़कर अंगूठे की जड़ से जहां मंगल का क्षेत्र है, वहां लगावें।

**"ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः"**—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे की नोक से तर्जनी के छोर का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रुं मध्यमाभ्यां नमः"**—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे से मध्यमा के अन्तिम भाग का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः"**—मंत्रोच्चारण करते हुए अनामिका का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः"**—मंत्रोच्चारण करते हुए कनिष्ठका उँगली के अंतिम भाग के साथ अंगूठे की नोक का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रः करतल पृष्टाभ्यां नमः"**—यह मंत्र पढ़कर दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरे के ऊपर नीचे दो बार घुमाईये।

**नोट**—अब "हृदय्रयादि न्यास" क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में बांया हाथ घुटनों पर रखे हुए दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से निम्नलिखत अंगों का स्पर्श करें—

## हृद्यादि न्यास मंत्र और विधि

**"ॐ क्रां हृदयाय नमः"**—दाएँ हाथ की पाँचों उँगलियों से हृदय का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा"**—मस्तक का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रुं शिखायै वषट्"**—शिखा स्थान का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रैं कवचाय हुम"**—दोनों हाथों से दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

**"ॐ क्रौं नेत्रयाय वौषट"**—सीधे हाथ से तीनों नेत्रों का स्पर्श करें। तीसरा नेत्र मस्तक के मध्य में माना जाता है।

**"ॐ क्रः फट् स्वाहा"**—बाएँ हाथ पर दाहिने हाथ का सीधा पंजा मारकर "फट्" की ध्वनि करें, अर्थात् एक ताली बजाएँ।

**नोट**—इसके पश्चात् पूजन कराने वाले आचार्य का वरण करें। इस क्रम में अपने दोनों हाथों पर वैदिक पंड़ित के लिए लाए गये वस्त्र, वस्त्र के ऊपर पान का पत्ता, सुपारी (5—5) यज्ञोपवीत तथा द्रव्य रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र समाप्ति के पश्चात् हाथ की वस्तुएँ आचार्य के हाथों में प्रदान करें।

## आचार्य वरण मंत्र

**ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक प्रवरान्वितः अमुक नाम शर्माऽहं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनी यशाखाध्या यितं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाकाली सिद्धि कर्मणि एमिः वरण वस्त्र द्रव्यैः आचार्य त्वेन त्वां अंह वृणे।**

**नोट**—वरण सामग्री लेते समय आचार्य को "वृतोस्मि" शब्द का उच्चारण करना चाहिए। अब साधक हाथ जोड़कर आचार्य की वन्दना करें।

## आचार्य प्रार्थना मंत्र

**आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः।**
**तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत॥**

**नोट**—अब आचार्य साधक द्वारा प्रदत्त नवीन वस्त्र धारण करें, तत्पश्चात् साधक गोल सुपारी में मौली लपेट कर, महाकाली सिंहासन के सामने केले के पत्ते पर रखें और उनपर भगवान गणेश के रूप का ध्यान कर पूजन करें। किसी भी उपासना या तांत्रिक सिद्धि साधना आरम्भ में सर्वप्रथम भगवान श्री गणेश की पूजा की जाती है, तभी साधक को उपासना या सिद्धि साधना में सफलता मिलती है।

## श्री गणेश पंचोपचार पूजन

### [ आवाहन मंत्र ]

**गदा बीज पूरे धनुः शूल चक्रे सरोजोत्पले पाशधान्या ग्रदंतान्।**
**करैः संदधानं स्वशुंडा ग्रराजन मणीकुंभ मंकाधि रूढं स्वपत्न्या॥**
**सरोजन्मा भूषणानाम्भ रेणोज्जचलं द्धस्तन्वया समालिंगिताम्।**
**करीद्रानन चंद्रचूड़ं त्रिनेत्र जगन्मोहनं रक्तकांतिं भजेत्तमम्॥**

**भावर्थ**—"अपने दाएँ हाथों में गदा, शूल, बीजपूर, चक्र, पद्म व बाएं हाथों में धनुष, कमल और पाश, धान्य मंजरी एवं दन्तधारी, मणि कलश से सुशोभित, सूंड के अग्र भाग वाले, अंक में अपनी पत्नी को बैठाए हुए तीन नेत्रों वाले, गजमुखी, चंद्रकला धारी, त्रैलोक्य को मोह लेने वाले, रक्तवर्णी कांति से शोभायमान भगवान गणपति मेरे पूजन स्थल में सिद्धि साधना में सफलता देने हेतु दयाकर पधारने की कृपा करें। मैं आपका ध्यान करता हूँ।"

**नोट**—अब मौली लिपटे सुपारी के ऊपर क्रमशः जल, अक्षत, मौली, चन्दन, बिल्वपत्र पुष्प और नैवेद्य से क्रमशः भगवान गणेश का पूजन करें।

**ॐ गंगाजले स्नानियम् समर्पयामि श्री गणेशाय नमः।**
**ॐ अक्षतम् समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः।**
**ॐ वस्त्रम समर्पयामि भगवान श्री गणपति नमः।**
**ॐ चन्दनम् समर्पयामि भगवन गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ।**
**ॐ बिल्वपत्रम समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः।**
**ॐ पुष्पम् समर्पयामि भगवन श्री गणेशाय नमः।**
**ॐ नैवेद्यं समर्पयामि भगवान गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ।**

**नोट**—अब दोनों हाथ जोड़कर भगवान श्री गणेश की आराधना करें।

## श्री गणेश अराधना मंत्र

**विश्वेश माधवं ढुन्ढि दण्डपाणि।**
**बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्॥**

**वक्रतुण्डं महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।**
**निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥**
**सुमश्वश्यैव दन्तस्य कपिलो गर्जकर्ण कः।**
**लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः॥**
**धूम्रकेतु गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रो गजाननः।**
**द्वादशैतानि नमामि च पठेच्छणु यादपि॥**
**विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।**
**संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।**
**शुक्लां वर धरं देवं शशि वर्ण चतुर्भुजम्।**
**प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोप शान्तये॥**
**अभित्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरासुरैः।**
**सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपते नमः॥**

**हिन्दी अनुवाद**—"हे विश्वनाथ, माधव दुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव। आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन—ये विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गोरे, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव, मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो विघ्न बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।"

**नोट**—साधकों! साधना में सफलता के लिए श्री गणेश पूजन के पश्चात् "**सिद्ध गुरू**" का पूजन करें। साधना काल के आरम्भ में यदि गुरूदेव स्वयं उपस्थित हों तो उन्हें पीले रंग का वस्त्र (धोती 1 जोड़ा, चादर—1, बनियान—कुर्ता—11, जनेऊ और द्रव्यादि) प्रदान कर, उन्हें कारण कराकर, उनके चरणों की पूजा करें। यदि गुरूदेव उपस्थित न हों तो उनके द्वारा प्रदत्त "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" तांबे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित कर, उन्हें गुरू स्वरूप समझकर पूजन करें। गुरू पूजन के बिना और श्री गणेश आराधना के बिना कोई भी साधक सिद्धि साधना में सफल हो ही नहीं सकता, अतः अवश्य ही गुरू पूजन करें।

इस पूजन के क्रम में सर्वप्रथम गुरू का "आवाहन" करें। गुरू यदि पूजन स्थल पर मौजूद हों तो गुरू में दिव्य शक्ति का आवाहन करें। यूं तो गुरू साधारण मानव दिखलाई पड़ते हैं, परन्तु जब गुरूदेव अपने आसन पर विराजमान होते हैं तो उनमें शक्ति का आवाहन होता है, तब वे साधारण इन्सान ही नहीं होते बल्कि उनमें ब्रह्मा,

विष्णु और महेश से भी बढ़कर शक्ति आ जाती है। यदि गुरू उपस्थित न हों तो "गुरू कवच यंत्र" में गुरू स्वरूप का आवाहन करें।

### श्री गुरूदेव आवाहन मंत्र

**सहस्त्रदल पद्मस्थ मंतरात्मा नमुज्जवलम्।**
**तस्योपरि नादविंदो र्मध्ये सिंहासनोज्जवले॥**
**चिंतयेन्निज गुरूं नित्यं रजता चल सन्निभम्।**
**वीरासन समासीनं मुद्रा भरण भूषितम॥**
**शुभ्रमाल्यां बरधरं वरदा भय पाणिनम्।**
**वामोरूशक्ति सहितं कारूण्येना वलंकितम्॥**
**प्रियया सब्यहस्त्तेन धृत चारू कलेवरम्।**
**वामेनोत्पल समायुक्तं स्मरेतन्नाम पूर्वकम्॥**

**भावार्थ**—हजार दल (पंखुड़ियों) युक्त कमल के बीच में ज्योतिस्वरूपा अंतरात्मा का निवास है। उसके ऊपरी भाग पर नाद व बिंदु के मध्य में उज्जवल सिंहासन पर श्री गुरू विराजमान हैं। चांदी के पर्वत समशुभ्र निजगुरू का सदैव स्मरण करता हूँ। हे गुरू देव ! आप सदैव वीरासन मुद्रा में स्थित रहते हैं। आप मुद्रा भरणादि से विभूषित हैं। आप श्वेत माला धारण करते हैं और वस्त्र भी श्वेत हैं। आपके हाथ वर और अभय मुद्रा में उठे हैं। वाम उरू (बांईं जांघ) पर शक्ति है तथा आप करूणापूरित नेत्रों से देख रहे हैं। लाल वस्त्रों से सुशोभित व हाथ में कमल लिये प्रिया (लक्ष्मी) अपने दांए हाथ से कलेश्वर धारण किए हैं व लाल वस्त्रों से सुशोभित व ज्ञान शक्ति से आप सुशोभित हैं। ऐसे गुरूदेव का मैं आवाहन करता हूँ।

**नोट**—इसके पश्चात्—सिद्ध गुरू कवच यंत्र पर जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, नैवेद्य आदि से पूजन करें। यह "पंचोपचार पूजन" उसी प्रकार करें, जिस प्रकार "गणेश पूजन" में पंचोपचार पूजन सम्पन्न किए हैं। पूजन में श्री गणेशाय: नमः के बदले "श्री गुरूवे नमः" बोले। इसके पश्चात् गुरू देव का ध्यान करें।

### श्री गुरूदेव ध्यान मंत्र

**गुरूः ब्रह्मा गुरूः विष्णुः गुरू र्देवो महेश्वरः।**
**गुरूः साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥**
**ध्यानमूलं गुरोः मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।**
**मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा।**
**न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः।**
**गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्सम्पूज्यते गुरूः॥**
**नमामि सद्गुरूं शान्तं प्रत्तक्षं शिवं रूपणिम्।**
**शिरसा यज्ञपीठस्थं तस्मै श्री गुरूवे नमः॥**
**त्वं पिता त्वं च मे माता त्वं बन्धु त्वं च देवता।**
**त्वं मोक्ष प्राप्ति हेतुश्च तस्मै श्री गुरवे नमः॥**

## पृथ्वी शुद्धि मंत्र

**ॐ अपर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।**
**ये भूता विघ्नकर्ता रश्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।**

**नोट**-अब पूजन का "संकल्प" करें-

इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली पर पान, सुपारी द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें। संकल्प मंत्र के मध्य जहां-जहां भी "अमुक" शब्द का उच्चारण किया गया है, वहां क्रमशः मास, तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, निवास स्थान आदि उच्चारण करें।

## श्री भैरव पूजन "संकल्प" मंत्र

**ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु श्री मद् भगवतो महा पुरूषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत-मनवन्तरे अष्टांविशा तितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू द्विपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे "अमुक" नगरे, अमुक ग्रामे, अमुक स्थाने वा वोद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक तौ महामांगल्य प्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रै अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति, धन, जन, सुख सम्पदा प्रसन्नता परिवार सुख शान्ति, ग्राम सुख शान्ति हेतु, सफलता हेतु श्री भैरव पूजन-कलश स्थापन-हवन-कर्म-आरती कर्म अहम् करिष्येत।**

**नोट**-हथेली की वस्तुएं माता जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें। अब आप "स्वस्ति वाचन" के ग्यारह मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर-दो चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें जब तक सम्पूर्ण (ग्यारह) मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

## "स्वस्ति वाचनम" के पांच मंत्र

### (पहला मंत्र)

**ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो पद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।**
**स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दघातु।।**

**हिन्दी अनुवाद**-अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें। (यं० वे० २५/१९/ से प्राप्त)

**( दूसरा मंत्र )**

**पचः पृथिव्यां पचः ओषधिषु पयो दिव्यन्त।**

**रिक्षे पयोधाः पश्यवति प्रदिशाः सन्तु मह्यम।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे अग्ने तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करो, स्वर्ग में और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा-प्रदिशा सभी रस देने वाले हो। **( य० वे० १८/३९ )**

**( तीसरा मंत्र )**

**ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः विश्व देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः स्र्वग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिः शान्ति रेधि।। सुशान्ति-र्भवतु।।**

**हिन्दी अनुवाद**-स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल औषधि, वनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्म रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है, वह भी मेरे लिए शान्ति देने वाली हो। **( य० बे० ३६/१७ )**

**( चौथा मंत्र )**

**इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभरामहे मतीः।**

**यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन नातुरम।।**

**हिन्दी अनुवाद**-पुत्रादि मनुष्यों और गादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हूं। **( य० बे० १६/४८ )**

**( पांचवां मंत्र )**

**ॐ गणानात्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रिया नांत्वा प्रियपति ग्वंहवामहे निधिनांत्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो नम।**

**आहम जानि गर्भध मात्व मजासि गर्भधम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे गणपति ! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते ! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होओ। मैं गर्भधारण जंल को सब प्रकार से आकर्षित करता हूँ, तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो। **( य० ब० २३/१९ )**

**नोट**-उपासकों ! इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपति पूजन के बाद भगवान विष्णु एवं पंच देवता की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर भगवान विष्णु एवं पंचदेवता की पूजा करें। इस क्रम में

**सर्वप्रथम** दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद **जल** पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी दल, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

## भगवान विष्णु एवं पंचदेवता का पूजन

गंगा जल से-

**ॐ गंगाजले स्नानियम् भगवते श्री विष्णवे नमः।**

अक्षत से-

**इदम् अक्षदम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।**

तिल से-

**एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।**

चन्दन से-

**इदम् चन्दनम लेपनम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः**

बिल्वपत्र से-

**इदम बिल्व पत्राणियम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः**

पुष्प से-

**इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।**

नैवेद्य से-

**इदम नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।**

पुनः गंगाजल से-

**एतानि गंध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णोव नमः।**

**नोट**-उपरोक्त विधि और मंत्र से ही ''पंचदेवता'' का पूजन उसी स्थान पर करें। पूजन के अन्तर्गत जहां ''विष्णवे नमः'' शब्द कहा गया है उस स्थान पर ''पंचदेवता नमः'' शब्द उच्चारण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् माता काली जी के ''कलश'' की स्थापना करें।

## भगवान भैरव कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

**नोट**-सर्वप्रथम सतंरगे गुलाल से अष्टदल कमल पूजा स्थल पर भगवान भैरव

सिंहासन के आगे बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनावें। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें–

## कलश भूमि स्पर्श मंत्र

**ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य भुवनश्य धर्त्री पृथिवीं दुखहिं पृथिवीं मां हिसी।**

**नोट**–इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़े–

**ॐ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भ सर्जनी स्थां वरूणस्य ऋतसदन्यसि वरूणस्य ऋतसदनमीस वरूणस्य ऋतसदनमासीद्।**

**नोट**–अब कलश में सर्वोसधि डालें।

## कलश सर्वोसधि समर्पण मंत्र

**ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्वियुगम्पुरा।**
**मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च।।**

**नोट**–कलश में दुर्वा डालें।

## कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

**ॐ काण्डात–काण्डात प्ररोहन्ति पुरुषः परूषस्परि।**
**एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।**

**नोट**–कलश में पुंगीफल (सुपारी) डालें–

## कलश पुंगीफल समर्पण मंत्र

**ॐ या फलिनीयां अफलां अपुष्पा यास्य पुविषणीः।**
**बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चनत्वग्वं हसः।।**

**नोट**–अब कलश में पंचतत्न डालें–

## कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

**ॐ परिवाज पतिः कविरग्नि हव्यान्य क्रमी दधद्रत्नानि दाशुषे।**

अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें–

## कलश द्रव्य समर्पण मंत्र

**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्ततार्गे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
**स दाधार पृथिवीद्या मुतोमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

अब कलश में आम का पल्लव डालें–

## आम्र पल्लव समर्पण मंत्र

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्यद्।
किंजिद वासिनं कलशं दद्यात।।

**नोट**–अब कलश पर पानी वाला नारियल रखें–

## कलश श्री फल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्या बहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्याप्तम। इष्यान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प ईषाण।।

**नोट**–कलश में लाल वस्त्र एवं मौली लपेटें।

## कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः।।

**नोट**–अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें।

## कलश में गाय का गोबर स्पर्श मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दिवृविषः सदमित्वा हवामहे इति गोमयेन कलश स्पर्शयेत।

**नोट**–अब हाथ जोड़कर वरुण देव का आवाहन करें–

## श्री वरूण देव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः।
अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषग्वं आयुः प्रमोषि।।
ॐ भुर्भूवः स्वः भो वरूण इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

**नोट**–इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का कलश पे आवाहन करें–

## सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का आवाहन

ॐ सर्वे समुद्रा सरितसंतिर्थानी जलदाः नदाः आयान्तु देविः पूजार्थ दुरितक्ष्कारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।।

## कलश प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

**नोट**–निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छिड़कें–

ॐ मनोजूतिर्जुषताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञामिवं तनोत्व रिष्टं यज्ञ सीममं दधातु। विश्व देवास इह महाकाली महाकाल सर्व देव सवेदेवि मादयन्तामे इह प्रतिष्ठ।

**नोट**–अब कलश पर वरूण देव, नवग्रह, इष्टदेव लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा, राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, राधा–कृष्ण, ग्राम देवता, कुदेवता, भगवान शिव, गौरी,

आदि समस्त देवि-देवताओं की पूजा इस प्रकार करें जैसे पीछे भगवान विष्णु का पूजन किए हैं। तत्पश्चात् माता काली का आवाहन करें।

### भगवान भैरव आवाहन मंत्र

**आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि।**
**पूजां गृहाण सुमुखि नमस्त शंकर प्रिये।।**

**नोट**-सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोच्चारण करें-

### श्री भैरव आसन समर्पण मंत्र

**ॐ विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम्।**
**स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीष्व महाभैरव पूजितः।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवान भैरव ! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं, तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

**नोट**-अब हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े, मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

### पाद्य जल समर्पण मंत्र

**ॐ सर्वतीर्थ समूद भूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम।**
**अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेदं भगवति भक्त वत्सला।।**
**ॐ श्री भैरव नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभु ! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चन्दन) आदि से मिश्रित पाद्य जल, पैर पखारने हेतु ग्रहण करे।

**नोट**-पुनः अरघी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

### श्री भैरव को अर्घ्य समर्पण मंत्र

**ॐ श्री मातेश्वरी दक्षिणा कालिकाय नमस्तेस्तु गृहाण करूणाकारी।**
**अर्घ्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षतै-युतम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-भगवान ! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें।

**नोट**-अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरघी से तीन बार जल सिंहासन पर छोड़ें।

### श्री भैरव को आचमन कराने का मंत्र

**मातेश्वरी दक्षिणा कालिका नमस्तुभ्यं त्रिदेशेरेभिवन्ति।**
**गंगोदकेन देवेशि कुरुष्वा चमनं भगवतिः।।**
**श्री भैरव नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे शिव महाशक्ति भगवान भैरव! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

**नोट**-इसके पश्चात् अरघी में दूध भरकर माता काली की प्रतिमा को स्नान करावें।

## भगवान भैरव को दूध से स्नान कराने का मंत्र

**भगवति कामधेनु समुदभूतं सर्वेषां जीवन परम्।**
**पावनं यज्ञाहेतुश्य पयः स्नानार्थं समर्पितम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवन् ! कामधेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवनदायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान हेतु समर्पित है।

**नोट**-अब अरघी में दही लेकर माता काली को स्नान करायें।

## दधि स्नान मंत्र

**शिवा भवानी पयस्तु समुदभुतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।**
**दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-दयानिधे! यह दूध से निर्मित खट्टा-मीठा चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

**नोट**-इसके पश्चात् अरघी में गाय का घी लेकर भैरव जी को स्नान कराईये।

## भैरव जी को घृत से स्नान कराने का मंत्र

**भो भगवन् नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्।**
**धृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभु ! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत आपको अर्पित करता हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

**नोट**-अब अरघी में शहद भरकर भैरव जी को स्नान करावें।

## भैरव जी को शहद से स्नान कराने का मंत्र

**भो भगवन पुष्प रेणु समुद भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।**
**तेज पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभु ! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

**नोट**-इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से भैरव जी को स्नान करावें।

## शर्करा रस से स्नान कराने का मंत्र

**मुण्डमालिनी मातेश्वरी इक्षुसार समुद भुतं शर्करा पुष्टिवा शुभा।**
**मलाप हारिका दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-भगवन् ! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा रस आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

**नोट**-अब माता काली की प्रतिमा को पुनः गंगा जल से स्नान करावें।

### शुद्धोदक स्नान मंत्र

**गंगा च यमुनाचैव गोदावरी सरस्वती।**

**नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे दयामयी अम्बे ! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान हैं। शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

**नोट**-अब भैरव जी के ऊपर सुगन्धित इत्र छिड़कें।

### भैरव सुवासित स्नान मंत्र

**चम्पा काशोक सकुल मालती मोगरादिर्भिः।**

**वासित स्निग्धता हेतु तैल चारू प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भैरव जी ! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

### भगवान भैरव को वस्त्र समर्पण मंत्र

**भो भक्तप्रिया मातुः शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम देव लंकारणं वस्त्रभतः शान्ति प्रयच्छ मे।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभु! यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है। यह सर्दी गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

**नोट**-अब प्रतिमा के मस्तक में चन्दन लगावें।

### चन्दन समर्पण मंत्र

**श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।**

**विलेपन दक्षिणा कालीः चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-भगवन्! यह दिव्य श्री खण्ड रक्त चन्दन सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

**नोट**-अब भैरव जी के ऊपर अक्षत छिड़कें।

### भैरव जी को अक्षत समर्पण मंत्र

**अक्षतास्य भगवतिः कंकु भाक्त सुशोभिताः।**

**मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे परमेश्वर ! ये कुंकुम (लाल गुलाल) में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

**नोट**-अब भैरव जी को बिल्वपत्र एवं पुष्प चढ़ाइये।

### बिल्वपत्र एवं पुष्प समर्पण मंत्र

**बन्दारूज नाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।**
**मन्दार जानि रक्त पुष्पाणि स्वेताकार्दीन्मुपेहि भो।।**

**हिन्दी अनुवाद**-वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्प वृक्ष के समान कामना पूरक है। हे मन्दार प्रिये भगवन्! मन्दार तथा लाल पुष्प आप कृपया ग्रहण करें।

### भैरव जी को पुष्प माला अर्पण मंत्र

**भगवतिः माल्यादीनि सुगन्धिनि माल्यादीनि वै देविः।**
**मयाहृतानि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवन् ! लाल पुष्प मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूँ, आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

### भगवान भैरव जी को सिन्दूर समर्पण मंत्र

**सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।**
**शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रति गृह यन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भैरव जी ! सुन्दर लाल, सौभाग्य सूचक, सुखवर्द्धन, शुभद, तथा काम पूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

**नोट**-इसके पश्चात् माता जी के चरणों में लाल गुलाल समर्पित करें।

### लाल गुलाल अर्पण मंत्र

**नाना परिमले र्दव्यौ निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।**
**गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाढ्यं चारू प्रति गृह यन्ताम।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे प्रभु ! तरह-तरह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

**नोट**-अब माता काली को सुगन्धित धूप या अगरबत्ती दिखायें।

### सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

**वनस्पति, रसोद, भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।**
**आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोढ्यं प्रतिगृह यन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे दयानिधे ! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित उत्तम गन्ध रूप और समस्त देवि-देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

**नोट**-अब भैरव जी को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

## भैरव जी का दीप दर्शन मंत्र

**साज्यं य वर्तिसंयुक्त वहिनां योजितं मया।**
**दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।**
**भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवि महेश्वरी।**
**त्राहि मां निरयाद् घोरा हो पञ्चोतिर्न भोस्तुतते।।**

**हिन्दी अनुवाद**–हे प्रभु ! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी माता श्री दक्षिणा काली को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देवि! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

**नोट**–इसके पश्चात् विभिन्न प्रकार की मिठाईयां व नाना प्रकार के फल नैवेद्य समर्पित करें।

## नैवेद्य समर्पण करने का मंत्र

**नैवेद्य गृह यन्ताम देविः भक्ति में ह्वाचलं कुरू।**
**ईप्सित में वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।**
**शर्करा खण्ड खाद्यानि दीव्यक्षीर घृताणि च।**
**आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रति गृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**–हे भैरव जी! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गये खाद्य पदार्थ दही, दूध, घी, एवं भक्ष्य भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिए।

**नोट**–अब सिंहासन पर पान बीड़ा चढ़ावें।

## पान बीड़ा समर्पण मंत्र

**ॐ पूंगीफल महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।**
**एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयन्ताम्।।**

**हिन्दी अनुवाद**–हे दया सिन्धु भगवन् ! महान दिव्य पूंगीफल, इलायची, और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

**नोट**–इसके पश्चात् भैरव जी को नारियल फल सिंहासन पर भेंट करें।

## नारियल फल अर्पण मंत्र

**इदं फलं मया भगवति स्थापित पुरतस्तव।**
**तेन मे सफलावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।**

**हिन्दी अनुवाद**–हे भगवन् ! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म-जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें।

**नोट**–इसके बाद द्रव्य आदि दक्षिणा सिंहासन पर समर्पित करें।

## भैरव जी को दक्षिणा अर्पण मंत्र

**हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेम बीजं विभावसोः।**

**अनंत पुण्यं फल दमतः शान्ति प्रयच्छमे।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे दयालु प्रभु ! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वरि! यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

**नोट**-इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् माता की पुष्पांजलि समर्पित खड़े होकर करें।

## पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

**नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद् भवा च।**

**पुष्पांजलि मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरः।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे परमेश्वर ! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह-तरह के सुगन्धित पुष्प मैं पुष्पांजलि के रूप में अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

**नोट**-अब हाथ जोड़कर खड़े होकर भगवान भैरव जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम-घूम कर पांच बार "प्रदक्षिणा" करें और निम्नलिखित मंत्र उच्चारण करते रहें।

## प्रदक्षिणा मंत्र

**यानि कानि च पापानि च ज्ञाताज्ञात कृताणि च।**

**तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे कृपालु भगवन् ! मनुष्यों से जाने-अनजाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद-पद पर नष्ट हो जाते हैं।

**नोट**-इसके पश्चात् गड़वी में जल भरकर बूंद-बूंद सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

## भैरव जी को विशेष अर्घ्य अर्पण मंत्र

**रक्ष रक्ष भक्तवत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिकाः।**

**भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्णवात्।।**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भगवन् ! रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाले और भव सागर से उनकी रक्षा करने वाले हैं।

**नोट**-भगवान भैरव जी के षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न होने के बाद साधक उनके 108 नामों का पाठ करें।

## भगवान भैरव के 108 नामों की माला

1. ॐ भैरवाय नमः
2. ॐ भूतनाथाय नमः
3. ॐ भूतात्मने नमः
4. ॐ भूतभावनाय नमः
5. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
6. ॐ क्षेत्रपालाय नमः
7. ॐ क्षेत्रदाय नमः
8. ॐ क्षत्रियाय नमः
9. ॐ विराजे नमः
10. ॐ श्मशानवासिने नमः
11. ॐ मांसाशिने नमः
12. ॐ खर्वराशिने नमः
13. ॐ स्मरांतकाय नमः
14. ॐ रक्तपाय नमः
15. ॐ पानयाय नमः
16. ॐ सिद्धाय नमः
17. ॐ सिद्धिदाय नमः
18. ॐ सिद्धिसेविताय नमः
19. ॐ कंकालाय नमः
20. ॐ कालशमनाय नमः
21. ॐ कलाकाष्टाय नमः
22. ॐ तनये नमः
23. ॐ कवियें नमः
24. ॐ त्रिनेत्राय नमः
25. ॐ बहुनेत्राय नमः
26. ॐ पिंगललोचनाय नमः
27. ॐ शूलपाणये नमः
28. ॐ खड्गपाणये नमः
29. ॐ कपालिने नमः
30. ॐ धूम्रलोचनाय नमः
31. ॐ अभीरवे नमः
32. ॐ भैरवीनाथाय नमः
33. ॐ भूतपाय नमः
34. ॐ योगिनीपतये नमः
35. ॐ धनदाय नमः
36. ॐ धनहारिणे नमः
37. ॐ धनवते नमः
38. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
39. ॐ नागहाराय नमः
40. ॐ नागपाशाय नमः
41. ॐ व्योमकेशाय नमः
42. ॐ कपालभूते नमः
43. ॐ कालाय नमः
44. ॐ कपालमालिने नमः
45. ॐ कमनीयाय नमः
46. ॐ कलानिधये नमः
47. ॐ त्रिलोचनाय नमः
48. ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः
49. ॐ त्रिशिखने नमः
50. ॐ त्रिलोकषाय नमः
51. ॐ त्रिनेत्रपाताय नमः
52. ॐ डिंभाय नमः
53. ॐ शान्ताय नमः
54. ॐ शान्तजनप्रियाय नमः
55. ॐ बटुकाय नमः
56. ॐ बटुवेशाय नमः
57. ॐ खट्वांगधारकाय नमः
58. ॐ भूताध्यक्षाय नमः
59. ॐ पशुपतये नमः
60. ॐ भिक्षुकाय नमः
61. ॐ परिचारकाय नमः
62. ॐ धूर्ताय नमः

63. ॐ दिगम्बराय नमः
64. ॐ शूराय नमः
65. ॐ हरिणे नमः
66. ॐ पांडुलोचनाय नमः
67. ॐ प्रशांताय नमः
68. ॐ शांतिदाय नमः
69. ॐ सिद्धाय नमः
70. ॐ शंकरप्रियबांधवाय नमः
71. ॐ अष्टमूर्तय नमः
72. ॐ निधीशाय नमः
73. ॐ ज्ञानचक्षुये नमः
74. ॐ तपोमदाय नमः
75. ॐ अष्टधाराय नमः
76. ॐ षडाधाराय नमः
77. ॐ सर्पयुक्ताय नमः
78. ॐ शिखिसखाय नमः
79. ॐ भूधराय नमः
80. ॐ भूधराधीशाय नमः
81. ॐ भूपतये नमः
82. ॐ भूधरात्मज्ञाय नमः
83. ॐ कंकालधारिणे नमः
84. ॐ मुंडिन नमः
85. ॐ नागयज्ञोपवीतवते नमः
86. ॐ जृम्भणाय नमः
87. ॐ मोहनाय नमः
88. ॐ स्तंभिने नमः
89. ॐ मरणाय नमः
90. ॐ क्षोभणाय नमः
91. ॐ शुद्धनीलांजनप्रख्याय नमः
92. ॐ दैत्यघ्ने नमः
93. ॐ मुंडभूषिताय नमः
94. ॐ बलिभुजे नमः
95. ॐ बालिभुङ्नाथाय नमः
96. ॐ बालाय नमः
97. ॐ बालपराक्रमाय नमः
98. ॐ सर्वापत्तारणाय नमः
99. ॐ दुर्गाय नमः
100. ॐ दुष्ट भूतनिषेविताय नमः
101. ॐ कामिने नमः
102. ॐ कलानिधये नमः
103. ॐ कांताय नमः
104. ॐ कामिनीवश कृद्वशिने नमः
105. ॐ सर्वसिद्धि प्रदाय नमः
106. ॐ वैद्याय नमः
107. ॐ प्रभावे नमः
108. ॐ नमः विष्णवे नमः

**नोट**-भगवान भैरव की साधना करने वाले साधकों! भगवान भैरव के किसी भी स्वरूप की साधना में उपरोक्त षोड़शोपचार पूजन करना अत्यन्त जरूरी है। षोड़शोपचार पूजन एवं 108 नामों की जपमाला पूर्ण होने के पश्चात् साधक रूद्राक्ष की 108 दाने वाली माला से एक माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें-

**महा भैरव साधना मंत्र**-नमो काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे। आन बानौं वान बानौं चलते फिरते का औसान बान्हों। दशो दिशा बान्हों नौ नाड़ी बहत्तर कोण बान्हों। फूल में जाय फूल में भेजूं। काठे जी, पड़े थर थर काँपे हल हल हिले, गिर गिर पड़े, उठ उठ भगे, बक बक बके, मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन, सवा मास, सवा बरस का बाबला न करे तो काली माता की शय्या पर पाँव धरे। वचन जो चूके तो समुद्र सूखे, वाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नाद कुण्ड में पड़े। मेरा भेजा बाबला न करे तो रूद्र के नेत्र से ज्वाला

कढ़े। सिर की जटा टूट भूमि पर गिरे। माता पार्वती के चीर पर चोट पड़े। बिना हुक्म नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

नोट! उपासकों! एक माला मंत्र जप समाप्त होने के बाद भगवान भैरव की आरती करें। [कांशे या तांबे की थाली में पान का पत्ता रखकर, उस पर कपूर की ढेली जलाकर आरती उतारने की क्रिया करें।] आरती के पश्चात् भगवान भैरव को नमस्कार कर, आसन से उठ जावें।

ध्यान रहे यह साधना सम्पन्न करने हेतु 41 वाला मंत्र जप सम्पन्न करने होते हैं जो 41 दिन में पूर्ण होता है।

भगवान भैरव का आसन पहले दिन का लगा हुआ 41 दिन तक रहेगा। परन्तु दूसरे दिन से रात्रि के समय जप करें। रात्रि 11 बजे जप आरम्भ करें। दूसरी रात्रि से सम्पूर्ण षोड़शोपचार पूजन करने की आवश्यकता नहीं है। स्नान से पवित्र होकर काले वस्त्र धारण कर सिंहासन के सामने काले कम्बल के आसन पर बैठ जावें। सुगन्धित अगरबत्ती व देशी घी का दीपक जगावें अथवा तिल तेल का दीपक जगावें। पंचोपचार पूजन जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प व नैवेद्य से करके जप आरम्भ कर दें।

अन्तिम रात्रि में जप सम्पन्न होने के बाद उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए एक माला हवन [हवन सामग्री द्वारा] सम्पन्न करें। हवन के बाद आरती करें। आरती करते हुए इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखे गये आरती गान गावें।

साधकों! उपरोक्त साधना यदि विधिपूर्वक, मनोयोग पूर्वक सम्पन्न की जाये तो भगवान भैरव के दर्शन भी हो जाते हैं। यह मेरा अपना निजी अनुभव है। ध्यान रहे कि भगवान भैरव दर्शन देते समय भयानक रूप में प्रकट होते हैं, आप उनसे डरे नहीं, क्योंकि डरने से हानि हो सकती है। सावधान रहकर स्वागत में लाल पुष्पों की माला उनके गले में डाल दें और भोग में लड्डू समर्पित कर दें।

इसके पश्चात् भगवान भैरव साधक पर प्रसन्न होकर इच्छित फल प्रदान करते हैं। परन्तु यह साधना गुरू आज्ञा के बिना नहीं करे, वरना जीवन लीला समाप्त भी हो सकती है।

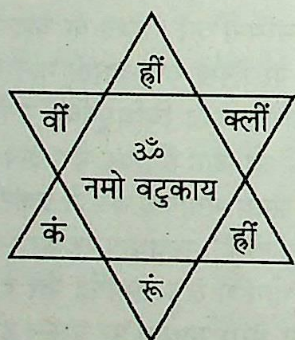
## सर्व कामना-प्रद श्री बटुक भैरव साधना धन, नौकरी, पदोन्नति, विवाह, व्यापार आदि समस्त कार्यों में सफलता हेतु

साधकों! भैरव नाथ के वैसे तो अनेक रूप हैं, किन्तु तन्त्र साधना में "बटुक भैरव" का सर्वाधिक महत्व है। तंत्र शास्त्र के आचार्यों ने प्रत्येक उपासना कर्म की सिद्धि के लिए किए जाने वाले जप और पाठ आदि कर्मों के आरम्भ में "भैरव नाथ"

का आदेश प्राप्त करने का अर्थात् उनका अनिवार्य रूप से पूजन करने का प्रावधान बतलाया है। हमारी समस्त साधनाएँ परस्पर एक दूसरे से घुली-मिली हुई हैं, किन्तु वेदान्त के पञ्चीकरण की भांति जब जिसकी जिसमें अधिकता होती है, वह उसकी साधना कहलाती है। जैसे मंत्र की प्रधानता रहने पर "मन्त्र साधना" और तंत्र की प्रधानता रहने पर "तन्त्र साधना" किन्तु उसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि जब तंत्र की साधना की जाये तो उसमें मंत्र अथवा यंत्र का समावेश न हो।

भगवान बटुक भैरव की साधना शुभ मुहुर्त्त के किसी भी शनिवार को आरम्भ कर सकते हैं। रात्रि के ग्यारह बजे स्नान से पवित्र होकर नवीन बिना सिले हुए काला वस्त्र धारण कर लें। घर में ही एकान्त कमरे में दक्षिण दिशा की ओर आम लकड़ी से बना काले रंग का सिंहासन स्थापित करें, उस पर काले रंग का वस्त्र आसन बिछाकर भगवान भैरव की मूर्ति या तस्वीर रखें। धूप-दीप जगाकर पीछे पृष्ठों में लिखित "महाभैरव साधना" की भांति ही - "षोड़शोपचार पूजन" सम्पन्न करें। धूप-दीप जगाने के बाद पहले यंत्र निर्माण करें। गुरू से प्राप्त किया हुआ "सिद्ध गुरू कवच यंत्र" सिंहासन पर तांबे के प्लेट में भगवान भैरव की तस्वीर के आगे रख दें।

यंत्र का निर्माण भोजपत्र पर रक्त चन्दन की स्याही व अनार की कलम से करें।




निर्मित यंत्र को गुरू कवच यंत्र वाले प्लेट में रखकर ही षोड़शोपचार पूजन आरम्भ करें। श्री बटुक भैरव षोड़शोपचार पूजन के अन्तर्गत निम्न मंत्रों द्वारा विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, षडङ्गन्यास, मंत्रन्यास, ध्यान, माला प्रार्थना, एवं जप मंत्र सम्पन्न करें। यह साधना सम्पन्न करने में एक लाख एकयावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करना होता है। मंत्र जप अन्तिम दिन सम्पन्न होने के बाद 21 माला हवन करें। यह साधना 62 दिनों में सम्पन्न होती है। मंत्र जप के बाद रोज ही आरती किया करे।

## अथ विनियोग

**ॐ अस्य श्रीआपदुद्धारण-बटुकभैरवमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबटुकभैरवो देवता ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः भैरवः कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थ श्रीबटुकभैरवप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।**

इतना बोलकर आचमनी से जल छोड़ दें।

## अथ ऋष्यादिन्यास

(न्यास में तत्त्वमुद्रा द्वारा अङ्गों का स्पर्श किया जाता है।)

| | | |
|---|---|---|
| बृहदारण्यकऋषये नमः | शिरसि | (मस्तक का स्पर्श करें) |
| त्रिष्टुप्छन्दसे नमः | मुखे | (मुख का स्पर्श करें) |
| श्रीबटुकभैरवदेवतायै नमः | हृदये | (हृदय का स्पर्श करे) |
| ह्रीं बीजाय नमः | गुह्ये | (कटिभाग का स्पर्श करें) |
| स्वाहा शक्तये नमः | पादयोः | (दोनों पैरों का स्पर्श करे) |
| भैरवकीलकाय नमः | नाभौ | (नाभि का स्पर्श करे) |
| विनियोगाय नमः | सर्वाङ्गे | (सिर से पैर तक के स्पर्श करे) |

## अथ करन्यासः

| | |
|---|---|
| ॐ ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। | (दोनों तर्जनियों के अग्रभाग से अंगूठों के मूल के अग्रभाग तक का स्पर्श करे) |
| ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः। | (दोनों अंगूठों के अग्रभाग से तर्जनियों के मूल के अग्रभाग तक का स्पर्श करे) |
| ॐ ह्रू वूं मध्यमाभ्यां नमः। | (पूर्ववत् मध्यमा का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्या नमः। | (पूर्ववत् अनामिका का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। | (पूर्ववत् कनिष्ठिका का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रः वः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः। | (दोनों हाथों की अंगुलियों से हथेली के पिछले भाग का स्पर्श करें।) |

## अथ षडङ्गन्यास

| | |
|---|---|
| ॐ ह्राँ वां हृदयाय नमः। | (हृदय का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। | (मस्तक का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रं यूं शिखायै षषट्। | (शिखा का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रैं वैं कब्रचाय हूं। | (भुजाओं का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय षौषट्। | (दोनों नेत्र एवं उनके मध्यभाग का स्पर्श करें) |
| ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट्। | (तर्जनी और मध्यमा से ताली बजाये।) |

## अथ मन्त्रन्यास : ( करन्यास एवं षडङ्गन्यास )

| | |
|---|---|
| ॐ ह्रां ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। | (हृदयाय नमः) |
| ॐ ह्रीं बटुकाय तर्जनीभ्यां नमः। | (शिरसे स्वाहा) |

ॐ ह्रूं आपदुद्धारणाय मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्)
ॐ ह्रैं कुरु कुरु अनामिकाभ्या नमः। (कवचाय हुम्)
ॐ ह्रौं बटुकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (नेत्रत्रयाय वौषट्)
ॐ ह्रः ह्रीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्राय फट्)

## अथ ध्यानम्

**करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि**
**स्तुरुणतिमिरवर्णो व्यालयज्ञोवीती।**
**ऋतुसमयसपर्याविघ्न-विच्छित्तिहेतु-**
**जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥**

इस प्रकार न्यास एवं ध्यान करके पहले बताये अनुसार मानसोपचारपूजा करें तथा माला लेकर उसकी गन्धाक्षत से पूजा करके प्रार्थना करे-

## अथ माला प्रार्थना

**महामाले महामाये। सर्वशक्तिस्वरूपिणि।**
**चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।**
**अविघ्नं कुरु माले। त्वं गृह् णामि दक्षिणे करे।**
**जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥**

## जप-मन्त्रः

**ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।**

(यथाशक्ति जप करके अन्त में प्रार्थना करें)

**त्वं माले। सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।**
**शिवं कुरुष्व मे भद्रे। यशोवीर्यञ्च देहि मे॥**

इसके पश्चात् जप श्री भैरवार्पण करे-

**अनेन श्रीबटुकभैरवमन्त्रजपाख्येन कर्मणा श्रीबटुकभैरवः प्रीयताम्॥**

**नोट**-इस साधना में निम्न मंत्रों द्वारा हवन में आहुतियाँ डालें-

## हवन मंत्र

**ॐ प्रजापत्ये स्वाहा, इदं प्रजापतये।**
**ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम इन्द्राय इत्यायाघारो।**
**ॐ अगन्ये स्वाहा, इदमगन्ये।**
**ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ।**
**ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे।**
**ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय।**
**ॐ मंगलाय नमः, इदम् मंगलाय स्वाहा।**

ॐ बुधाय नमः स्वाहा, इदं बुधाय।

ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा, इदं बृहस्पतये।

ॐ शुक्राय नमः स्वाहा, इदं शुक्राय।

ॐ शनये नमः स्वाहा, इदं शनये।

ॐ राहवे नमः स्वाहा, इदं राहवे।

ॐ केतवे नमः स्वाहा, इदं केतवे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्यो मुक्षीय मामृतात्। स्वाहा।।

ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् स्वाहा।

ॐ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वाथे साधिके। शरणये त्र्यम्बके गौरी नारायण नमोऽस्तुते स्वाहा।

ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम गरूड़ध्वज् मंगलम् पुण्डरी काक्ष मंगलाय तनो हरिः स्वाहा।

ॐ "क्रीं" नमः स्वाहा।

ॐ "ह्रीं" नमः स्वाहा।

ॐ हौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।

"ॐ क्रीं नमः स्वाहा"-मंत्र का कमसे कम ( 1100 ) ग्यारह सौ आहुतियां डालें।

**नोट**-उपासकों ! हवन के बाद "मूर्द्धान" करें।

## मूर्द्धान मंत्र

**नोट**-इस क्रम में पान, सुपारी, सूखे खड़कते नारियल और बची हुई हवन सामग्री, गुड़ द्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र उच्चारण कर हवन कुंड में डालें।

### मंत्र

**ॐ मूर्द्धान दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानर मृत मजात् मग्नि कविग्वं सम्भ्राजम तिथि जनानाम सन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।।**

## अग्नि प्रार्थना मंत्र

हाथ जोड़कर-

**ॐ श्रद्धां मेघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं बलम। तेजः आयुष्य मारोग्यं देहि मेहब्य वाहन।। ततः उपविश्य श्रवेण भस्म मानीय दक्षिणा नामिकया गृहीत भस्मना।**

## हवन भस्म शरीर के विभिन्न अंगों में लगाने का मंत्र

**ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे, ( मस्तक में लगावें )**

**ॐ कश्य पश्य त्र्यायुषं ग्रीवायाम्। ( कंठ में लगावें )**

**ॐ यदेवेषुत्रया युषं हृदिः ( हृदय में लगावें )**

**ॐ तते अस्तु त्र्यायुषं, दक्षिणा वाहमले ( दोनों वाहु में लगावें )**

**नोट**-अब खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माता काली हवन कुंड सहित स्थानों के चारों तरफ पांच बार "परिक्रमा" करें।

## प्रदक्षिणा मंत्र

**यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृताणि च।**

**तानि-तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।।**

**नोट**-उपासकों ! प्रदक्षिणा समाप्ति के बाद कांशे की थाली पर पान का पत्ता रखकर कर्पूर जलाकर "आरती" दिखावें और इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ट पर लिखी हुयी "आरती वन्दना" गावें। आरती वन्दना समाप्त होने के पश्चात् "पूजन विसर्जन" करें।

## पूजन विसर्जन मंत्र

**नोट**-दोनों हाथ से गंगाजल की गड़वी पकड़कर खड़े होकर भगवान भैरव को अन्तिम पूजन अर्घ्य प्रदान करें।

साधना समाप्त होने के पश्चात् स्वयं निर्मित यंत्र को तांबे की ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें। साधकों। "सिद्ध बटुक भैरव यंत्र" गले में धारण करने से निम्नलिखित सफलताएं मिलती हैं-

## सिद्ध बटुक भैरव यंत्र धारण करने से लाभ

1. यंत्रराज को गले में धारण कर किसी से भी मिलने जाएं और कोई भी कार्य कहें, तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

2. जिस लड़के-लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो उसे यह यंत्र धारण करने से तीन महीने के अन्दर विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सदैव सुखी रहता है।

3. यदि यह यंत्रराज धारण कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करे, अथवा प्रमोशन, स्थान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

4. यदि यंत्रराज को जल से धोकर, वह जल किसी को भी पिला देंगे तो वह आपके वश में हो जायेगा।

5. यह दिव्य यंत्र धारण करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किए गये तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्य जनक वृद्धि होने लगती है।

6. यदि यंत्र धोकर जल रोगी को पिलाया जाये तो वह रोग मुक्त हो जाता है।

7. इस दिव्य यंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के घर या आंगन में उड़ेल दिया जाये, या जमीन में गाड़ दिया जाये तो शत्रु का सर्वनाश हो जाता है।

8. यदि इस यंत्रराज को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलायी जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही होता है।

साधकों! मैंने इस महायंत्र के प्रयोग कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाएं हैं, कितने दुखी व्यक्ति को यह यंत्र सिद्ध करके दिया है, इस कलियुग में भी इस दिव्य महान यंत्रराज का प्रभाव देखकर मैं दंग रह गया हूँ।

## श्री आकाश भैरव यंत्र साधना

**श्री आकाश भैरव यंत्र साधना या सिद्ध यंत्र धारण करने से लाभ :-**

1. इस महायंत्र की साधना से साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। धारण कर्ता के ईद-गिर्द एक तेज युक्त आभामण्डल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आस-पास के लोग स्वत: उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आशा का ना-नुच किए बिना पालन करते हैं।

2. यह यंत्र साधना सिद्ध होते ही या यंत्र धारण करते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुमय, ऋण आदि की स्थिति स्वत: ही नष्ट हो जाती है।

3. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है।

4. नौकरी, इंटरव्यू, परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है।

5. उसका व्यवसाय तरक्की करता है और अगर वह नौकरी पेशा वाला हो, तो उसकी पदोन्नती शीघ्र होती है।

6. इस यंत्र साधना के प्रभाव से किसी के द्वारा किया-कराया तांत्रिक प्रयोग नष्ट हो जाता है।

7. कुण्डली में निर्मित अनिष्ट दुर्योग फल हीन हो जाते हैं, अगर दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का योग हो तो वह भी अल्प हो जाता है।

8. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है।

9. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय होता है। उच्च कोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पे धारण करते हैं। वह सभी का प्रिय होता है, जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।

10. इसके साथ-साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखी हो जाता है, यदि परिवार में कोई क्लेश व्याप्त हो तो वह भी समाप्त हो जाता है।

11. उसकी समस्त इच्छाएँ और कामनाएँ पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी

चकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएँ स्वत: ही पूर्ण हो रही हैं।

ऊपर बताई गई स्थितियाँ तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। वास्तव में तो वह अपने आप में ही अद्वितीय तेजस्वी युग पुरूष बन जाता है साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हो पाता है। सिद्ध आकाश भैरव यंत्र अथवा किसी भी समस्यावों के समाधान हेतु सिद्ध किया यंत्र पंडित वाई. एन. झा. के कार्यालय से पत्राचार करके प्राप्त कर सकते हैं।

**साधना विधि**—साधकों! श्री आकाश भैरव की यंत्र साधना भी श्री बटुक भैरव साधना विधि के अनुसार ही सम्पन्न करें। इस साधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, कर हृदया-दिन्यास, ध्यान एवं मंत्र जप निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें :-

## अथ विनियोग

**ॐ अस्य श्रीमदापदुद्धारक-बटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः अनुष्टुपछन्दः श्रीमदापदुद्राक-बटुकभैरवो देवता वं बीजं ह्रीं बटुकाय इति शक्तिः प्रणवः कीलकं ममाभीष्टसिद्ध यर्थे पाठे विनियोगः।**

## अथ ऋष्यादिन्यासः

| | |
|---|---|
| बृहदारण्यकऋषये नमः | (शिरसि) |
| अनुष्टुपछन्दसे नमः | (मुखे) |
| वं बीजाय नमः | (गुह्ये) |
| ह्रीं बटुकायेति शक्तये नमः | (पादयोः) |
| ॐ कीलकाय नमः | (नाभौ) |
| विनियोगाय नमः | (सवङ्गिे) |

## ऋष्यादिन्यास

**ॐ वामदेवऋषये नमः ( शिरसि ), ॐ अतिजगतीछंदसो नमः ( मुखे ), ॐ श्रीशरभेश्वरदेवताय नमः ( हृदये ), ॐ खं बीजाय नमः ( गुह्ये ), स्वाहा शक्तये नमः ( पादयोः ), विनियोगाय नमः ( सर्वांगे )।**

## करहृदयादिन्यास

**ॐ खें खां खं फट्( अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः ), प्राणग्रहसि हुं फट्( तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा ), सर्वशत्रुसंहारकाय( मध्यामाभ्यां नमः, शिखाये वषट् ), शरभसालुवाय( अनाभिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम् ), पक्षिराजाय ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ), हुं फट् स्वाहा ( करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट् )।**

ध्यान

मृगस्त्वर्धशरीरेण पक्षाभ्यां चंचुना द्विजः ।
घोरवक्त्रश्चतुष्पाद ऊर्ध्वनेत्रश्चतुर्भुज ॥
कालांतदहनः पुण्यो नीलजीमूतनिस्वनः ।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः ॥
सटाछटोग्ररूपाया पक्षविक्षिप्तभूभृते ।
अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये ॥

इस प्रकार ध्यान करके निम्नलिखित मंत्र का जप करें :-

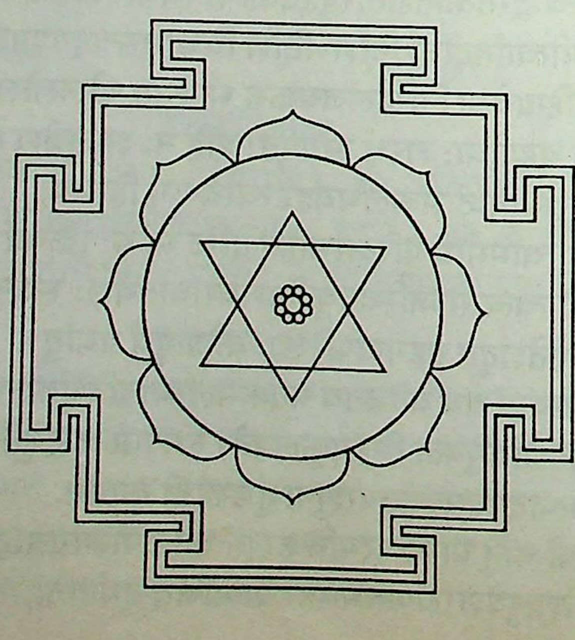
ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहसि प्राणग्रहसि हुं फट्
सर्वशत्रुसंहारकाय शरभसालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ।

## श्री आकाश भैरव स्त्रोत

कोपोद्रेकाति निर्यन् निखिलपरिचरत् ताम्रभारप्रभूतं,
ज्वालामालाग्रहदग्धस्मरतनुसकलं त्वामहं शालुवेश ।
याचे त्वत्पादपद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टि मां यः क्रियाभि,
स्तस्य प्राणप्रयाणं परशिव भवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम् ॥
शंभो! त्वद्धस्तकांतक्षतरिपुहृदयानिः स्त्रवल्लोहितौघं,
पीत्वा पीत्वातिदीर्घा दिशि-दिशि विचारास्त्वद्गणाश्चंडमुख्याः ।
गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोला,
संत्रस्ता ब्रह्मदेवाः शरभ खगपते! त्रहि नः शालुवेश ॥
सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयहरं त्वस्वरूपं हिरण्यं,
याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः ।
श्रीशंभो त्वत्कराब्जस्थितकुलिशवराघातवक्षः स्थलस्य,
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयांतु ॥
द्विष्म क्षोण्यां वयं यांस्ततव पदकमलध्याननिर्धूततापाः,
कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहगकुलपते! खेलया बद्धमूर्तेः ।
तूर्णं त्वत्पादपद्मप्रधृतपरशुना तुंडखंडी कृतांग,
एतदद्वेषी यातु याम्यं पुरमतिकलुषं कालपाशाग्रबद्धः ॥
भीमश्रीशलुवेश! प्रणतभयहर प्राणजिद् दुर्मदानां,

याचेऽहं चास्य वर्गप्रस्मनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्ते: ।
त्वामेवाशु त्वदंध्य्रष्टकनखविलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य,
प्राणा यांतु प्रयाणं प्रकटितहृदयस्यायुरल्पायतेश ॥
श्रीशूलं ते कराग्रस्थितमुसलगदावृत्तवात्यामिघाताद्,
यातायातारियूथं त्रिदशरविघनोद्धूतरक्तच्छटाद्रिम् ।
सद्द्वष्टावाऽऽयोधने ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदंतु नाना-
भूता बेतालपूगः पिबतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः ॥
अल्पं दोर्दण्डबाहुप्रकटितविनमच्चण्डकोदण्डमुक्तेत्र
बाणेर्दिव्येरनेकेः शिथिलितवपुषः क्षणिकोलाहलस्य ।
तस्यप्राणावसानं परशरभ विमोऽहं त्वदिज्या प्रभावै-
स्तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यांतहेतो ॥
इतिनिशि प्रयतस्तु निरासनो मम मुखः शिवभावमनुस्मरन् ।
प्रतिदिनं शवारदिनत्रयं जपति निग्रह दारुणसप्तकम् ॥
इतिगुह्यं महाबीजे परमं रिपु नाशनम् ।
मानुवारं समारभ्य मंगलांत जपेत् सुधी ॥

### [ श्री आकाश भैरव यंत्र ]



# श्री स्वर्णाकर्षन विकराल भैरव साधना

## मुकदमा में जीत, विदेश यात्रा में सफलता, लॉटरी, शेयर बाजार में सफलता एवं दुश्मनों का नाश करने हेतु

साधकों! यह साधना भी बटुक भैरव साधना के अनुसार ही सम्पन्न करें। इस साधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, कर हृदयादि न्यास, मंत्र न्यास, ध्यान व मंत्र जप निम्न विधि मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें-

### विनियोग

**ॐ अस्य श्री आपदुद्धारण बटुकभैरव मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, त्रिष्टुप्छंदः, श्रीबटुकभैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, भैरवः कीलकम् मम धर्मार्थम्काममोक्षार्थम् श्री बटुकभैरवप्रीत्यर्थम् जपे विनियोगः।**

### ऋष्यादिन्यास

**बृहदारण्यऋषये नमः ( शिरसि ), त्रिष्टुप्छंदसे नमः ( मुखे ), श्रीबटुकभैरवदेवतायै नमः ( हृदये ), ह्रीं बीजाय नमः ( गुह्ये ), स्वाहा शक्तये नमः ( पादयोः ), भैरवकीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः ( सर्वांगे )।**

### कहृदयादिन्यास

**ॐ ह्रां वां ( अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः ), ॐ ह्रीं वीं ( तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा ), ॐ ह्रूं वूं ( मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ), ॐ ह्रैं वैं ( अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम् ), ॐ ह्रौं वों ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ), ॐ ह्रः वः ( करतफतरपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट् )।**

### मंत्रन्यास

**ॐ ह्रां ह्रीं ( अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः ), ॐ ह्रीं बटुकाय ( तर्जनीभ्या नमः, शिरसे स्वाहा ), ॐ ह्रूं आपदुद्धारणाय ( मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ), ॐ ह्रैं कुरु-कुरु ( अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम् ), ॐ ह्रौं बटुकाय ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ) ॐ ह्रः ह्रीं ( करतलककरपृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट् )।**

### हृदयादिन्यास

**आपदुद्धारणाय ( हृदयाय नमः ), अजामलबद्धाय ( शिरसे स्वाहा ), लोकेश्वराय ( शिखाये वषट् ), स्वर्णाकर्षण भैरवाय ( कवचाय हुम् ), मम दारिद्रयविद्वेषणाय ( नेत्रत्रयाय वौषट् ), श्रीमहाभैरवाय नमः ( अस्त्राय फट् ), रं रं रं ज्वलत्प्रकाशाय नमः।**

ध्यान

ॐ पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्य तडित् पूरितपात्रकम्॥
अभिलसन् महाशूलं चारमरं तोमरोद्वदम्।
सततं चिंतये देवं भैरवं सर्वसिद्धादम्॥
मंदारद्रुमकल्पमूलमहिते माणिक्य सिंहासने।
संविष्टोदरभिन्नचम्पकरुचा देवया समालिंगति॥
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्णंददानो भृशं।
स्वर्णाकर्षण भैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥

इन पद्यों से ध्यान तथा मानसिक उपचारों से पूजा करके मूलमंत्र का जप करें :

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं
आपदुद्धधारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय
स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्रयविद्वेषणाय
ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

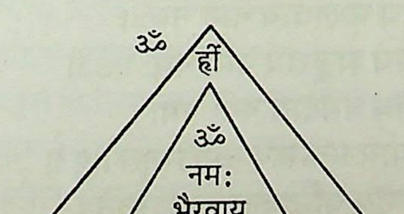
उपरोक्त मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करके दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराने से दरिद्रता का नाश, ऋण का निवारण तथा सर्वविध सुख की प्राप्ति होती है। पायस तथा बिल्व से हवन करें। कृष्णपक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी तक जप का विशेष महत्व है।

## श्री भैरवाष्टक

भैरवनाथ करूं विनती, शरणागत है अब दास कृपाला।
दयाल रहो अमरेश सदा, नकुलेश पड़ी गल मुण्डनमाला।
मैं जन दीन मलीन अधी, दया करियो पीकर मदप्याला।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला॥1॥
शेखर प्रेतहु आप कहावत, भीषण मुजुल नाथ विशाला।
वामन नाथ उजागर है प्रभु, आप उमापति के सुत लाला।
काज करो मम लाज रखे, अरदास करे जन है कुतवाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला॥2॥
भीम त्रिलोचन टेर सुनो, अघमोचन नाथ कराय निहाला।
संशय दूर करो जन को, तुम होइ दयालु हरो भ्रमजाला।
हे जन-तारण दैत्य-प्रहारण, क्लेश-निवारण हो तुम आला।

जानत है जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥3 ॥
पीवत धार सदा मद की, प्रभु वाहन स्वान सुहावन काला।
त्रैल त्रयम्बक ताप विमोचन, भाल शशी चमके निरियाला।
भूत पिशाचन के बटु मालिक, सारहु कारज लेकर भाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥4 ॥
दीनन की तुम टेर सुनो, दस पाण त्रिलोचन ढाल अड़ाला।
शेष महेश सुरेश दिनेश, हमेशा रटें तुमको प्रतिपाला।
व्याल कराल दया करिहौ, चट अन्दर नाथ करो उजियारा।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥5 ॥
नाशत दैत्यन को पल में, तुम मार पछारत देत कसाला।
मैं मतिमन्द न जानत हूं, कछु ज्ञान देउ हटा दृगजाला।
शेखर चन्द्र दया करि दो, वरदान महान बनारस वाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥6 ॥
झांझ मृदंग बजे मठ में, नित गावत गान सुजान निराला।
नाम जपें दिनरात मनावत, आसन बैठ मुनी मृगछाला।
चौंसठ जोगिन नाचत हैं मठ, झालर शंख बजें खडताला।
जानत हैं जग में तुमको, नर नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥7 ॥
जाहिर हौ तिहुं लोकन में, अघ टारत आप कृपालु खुस्याला।
ध्यावत हैं जन हार लिये, पहनावत हैं हरवा हरिमाला।
मैं तो ध्यान धरूं तुम्हरो, मम काटहु संकट नाथ कराला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीनदयाला ॥8 ॥

## [ यंत्र निर्माण ]



## षष्ठ भाग



# भगवान् भैरव स्तोत्र खण्ड

## श्री बटुक भैरव सहस्त्र नाम स्तोत्र

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाद्य नमो नमः ॥१ ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः ।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥२ ॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते ।
नमस्त्र्यम्बरूपाय महाकालाय ते नमः ॥३ ॥
नमः संसारसाराय शारदाय नमो नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥४ ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः ।
क्षेत्रक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः ॥५ ॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते ॥६ ॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः ।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने ॥७ ॥
नमो मङ्गलरूपाय मालवाय नमो नमः ।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः ॥८ ॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः ।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते ॥९ ॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकार नमोऽस्तुते ।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः ॥१० ॥

नमो जलदरूपाय सामरूप नमोऽस्तु ते।
नमो स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः ॥११॥
नमो नीलस्वरूपाय रङ्गरूपाय ते नमः।
नमो मण्डलरूपाय मण्डलाय नमो नमः ॥१२॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः ॥१३॥
नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमः संसारबीजाय विरूपाय नमो नमः ॥१४॥
नमो विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो जङ्गमरूपाय जलजाय नमो नमः ॥१५॥
नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६॥
नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः।
नमः शान्ताय दान्ताय भ्रमरूप नमोऽस्तुते ॥१७॥
न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः।
नमः कमलकान्ताय कालवृद्धाय ते नम ॥१८॥
नमो ज्योति स्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१९॥
नमो जस्वरूपाय जगज्जाड्य-निवारिणे।
महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः ॥२०॥
नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने।
नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः ॥२१॥
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे।
विश्ववन्द्याय वन्द्याय नमो विश्वम्भराय ते ॥२२॥
नमो नेत्रस्वरूाय नेत्ररूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥२३॥
नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः।
नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः ॥२४॥
नम ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः।
नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥२५॥
नमः प्राणस्वरूपाय प्राणधिपतये नमः।
नमः सहाररूपाय पालकाय नमो नमः ॥२६॥

नमश्चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः।
नमो मन्दरवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ॥२७॥
योगिगम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः।
नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः ॥२८॥
नमः शत्रु-विनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः।
नमो भक्ति-विनोदाय दुर्भगाय नमो नमः ॥२९॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः ॥३०॥
नमो रजःस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः।
नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः ॥३१॥
नमो गङ्गाविनोदाय जयसन्धारिणे नमः।
नमो भैरवरूपाय भीषणाय नमो नमः ॥३२॥
नमः सङ्ग्रमरूपाय सङ्ग्रामजयदायिने।
सङ्ग्रामसाररूपाय पावनाय नमो नमः ॥३३॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः।
नमस्त्रिशूलहस्ताय शूंलसंहारिणे नमः ॥३४॥
नमो द्वन्द्वस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धिविनाशिने ॥३५॥
महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥३६॥
नमः शुभस्वरूपाय शम्भूरूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः ॥३७॥
नमः कुक्कुरवाहाय वहनाय नमो नमः।
नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः ॥३८॥
नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने।
सांसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथाय ते नमः ॥३९॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥४०॥
नमो यन्त्रस्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥४१॥
नमः कलङ्करूपाय कलङ्काय नमो नमः।
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः ॥४२॥

रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः ।
नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः ॥४३ ॥
नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः ।
नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः ॥४४ ॥
नमो मोदस्वरूपाय श्रोत्ररूपाय ते नमः ।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥४५ ॥
नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोऽस्तु ते ॥४६ ॥
नमः कन्थानिवासाय पटवासाय ते नमः ।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः ॥४७ ॥
नमो बटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपया भैरवाय नमो नमः ॥४८ ॥
नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्रूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नम औषधरूपाय औषधाय नमो नमः ॥४९ ॥
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः ।
नमो द्वारनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः ॥५० ॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः ।
विरूपाक्षाया देवाय भैरवाय नमो नमः ॥५१ ॥
नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः ।
नमः पवित्रधाराय पर्शुधाराय ते नमः ॥५२ ॥
यज्ञोपवीतदेवाय देवदेव नमोऽस्तुते ।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥५३ ॥
नमो रणप्रतापाय तापनाय नमो नमः ।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः ॥५४ ॥
नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ।
नमो मलयरूपाय रिश्मरूपाय ते नमः ॥५५ ॥
नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः ।
नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने ॥५६ ॥
कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥५७ ॥
नमो योनिस्वरूपाय मातृरूपाय ते नमः ।
नमो भगिनीरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥५८ ॥

नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः ।
नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धान्तसारिणे ॥५९ ॥
नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः ।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६० ॥
नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः ।
नमो ज्योतिः स्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ॥६१ ॥
निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः ।
निर्ममाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः ॥६२ ॥
नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाथाय ते नमः ।
नमः आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः ॥६३ ॥
नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः ।
नमो वाराहरूपाय वामनाय नमो नम॥ ॥६४ ॥
नम आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः ।
नमोऽस्त्वर्घकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः ॥६५ ॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षाय च नमो नमः ।
नमः कैलाशनाथाय कालनाथाय ते नमः ॥६६ ॥
नमो बिन्दुदबिन्दाय बिन्दुभाय नमो नमः ।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६७ ॥
नमो मेरुनिवासाय रक्तवासाय ते नमः ।
नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६८ ॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः ।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः ॥६९ ॥
नमो मन्त्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथाय ते नमः ॥७० ॥
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः ।
नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः ॥७१ ॥
नमो मातृनिवासाय भ्रात-वासाय ते नमः ।
नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः ॥७२ ॥
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः ।
नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः ॥७३ ॥
नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः ।
नमश्चन्द्रनिवासाय चन्द्रावासाय ते नमः ॥७४ ॥

नमः कलिङ्गवासाय कलिङ्गाय नमो नमः।
नमः उत्कलवासाय इन्द्रवासाय ते नमः ॥७५॥
नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः।
नमः सुन्दर-वासाय भैरवाय नमो नमः ॥७६॥
नमः आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्।
नमो ब्राह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः ॥७७॥
नमः क्षत्रियवासाय वैश यवासाय ते नमः।
नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥७८॥
नमः पातालमूलाय मूलावासाय ते नमः।
नमो रसातलवासाय सर्वपातालवासिने ॥७९॥
नमः कङ्कालवासाय कङ्कवासाय ते नमः।
नमो मन्त्रनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥८०॥
नमोऽहङ्काररूपाय रजोरूपाय ते नमः।
नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥८१॥
नमो नलिनरूपाय नलिनाङ्गप्रकाशिने।
नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥८२॥
नमो दुष्टनिवासाय साधूपायस्वरूपिणे।
नमो नम्रस्वरूपाय स्तम्भनाय नमो नमः ॥८३॥
पञ्चयोनिप्रकाशाय चतुयोनिप्रकाशिने।
नवयोनिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥८४॥
नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे।
चतुःषष्टिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥८५॥
नमो बिन्दुप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमो गणस्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तुते ॥८६॥
नमोऽम्बरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो नानास्वरूपाय मुखरूप नमोऽस्तुते ॥८७॥
नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहन्त्रे नमोऽस्तुते।
नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः ॥८८॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः प्रेतनिवासाय पिशाचाय नमो नमः ॥८९॥
नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोऽस्तुते।
नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः ॥९०॥

नमः संसारभाराय भारकाय नमो नमः ।
नमो देहस्वरूपाय अदेहाय नमो नमः ॥९१ ॥
देवदेहाय देवाय भैरवाय नमो नमः ।
विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तु ते ॥९२ ॥
स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ।
स्थितिरूपाय स्थित्याय स्थितीनां पतये नमः ॥९३ ॥
सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः ।
स्थविष्ठाय गरिष्ठाय प्रेष्ठाय परमात्मने ॥९४ ॥
नमो भैरवरूपायं भैरवाय नमो नमः ।
नमः पारदरूपाय पवित्राय नमो नमः ॥९५ ॥
नमो वेधकरूपाय अनिन्दाय नमो नमः ।
नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः ॥९६ ॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो निन्दास्वरूपाय अनिन्दाय नमो नमः ॥९७ ॥
नमो विष्णुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः शरण्यशरण शरण्यानां सुखाय ते ॥९८ ॥
नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥९९ ॥
नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधामात्रास्वरूपिणे ॥१०० ॥
नमोऽक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ।
अर्धमात्राय पूर्णाम पूर्णाय ते नमो नमः ॥१०१ ॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥१०२ ॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सृष्टिस्वरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने ॥१०३ ॥
नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥१०४ ॥
नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमो धारास्वरूपाय खड्गहस्ताय ते नमः ॥१०५ ॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कुण्डलवर्णाय शवमुण्डविभूषिणे ॥१०६ ॥

महाक्रुद्धाय चण्डाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो वासुकिभूषाय सर्पभूषाय ते नमः ॥१०७॥
नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
पानपात्रप्रमत्ताय मत्तरूपाय ते नमः ॥१०८॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो माधवरूपाय माधवाय नमो नमः ॥१०९॥
नमो माङ्गल्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कुमाररूपाय स्त्रीरूपाय नमो नमः ॥११०॥
नमो गन्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो दुर्गन्धरूपाय सुगन्धयाय नमो नमः ॥१११॥
नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूषण ते नमः ।
नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥११२॥
नमः पुष्पविनोदाय पुष्पपूजाय ते नमः ।
नमो भक्तिनिवासाय भक्तदुःखनिवारिणे ॥११३॥
भक्तप्रियाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भक्तस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ॥११४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः ॥११५॥
नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमो नमः ।
नमः खट्वाङ्गहस्ताय कालहस्ताय ते नमः ॥११६॥
नमऽघोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे ।
घोरघर्माय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥११७॥
घोरत्रिशूलहस्ताय घोरपानाय ते नमः ।
घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमो नमः ॥११८॥
घोरवाहनगम्याय अगम्याय नमो नमः ।
घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥११९॥
घोरसङ्गाय सिंहाय सिद्धिसिंहाय ते नमः ।
नमः प्रचण्डसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः ॥१२०॥
नमः सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमो विजयरूपाय जगदाद्य नमो नमः ॥१२१॥
मो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२२॥

नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः ।
नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१२३॥
दुर्ज्ञेयाय दुरन्ताय दुर्लभाय दुरात्मने ।
भक्तिलभ्याय भव्यया भविताय नमो नमः ॥१२४॥
नमो गौरवरूपाय गौरवाय नमो नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२५॥
नमो विघ्ननिवाराय विघ्नराशिन्नमोऽस्तुते ।
नमो विघ्नविदाराय भैरवाय नमो नमः ॥१२६॥
नमः किंशकरूपाय रजोरूपाय ते नमः ।
नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२७॥
नमो गणस्वरूपाय गणनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१२८॥
नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः ।
नमो हेरम्बरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२९॥
नमस्त्रिधा स्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ।
नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३०॥
नमः सरस्वतीरूप बुद्धिरूपाय ते नमः ।
नमो वन्ध्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३१॥
नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपाय ते नमः ।
नमः शशाङ्करूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३२॥
नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३३॥
नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३४॥
नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमो नमः ।
नमो गङ्गास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः ॥१३५॥
नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो दुःखविनाशाय दुःखमोक्षस्वरूपिणे ॥१३६॥
महाचलाय वन्द्या भैरवाय नमो नमः ।
नमो नन्दस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३७॥
नमो नन्दिस्वरूपाय स्थिररूपाय ते नमः ।
नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३८॥

नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने।
नमः शान्ताय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥१३९॥
नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः।
नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमो नमः ॥१४०॥
नमो महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः।
नमः संसृतिरूपाय शरणीयाय ते नमः ॥१४१॥
नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमो नमः।
नमः संसारसाराय सरसां पतये नमः ॥१४२॥
नमस्ते जलरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः काव्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१४३॥
नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः।
नमः शङ्करवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः ॥१४४॥
नमो विष्टकरर्णाय यज्ञकर्णा ? ते नमः।
नमः शम्बुककर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४५॥
नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४६॥
नम आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो दिग्रूपकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४७॥
नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः।
नमः सहस्त्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४८॥
नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः।
नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः ॥१४९॥
नमो विमलनेत्राय योगिनेत्राय ते नमः।
नमः सहस्त्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥१५०॥
नमः कलिन्दरूपाय कलिन्दाय नमो नमः।
नमो ज्योति स्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः ॥१५१॥
नमस्तारप्रकाशायताररूपिन् नमोऽस्तुते।
नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥१५२॥
नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तु ते।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५३॥
नम आनन्दरूपाय जयानन्दस्वरूपिणे।
नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५४॥

नमः शङ्खनिवासाय शङ्कराय नमो नमः ।
नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१५५॥
नमो न्यासस्वरूपाय न्यासरूप नमोऽस्तुते ।
नमो बिन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५६॥
नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूप ते नमः ।
नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१५७॥
नमो जम्बुकरूपायाय जङ्गमाय नमो नमः ।
नमो गरुडरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५८॥
नमो लम्बुकरूपाय लम्बिकाय नमो नमः ।
नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५९॥
नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः ।
नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६०॥
नमो दम्भस्वरूपाय डमरुधारिन्नमोऽस्तु ते ।
नमः कलङ्कनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥१६१॥
नमः सिद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमो नमः ।
नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६२॥
नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः ।
धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः ॥१६३॥
नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः ।
नमो धर्माथसिद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥१६४॥
नमो निर्जररूपाय रूपारूपप्रकाशिने ।
नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१६५॥
नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः ।
नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः ॥१६६॥
नमः सहस्त्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः ।
नम आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६७॥
नमः संहारबन्धाय बन्धकाय नमो नमः ।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः ॥१६८॥
नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः ।
नमो माङ्गल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः ॥१६९॥
नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूप नमोऽस्तु ते ।
नमो व्यालविभूषाय भैरवाय नमो नमः ॥१७०॥

नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानां पतये नमः ।
नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः ॥१७१ ॥
नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः ।
नमो पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१७२ ॥
नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः ।
नमो विश्वविलाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१७३ ॥
नमो नमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोऽस्तुते ।
नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः ॥१७४ ॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः ।
नमो भद्राधिपतये भयहन्त्रे नमोऽस्तु ते ॥१७५ ॥
नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे ।
नमो मत्ताय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ॥१७६ ॥
नमो मलयवासाय कैलाशाय नमो नमः ।
नमः कैलाशवासाय कालिकातनयाय ते ॥१७७ ॥
नमः संसारसाराय भैरवाय नमो नमः ।
नमो मातृविनोदाय विमलाय नमो नमः ॥१७८ ॥
नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः ।
नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः ॥१७९ ॥
नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ।
नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥१८० ॥
नमो वृन्दविनोदाय वृन्दकाय नमो नमः ।
नमो बृंहितरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१८१ ॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः ।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१८२ ॥
नमो नैमिषपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः ।
नमो मण्डलपीठाय भक्तपीठाय ते नमः ॥१७३ ॥
नमो यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः ।
नमो विनोदनाथाय सिद्धनाथाय ते नमः ॥१७४ ॥
नमो नाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः ।
नमः शङ्करनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥१८५ ॥
नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः ।
नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ॥१८६ ॥

विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः ॥१८७॥
नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वविहाराय विश्वमाराय ते नमः ॥१८८॥
नमो रङ्गसनाथाय रङ्गनाथाय ते नमः ।
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१८९॥
नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः ।
नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः ॥१९०॥
नमो मङ्गलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः ।
नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९१॥
नमो निर्धननाथाय सुखनाथाय ते नमः ।
नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९२॥
नमो द्रविडनाथाय दरिनाथाय ते नमः ।
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥१९३॥
नमो माध्वीकनाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः ।
नमो न्याससनाथाय ध्याननाथाय ते नमः ॥१९४॥
नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः ।
नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय ते नमः ॥१९५॥
नमो विमलनाथाय मण्डलनाथाय ते नमः ।
नमः सरोजनाथाय सत्यनाथाय ते नमः ॥१९६॥
नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः ।
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः ॥१९७॥
नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः ।
नमो बिन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥१९८॥
नमो मङ्गलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ।
नमो गङ्गासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥२९९॥
नमो धीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः ।
नमः कञ्चुकिनाथाय श्रृङ्गिनाथाय ते नमः ॥२००॥
नमः समुद्रनाथाय गिरिनाथाय ते नमः ।
नमो माङ्गल्यनाथाय कद्रुनाथाय ते नमः ॥२०१॥
नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः ।
नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०२॥

नमो गिरीशनाथाय वामनाथाय ते नमः ॥
नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः ।२०३ ॥
नमो मन्दिरनाथाय मनोनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०४ ॥
अम्बानाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः ।
नमः कालिसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०५ ॥
नमो मुकुन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः ।
नमः कुण्डलनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०६ ॥
नमोऽष्टचक्रनाथाय शूलनाथाय ते नमः ।
नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः ॥२०७ ॥
नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः ।
नमो दयासनाथाय जङ्गमनाथाय ते नमः ॥२०८ ॥
नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ।
नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०९ ॥
नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः ।
नमः शैलसनाथाय चैलनाथाय ते नमः ॥२१० ॥
नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमो नमः ।
नमो द्वन्द्वसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२११ ॥
नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः ।
नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः ॥२१२ ॥
नमो दुष्टसनाथाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भय-सनाथाय बिम्बनाथाय ते नमः ॥११३ ॥
नमो भैरवनाथाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो विटङ्कनाथाय टङ्कनाथाय ते नमः ॥२१४ ॥
नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः ।
नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः ॥२१५ ॥

*॥ इति श्री भैरव सहस्त्र नाम स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥*

## श्री भैरव कवचम्

### विनियोग

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव कवचस्य आनंद भैरव ऋषि, त्रिष्टुप्प छंदः श्री बटुक भैरवो देवता, बं बीजं, ह्रीं शक्ति, बटुकायते कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

## अथ कवचम्

सहस्त्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः।
पातु मां बटुका देवो भैरवः सर्वकर्मसु॥
पूर्वस्यामसितांगो मां दिशि रक्षतु सर्वदा।
आग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः।
नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे।
वाय्वयां मां कपाली च नित्यं पायात्सुरेश्वरः॥
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा।
संहारभैरव पायादीशान्यां च महेश्वरः॥
ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नदको विभुः।
सद्योजातस्तु मां पायात्सर्वतो देवसेवितः॥
वामदेवो वनांते च वने घोरस्तथाऽस्तु।
जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च॥
डाकिनी पुत्रकः पातु पुत्रान् मे सर्वतः प्रभुः।
हाकिनी पुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनीसुतः॥
पातु शाकिनिका पुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः।
मालिनी पुत्रकः पातु पशूनश्वान् गजांस्तथा॥
महाकालोऽवतु क्षेत्रं श्रिपं मे सर्वतो गिरा।
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्य सम्पदा॥
एतत्कवचमीशान तव स्नेहात्प्रकाशितम्।
नारव्येयं नरलोकेषु सारभूतम् मुरप्रियम्॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं कवचं सुरदुर्लभम्।
न देयं परशिष्येभ्यः कृपणेभ्यश्च शंकरम्॥
यो ददाति निषिद्धेभ्यः सर्वभ्रष्टो भवेत्किल।
अनेन कवचेनैव रक्षां कत्वा विचक्षणः॥
विचरन्यत्र कुत्रापि न विघ्नैः परिभूयते।
मंत्रेण रक्षते योगी कवचं रक्षक यतः॥
तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन दुर्लभं पाप चेत्तसाम्।
भूजेंरभांत्वचि वापि लिखित्वा विधिवत्प्रभो॥
कुंकुमेनाष्टगंधेन गोरोचनैश्च केसरैः।

धारयेत्पाठयेद्वापि संपठेद्वापि नित्यशः ॥
संप्राप्नोप्ति फल सर्व नात्र कार्या विचारणा।
सततं पठयते यत्र तत्र भैरव संस्थितिः ॥
न शक्नोमि प्रभावं वै कवचस्यास्य वर्णितुम्।
नमो भैरव देवाय कालभैरवाय वै नमः ॥
नमो बटुक भैरवाय सर्वभूताय वै नमः।
नमस्त्रैलोक्यनाथाय नाथनाथाय वै नमः ॥

*॥ इति श्री भैरव कवचम् सम्पूर्णम् ॥*

## बटुक भैरव स्तुति

अभयदान दीजै दयालु प्रभु, सकल सृष्टि हितकारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन, भवभंजन शुभसुखकारी॥
दीनदयालु कृपालु कालरिपु, अलखनिरंजन तुम योगी।
मंगलरूप अनूप छबीले अखिल भुवन के तुम भोगी।
कर डमरू अति रंगरस भीने वाहन स्वान की छवि न्यारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

असुरनिकन्दन सब दुखभंजन, वेद बखाने जग जाने।
रुंडमाल गल-ब्याल खप्पर कर भस्म बदन शोभा जाने।
डमरूधर त्रिशूलधर विषधर बाघम्बरधर गिरिचारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

यह भवसागर अति अगाध है, पार उतर कैसे जूझे।
ग्राह मगर बहु कच्छप छाये, मर्गा कहो कैसे सूझे।
नाम तुम्हारा नौका निर्मल, प्रभु शंकर के अवतारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

काम क्रोध लोभ अति दारुण, इन पे मेरो वश नाहीं।
द्रोह मोह मद संग न छोड़ें, आन देत नहिं तुम तांईं।
क्षुधा तृषा नित लगी रहत है, बढ़ी विषय तृष्णा भारी।
**बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....**

—

मैं जानूं तुम सद्‌गुणसागर, अवगुण मेरे सब हरियो।
किंकर की विनती सुन स्वामी, सब अपराध क्षमा करियो।
तुम तो सकल विश्व के स्वामी, मैं हूं प्राणी संसारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

तुम ही भैरव कर्त्ता-हर्त्ता, तुम ही जग के रखवारे।
तुम हो गगन मगन पुनि पृथिवी, हे शिवजी के अवतारे।
तुमही पवन हुताशन भैरव, तुमही रवि शशि तमहारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

अशुपति अजर अमर अमरेश्वर, योगेश्वर बटुक स्वामी।
स्वानारूढ़ गूढ़ गुरु जगपति, भक्तवत्सल प्रभु निष्कामी।
सुषमासागर रूप उजागर, गावत हैं सब नर नारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

बटुकदेव देवों के अधिपति, कर में डमरू अति साजै।
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन, उर आनत ही दुख भाजै।
परम प्रसिद्धि पुनीत पुरातन, महिमा त्रिभुवन विस्तारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि, नारद आदि करत सेवा।
सब की इच्छा पूरन करते, नाथ सनातन तुम देवा।
भक्ति-मुक्ति के दाता भैरव, नित्य निरन्तर सुखकारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

महिमा इष्ट बटुक भैरव की, पढ़े सुन जो नित्य गावे।
अष्ट सिद्धि, नवनिध सुख-सम्पत्ति, सदा सर्वदा वह पावे।
मुझ अनाथ पर प्रसन्न होकर, कृपा कीजिये त्रिपुरारी।
बटुकनाथ भक्तदुखभंजन.....

*॥ श्री बटुक भैरव स्तुति सम्पूर्ण॥*

# श्री महा भैरव स्तुति

नमो भैरव भीम भीषण कृपालम्।
नमो चक्रतुण्ड बटुकनाथ दयालम्॥
नमो त्रैलतेश नमो प्रेतनाथम्।
नमो चन्द्रशेखर दिपै चन्द्रभालम्॥
नमो रुद्र अमरेश नकुलेश स्वामी।
नमो विश्वभूतेश जौमेष व्यालम्॥
दिगम्बर अडम्बर नमो ताप मोचन।
त्रिलोचन विमोचन गले मुण्डमालम्॥
नमो क्षेत्रपालं महाकाल कालम्।
नमो भीमलोचन भुजंगी विशालम्॥
नमो चक्रपाणिं करण लम्ब उन्नत।
नमो शिव कपिल विकाल चालम्॥
नमो सुन्दरानन्द आनन्द कन्दम्।
उमानन्द काशी नमो कोतवालम्॥
नमो अश्वनाथं नमो प्रेतनाथम्।
जगन्नाथ नाथ नमो चक्रनाथम्॥
नमो भूतनाथं नमो बैजनाथम्।
सुवन विश्वनाथं कृपानाथ नाथम्॥
नमो नाथ अतिर्सांग क्रोधेश मंजुल।
नमो क्रोधवक्त्रं त्रयम्बक भुजालम्॥
नमो नाथ दशापाणि कृत्यायु बामन।
नमो नाथ अस्तुति करत नत्थलालम्॥
रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकम्,
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंश मोक्षणम्,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवम् भजे॥
अट्टहास भिन्न पद्म जांडकोश संतति,

दृष्टिपात नष्टयायजालमुग्र शासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालि कन्धरम्,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवम् भजे ॥
भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकम्
काशिवास लोकपुण्यपाप शोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविदं परातनं जगत्पतिं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवम् भजे ॥
भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकम्,
काशिवास लोकपुण्यपाप शोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविदं परातनं जगत्पतिं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवम् भजे ॥
कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरम्,
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्यवर्द्धनम्।
शोकमोह दैन्यलोभ कोपताप नाशनम्,
ते प्रयांति कालभैरवांघ्रिसन्निधं ध्रुवम् ॥

*॥ श्री महा भैरव स्तुति सम्पूर्ण ॥*

## श्रीक्षेत्रपाल-भैरवाष्क-स्तोत्रम्

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दश दिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्ति शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१॥
रं रं रं रक्तवर्णं कटकटिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्राविशालं,
घं घं घं घोरघोषं घघघघघटितं घर्घराघोरनादम्।
कं कं कं कालरूपं धगधगधगितं ज्वालितं कामदेहं,
दं दं दं दिव्यदेहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥२॥
लं लं लं लम्बदन्तं ललललललुलितं दीर्घजिह्वं करालं,
धूं धूं धूं धूम्रवर्णं स्फुटविकृतमुखं भासुरं भीमरूपम्।

रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमयमुखं ताम्रनेत्रं विशालं,
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥३ ॥
वं वं वं वायुवेगं प्रलयपरिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं,
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवननिलयं भास्करं भीमरूपम्।
चं चं चं चालयन्तं चलचलचलितं चालितं भूतचक्रं,
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥४ ॥
शं शं शं शङ्खहस्तं शशिकरधवलं पूर्णतेजः स्वरूपं,
भं भं भं भावरूपं कुलमकुलकुलं मन्त्रमूर्तिं स्वतत्त्वम्।
भं भं भं भूतनाथं किलकिलितवचश्चारु जिह्वालुलन्तं,
अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥५ ॥
खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल-कालान्धकारं,
क्षिं क्षिं क्षिं क्षिप्रवेगं दह दह दहनं नेत्रसन्धीप्यमानम्।
हूं हूं हुङ्कारशब्दं प्रकटितगहनं गर्जितं भूमिकम्पं,
बं बं बं बाललीलं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥६ ॥
सं सं सं सिद्धियोगं सकलगुणमयं देवदेवं प्रसन्नं,
पं पं पं पद्मनाभं हरिहरवदनं चन्द्रसूर्याग्निनेत्रम्।
यं यं यं यक्षनाथं सततभयहरं सर्वदेवस्वरूपम्,
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥७ ॥
हं हं हं हंसघोषं हसितकहकहाराव - रौद्राट्टहासं,
यं यं यं यक्षरूपं शिरसि कनकजं मौकुटं सन्दधानम्।
रं रं रं रङ्गरङ्ग-प्रहसितवदनं पिङ्गलं श्यामवर्णं,
सं सं सं सिद्धनाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥८ ॥
एवं वै भावयुक्तः प्रपठति मनुजो भैरवस्याष्टकं यो,
निर्विघ्नं दुःखनाशं भवति भयहरं शाकिनीनां विनाशम्।
दस्यूनां व्याघ्रसर्पोद्भवजनितभियां जायते सर्वनाशः,
सर्वे नश्यन्ति दुष्टा ग्रहगणविषमा लभ्यते चेष्टसिद्धिः ॥९ ॥

*॥ श्री क्षेत्रपाल भैरवाष्टक स्तोत्र सम्पूर्ण ॥*

# सप्तम भाग



# श्री भैरव यंत्र-मंत्र साधना खण्ड

## यंत्र मंत्र का परिचय शक्ति और महत्व

उपासकों ! आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से "यांत्रिक विकास" की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। इस यांत्रिक शक्तियों का निर्माण "देवासुर संग्राम" से पूर्व ही हो चुका था। उस समय देवि-देवताओं ने ऐसे स्वचालित यन्त्रों का निर्माण किया जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण "सुदर्शन चक्र, अग्नि वाण, ब्रह्म शक्ति" आदि है।

पूर्व काल के मूल यांत्रिक परिभाषाओं को लेकर आज के वैज्ञानिकों ने परमाणु बम, हाईड्रोजन बम, न्यूट्रान बम आदि विश्व संहारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटे आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है। इस यंत्रों को हम "भौतिक यंत्रों" के नाम से जानते हैं।

परन्तु आज इस परम पवित्र "शनि ग्रन्थ" में जिन यंत्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ, उसका नाम "सिद्ध यंत्र" है। जो आड़ी-तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है। इस सिद्ध यंत्र को यही कल-पुर्जे चलाते हैं। "भौतिक यंत्र" दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा "सिद्ध यंत्र" मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

"सिद्ध यंत्रों" में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है। ये यंत्र जो इतनी विस्फोटक उर्जा अपने गर्भ में छुपाए हुए हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका ?

यंत्रों को समझने से पहले हमें मंत्र संसार में पर्दापन करना होगा, तभी हम इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

## यंत्र के सूक्ष्म शब्द और अंकों का महत्व

पाठकों ! यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक "देवी और देवता हैं।" जैसा वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं कि "H.Q." का क्या तात्पर्य है। उसी प्रकार एक

"तांत्रिक" ही समझ सकता है कि "फ्रीं", "ह्रीं", "क्लीं" और "श्रीं" क्या है। पाठकों ! ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी के स्वरूप हैं। जैसे फ्रीं और क्रीं का मतलब कात्यायनि भगवति काली, "श्रीं" का मतलब लक्ष्मी और ह्रीं भगवती दुर्गा से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतना हीं नहीं, यंत्र के "लाईन", "त्रिकोण" और "भुपुर" आदि का भी बहुत विशाल और अद्‌भुत अर्थ है। जैसे "बिन्दु" का मतलब ब्रह्मा, "त्रिकोण" का मतलब शिव और "भुपुर" की तुलना भगवती से की गई है। उस यंत्रों का रेखा चित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखा चित्र हैं, और सूक्ष्म सशक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गई है कि आज इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया।

भारतीय विज्ञान यन्त्रों को मांसल नहीं करना रेखा चित्रों को ठोस रूप नहीं देता, बल्कि उसके माध्यम से "शक्ति के बीज" को टटोलता है और उसे सक्रिय करता है। परन्तु हमारा विज्ञान अभी तक यह जान नहीं पाया है कि किसी पदार्थ की अन्तःशक्ति को किस वातावरण और विधि से प्रकट किया जा सकता है।

पाठकों! "यंत्र-मंत्र की शक्तियाँ" तुरन्त लाभ प्रदान करती हैं, इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए। अपने अनुसंधान के अनुसार यंत्र-मंत्र पर आधारित कई पुस्तकें मैं लिख चुका हूँ, जो अमित बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनसे भारत ही नहीं संसार के कोने कोने के पाठक गण लाभ उठा रहे हैं। क्योंकि पुस्तकों में मैंने केवल उसी यंत्रों-मंत्रों का वर्णन किया है जिसकी सिद्धि स्वयं प्राप्त की है। वर्तमान समय में भी हजारों दुखी लोग पत्रों द्वारा हमसे सम्पर्क स्थापित कर, स्वयं मिलकर, "सिद्ध यंत्र" प्राप्त कर गारंटी के साथ लाभान्वित हो रहे हैं और आप भी किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु संपर्क स्थापित कर, यंत्र प्राप्त कर दुखद जीवन को सुखी बना सकते हैं। यह परम पवित्र ग्रन्थ श्री शनिदेव जी के विषयों पर आधारित है, अतः इसमें मात्र "शनिदेव" के अमोध यंत्र-मंत्र की विस्तृत चर्चा करेंगे।

## यंत्र लिखने का विधान

पाठकों !"श्रद्धा" यंत्रों का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना "जीवन" है। यंत्रों में रेखाओं, बीजों, बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है।

यंत्र के प्रति सन्देह करने पर यंत्र मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि—"कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत"। क्योंकि यंत्र लिखते समय जरा सी भी असावधानी मौत के मुँह में झोंक देता है। इसलिए यंत्र की साधना की अभीष्ट सिद्ध की प्राप्ति हेतु किसी सिद्ध गुरू से दीक्षा लेकर ही "यंत्र निर्माण" करना चाहिए। यंत्र की प्रयोग विधि, निर्माण विधि

पुस्तकों में मिलती जरूर है, किन्तु पुस्तकों को मात्र पथ प्रदर्शक ही समझें सिद्धि दाता नहीं। सिद्धि का ज्ञान और दिशा तो एक गुरू ही निर्धारित कर सकता है। यदि आप आवश्यकता समझें तो यंत्र-मंत्र की सिद्धि में हम से परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। मैं यंत्र-मंत्र के प्रसार-प्रचार और विस्तार के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।

यंत्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों को उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएँ शुद्ध भाव से खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएँ ही मनुष्य के अन्तः करण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती हैं। इस समय मन तथा चित्र के सहयोग से आसक्ति उत्पन्न होती है और अहंकार तथा बुद्धि के सहयोग से भाव तत्व तथा उदय होता है, [पूर्ण जानकारी हेतु पढ़े-वाई. एन. झा. ''तूफान'' द्वारा रचित—''यंत्र-मंत्र द्वारा भाग्य बदलिए'' और ''विपत्ति नाशक टोटके''] तथा अन्तः करण निर्मल हो जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

## विभिन्न प्रकार के सिद्ध भैरव मंत्र

साधकों! भगवान भैरव जी की आराधना उपासना करते समय सभी क्रियाएँ मंत्रों के स्तवन द्वारा की जाती है, जबकि सभी सहस्त्र नाम आदि भी मंत्रों का समूह ही होते हैं। ये मंत्र संस्कृत के श्लोकों के रूप में होते हैं, परन्तु जपे जाने वाले मंत्रों का स्वरूप इनसे एकदम भिन्न होता है। पांच-सात अक्षरों से लेकर प्रायः एक पंक्ति तक के होते हैं ये जपे जाने वाले मंत्र। इनकी शक्ति और महत्व का वर्णन लगभग प्रत्येक प्राचीन शास्त्र में मिलता है। आकार में लघु होने के बावजूद भी इन मंत्रों की शक्ति अनन्त होती है।

नीचे लिखित मंत्रों की रचनाएं-

आरम्भ करने से पूर्व-''भैरव सिद्धि प्राप्त'' सिद्ध गुरू से - ''सिद्ध गुरू कवच यंत्र'' प्राप्त कर, शनिवार के दिन गले में धारण करें। रात्रिकाल 11 बजे घर के पवित्र कमरे में दक्षिण दिशा में आम लकड़ी से बना काले या लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित कर, लाल रंग का आसन बिछाकर उस पर भगवान भैरव की तस्वीर स्थापित करें। सुगन्धित अगरबत्ती व चमेली तेल का दीपक जगावें। इसके बाद कम्बल के आसन पर बैठकर रूद्राक्ष की 108 दानों वाली माला से जप आरम्भ करें। जप के अन्तिम दिन दीप दान और मंत्र जप का दशांस हवन भी सम्पन्न करें।

नीचे लिखित मंत्र साधना में ''षोड़शोपचार पूजन'' ना भी कर सकते हैं तब पर भी साधना जरूर मिलती है-

**1. सर्व बाधा निवारक मंत्र**

**''ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रौं नमः।''**

**नोट**-ऊपर लिखित मंत्र का ग्यारह हजार मंत्र जप सम्पन्न करने से समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं।

2. ग्रहों की अनिष्टता निवारक मंत्र :-

**"ॐ क्षौं क्षौं स्वाहा।"**

नोट-41 हजार मंत्र जप सम्पन्न करें।

3. श्री बटुक भैरव गायत्री मंत्र :-

शान्ति प्राप्ति, प्रसन्नता, प्रगति व सफलता हेतु।

**"ॐ ह्रौं ह्रौं नमः ॐ भूः भुवः ॐ स्वः ॐ ह्रीं बहुकाय विग्रहे आपदुद्धारणाय धीमहि तन्नो बटुकः" प्रचोदयात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ नमः ह्रौं ह्रौं ॐ।**

4. समस्त कामना प्राप्त कराने वाला भैरव मंत्र :-

**"ॐ नमो भैरवाय नमः।"**

**नोट**-उपरोक्त गायत्री मंत्र एवं समस्त कामना प्राप्त कराने वाला भैरव मंत्र का 41 हजार मंत्र जप सम्पन्न कर दशांश हवन करें।

5. पाप नाश हेतु श्री भैरव मंत्र :-

**"ॐ ह्रीं बटुक! शापं विमोचय विमोच ह्रीं क्लीं।"**

**नोट**-एक लाख ग्यारह हजार मंत्र जप पूर्ण कर हवन करें एवं "दीप दान" करें।

6. समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति कराने वाला श्री राजस भैरव मंत्र :-

**"ॐ नमो काल गौराक्षेत्रपाल बामं हाथं कान्ति जीवन हाथ कृपाल ॐ गन्ती सूरज थंभ प्रातः सायं रथभं जलतो विसाररारथंभ कुसी चाल पाषाण चाल के शिला चाल चाल हो चाली न चाले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिए चोखा मन्त्र ऐसाकुनी अबनार हसही॥"**

**नोट**-रोज एक माला मंत्र जप करते रहने से समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। यह मंत्र एक लाख जप करने से सिद्ध हो जाता है। प्रतिदिन प्रातः काल पवित्र होकर पूजनादि करने के पश्चात् यथाशक्ति संख्या में मंत्र का जप करना चाहिए। एक लाख जप पूर्ण हो जाने पर दश हजार मंत्र द्वारा हवन करने का विधान है। परन्तु मेरे रिसर्च के अनुसार [साधना अनुभव के अनुसार] साधक एक लाख जप पूर्ण करने के बाद दश हजार मंत्र जप और कर ले, इसके बाद हवन में एक हजार आहुतियाँ देकर साधना पूर्ण कर लें।

7. सर्व सिद्धि प्रदान कराने वाला अमोध चमत्कारी भैरव मंत्र :-

यह मंत्र अत्यन्त ही चमत्कारी है। दस हजार मंत्र जप सम्पन्न करने पर भगवान भैरव स्वयं प्रकट हो जाते हैं। साधकों को हमारी सलाह है कि जप करते समय जब भगवान भैरव देव जी भयंकर रूप धारण करके दर्शन दें तो भयभीत न हों अपितु पुष्पों की माला [लाल पुष्पों की माला] उनके गले में डाल कर तुरन्त ही उनके सामने

लड्डू रख दें। इस विधि से भगवान भैरव देव जी साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं और वर मांगने के लिए कहते हैं। उस समय साधक को चाहिए कि वह उनसे सदैव वशीभूत रहने का वचन ले लें। तत्पश्चात् अपने मन की अभिलाषा भैरव देव जी से कहें। भैरव देव जी साधक की उस अभिलाषा को तो पूर्ण करते ही हैं, भविष्य में भी उस साधक के वशीभूत रहकर उनके सभी कार्यों और मनोकामनाओं को पूर्ण करते रहते हैं।

पूर्ण मंत्र इस प्रकार है-

**"ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे। मेरा भेजा काल करै भेजा रक्षा करै। आन बांधूं बान बांधूं चलते फूल में जाये काठेजी पड़े थर-थर काँपे, हल-हल हिलै, गिर-गिर परै, उठ-उठ भगै, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस को बावला न करै तो माता काली की शय्या पै पग धरै। वाचा को चूके तो ऊमा सूखै। वाचा छोड़ कुवाचा करै, धोबी की नाद चमार के कूंडे में परै। मेरा भेजा बावला न करै तो रूद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कढ़ै, सिर की जटा टूट भूमि में गिरै, माता पार्वती के चीर पे चोट पड़ै। बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र इश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरू को॥"**

**नोट**-उपरोक्त मंत्र का 5 हजार जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। एक माला मंत्र जप करते हुए आहुतियाँ देने का विधान है। इसके लिए हवन कुण्ड में अग्नि जलाकर और मंत्र के अन्त में "स्वाहा" बोलकर आहुतियाँ देते हैं।

## भगवान भैरव एक दिवसीय मंत्र साधना

### [ रूद्रयामल तंत्र अनुसार ]

साधकों! "रूद्रयामल तंत्र" के अनुसार नीचे लिखित सभी मंत्र एक दिन व रात्रि तक में-साधना पूर्ण हो जाती है। परन्तु गुरू की आज्ञा के बिना और "सिद्ध गुरू कवच" धारण किए बिना साधना भूल से भी न करें।

**1. बांझ महिला को पुत्र प्राप्त कराने वाला मंत्र साधना**-साधकों! आधा पल हल्दी और उतना ही बचा [बछ] का चूर्ण गोमूत्र तथा गोघृत मिलाकर उसकी गोली बनाएं तथा उसे कमल की पुंखड़ी में रखकर बटुकनाथ की तस्वीर के समक्ष सोमवार के दिन रखें और [1000] एक हजार संख्या में "मूल मंत्र" का जप करें। बाद में उसे महौषधि के रूप में बांझ महिला को खिला देंगे तो पुत्र की प्राप्ति होती है। वह पुत्र आयुष्मान, धन-धान्य से युक्त, विद्या एवं बल से सम्पन्न तथा सुन्दर आकृति वाला होता है।

## 2. स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन प्रातः काल श्मशान में जाकर मूल मंत्र का दस हजार जप करें तथा अर्धरात्रि के समय जायफल, जावित्री तथा कनेर के फूल घृत में मिलाकर दशांश हवन करे तो शत्रु को स्तम्भन हो जाता है।

## 3. मोहन प्रयोग

सोमवार को मध्यान्ह काल के समय कूप जल से स्नान कर गुणी में बैठकर "मूल मंत्र" का दस हजार जप करे तथा महिष का घृत, दही और चीनी इनको मिलाकर हवन करे तथा हवन का तिलक करे तो जो देखे वही वश में हो जाये।

## 4. मारण प्रयोग

मंगलवार को अर्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर "मूल मंत्र" का दस हजार जप करे। घृत, खीर,लाल चन्दन व स्त्री के केश मिलाकर दशांश हवन करे तो काल के समान होने पर भी शत्रु अवश्य नाश को प्राप्त होता है।

## 5. आकर्षण प्रयोग

बुधवार को चार घड़ी सूर्य रहे तब सूने घर में जाकर मूल मंत्र का जप दस हजार करे। फिर घृत, खाँड, सनैली का फूल अथवा कनेर का फूल, बिल्व का फूल, इन सबकी दशांश आहुति दे तो अप्सरा भी आकर्षित हो जाती है।

## 6. वशीकरण प्रयोग

बृहस्पति वार को प्रातः काल सूर्योदय के समय नदी के किनारे जाकर "मूल मंत्र" का 10,000 जप करे तथा घृत, आंवला और बिल्व फल का दशांश हवन करे तो वशीकरण होता है।

## 7. उच्चाटन प्रयोग

शुक्रवार के दिन सायंकाल वट वृक्ष के नीचे बैठकर "मूल मंत्र" का 10.000 जप करे, फिर घृत, दूध, दही, ईख का रस, गोमूत्र और खीर मिलाकर दशांश हवन करे तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

## श्री भैरव मूल मंत्र

**ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा**

## श्री महा भैरव मूल मंत्र

**" ॥ॐ बं बं बं बटुक भैरवाय नमः कृष्ण भैरवाय नमः ॥"**

# श्री बटुक भैरव "दीप दान" विधि

## दीप दान माहात्म्य

जिस प्रकार तन्त्रों मे अन्यान्य प्रयोगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए भगवती पार्वती ने प्रश्न किए हैं और उनके उत्तर में शिव जी ने उत्तर देते हुए प्रयोग दिखलाए हैं, उसी प्रकार "रूद्रयामल" श्री पार्वती ने पूछा कि हे देव! ऐसा कोई प्रयोग बतलाइए कि जिसके करने से "षटकर्म साधना" सरलता से हो सके इसके उत्तर में भगवान शिव ने बताया कि हे देवि! आपत्ति के समय, विपत्ति के समय "दीपदान" करना चाहिए। इस प्रयोग के लिए तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, सूर्यादि ग्रह विचार आदि अपेक्षित नहीं है और इसी सम्बन्ध में विस्तार से पात्र निर्माण वस्तु, पात्रमान, आकार, घृत-तेलमान, वर्तिका मान, आधार भूमि [वेदी] विघ्न नाशन के लिए अन्य देव पूजन एवं दीप दान, कीलक खनन आदि अनेक बातें समझाई हैं।

## दीप दान परिचय

हमारे सभी उपासना कर्मों में "दीपदान" का बड़ा महत्व है। सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये तीनों तेजोमय देव कर्म साक्षी हैं। दीपदान के दो प्रकार हैं-1. पूजा अथवा पाठ के आरम्भ से पूर्व और 2. पाठ-पूजन समाप्ति के पश्चात्। वैसे कामना विशेष की दृष्टि से दीप दान का स्वतंत्र विधान भी है। यहाँ हम कामना-विशेष से सम्बद्ध प्रयोग की विधि दे रहे हैं।

## दीपदान काल

(क) ऋतु :-बसन्त, हेमन्त, शिशर, वर्षा और शरद् ये ऋतुएँ दीपदान के लिए उत्तम मानी गई हैं।

(ख) मास :-बैसाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्ग शीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मास दीपदान के लिए उत्तम हैं।

(ग) पक्ष :-शुक्लपक्ष उत्तम है, कृष्णपक्ष मध्यम।

(घ) तिथि :-प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, द्वादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा उत्तर तिथि है।

(ङ) नक्षत्र :-रोहिनी, आद्रा पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और श्रवण उत्तम है।

(च) योग :-सौभाग्य, शोभन, प्रीति, सुकर्म, घृति, वृद्धि, हर्षण, व्यतीपाल और वैधृत उत्तम है।

(छ) विशेष :-सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, संक्रान्ति, कृष्णपक्ष की अष्टमी, दुर्गोत्सव नवरात्रि एवं महापर्व पर विशेष लाभप्रद।

(ज) समय :-प्रातः, सायं, मध्य रात्रि तथा अन्य यज्ञ कर्म की पुर्णाहुति से पूर्व।

## श्री भैरव दीपदान सामग्री

1. कपिला गौ का गोमय, (गोबर) इमली और आंवले का चूर्ण, कामना के अनुसार दीप पात्र, कामना के अनुसार घृत अथवा तेल, संकल्पानुसार बत्तियाँ, गुरू कवच सिद्ध यंत्र, चावल, रक्त चन्दन, करवीर (कनेर का पुष्प), लाल फूल, रेशमी लाल वस्त्र, पंचगव्य, सलाका बत्ती चलाने के लिए, एक जोड़ा वस्त्र, नारियल, बिल्व फल, रोली चन्दन, तांबे का कलश, सुपारी, अष्टगंध, ऋतु फल, पंच पल्लव, कुंकुम, सिन्दूर, ब्राह्मण वरण सामग्री, दक्षिणा, नैवेद्य, पान का पत्ता, कपूर, खैर की लकड़ी से बने आठ कीलें, एक हाथ लम्बा भैरव दण्ड, माह का दाल व चावल पकाए हुए, तथा छूरी-कटार आदि।

## दीपक सम्बन्ध शास्त्रों का कुछ प्रमाण

[ श्लोक ]

**अष्टपलं घृत दीपं यात्रा काले प्रकल्पयते।**
**तस्य मार्गे भयं नाशित स्वस्थस्य गृहमाण्नुयात ॥१॥**

**हिन्दी अनुवाद**-8 पल घृत का आठ पल के धातु पात्र में "दीप दान" करने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं रहता है तथा दीपदान कर्ता सकुशल अपने घर लौट आता है।

**नोट**-1 पल 4 तोले का होता है।

[ श्लोक ]

**दशपल मितं तैलं प्रत्यहं सप्तवासरे।**
**राज्यवश करं क्षिप्रं यदि साक्षाज्जगत्पतिः ॥२॥**

**हिन्दी अनुवाद**-दस पल तेल से प्रतिदिन दस पल के पात्र में सात दिन तक [रात्रि में] "दीपदान" करने से यदि राजा साक्षात जगत्पति हो, तब भी वह वश में हो जाता है।

[ श्लोक ]

**"दशपल मिते पात्रे बुघ्नोच्छाये तु त्रिंशवत्।"**

अर्थात्-इस दस पल मान वाले पात्र की ऊँचाई 6 अंगुल होनी चाहिए तथा तीन तंतुओं से बनी हुई बत्ती का प्रयोग करना चाहिए।

[ श्लोक ]

**एकादश पले पात्रे बुघ्नोच्छायं तु पूर्ववत्॥३॥**
**नृपलमिते तैले ग्रहपीड़ा निवारणम्**
**द्वाविशत्पल सङ्ख्याकं तैल तत्र तवर्धकम्॥**
**चतुर्विंशतिसङ्ख्या कैस्तन्तु भिर्वतिका भवेत्॥४॥**

**हिन्दी अनुवाद**-6 अंगुल की ऊँचाई वाले 11 पल के पात्र में 16 पल तेल से "दीपदान" करने पर "ग्रह पीड़ा" का निवारण होता है।

[ श्लोक ]

**मारणोच्चाटने चैव मानभेतत् प्रकीर्तितम्।**
**नृपपल मिते पात्रे उच्छ्रायं च रसालङ्गुम॥५॥**

**हिन्दी अनुवाद**-32 पल के पात्र में 16 पल तेल से 28 तन्तुओं की बत्ती बनाकर "दीपदान" करनें से मारण, उच्चाटन आदि कार्य होते हैं।

[ श्लोक ]

**विंशतिपल मिते दीपे प्रत्यहं विंशतिर्दिनम्।**
**सर्वरोग्य विनाशाय क्षयापस्मार-दारणे॥६॥**

**हिन्दी अनुवाद**-20 पलघृत से 16 पल के पात्र में, जिसकी ऊँचाई पर 6 अंगुल की हो, ऐसा दीप 20 दिन तक अर्पित करने से क्षय एवं अपस्मार जैसे अति दारूण रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

[ श्लोक ]

**एकदाश पले पात्रे उच्छायं चैव पूर्ववत्।**
**पंचविंशत्पले तेले दीपे भूतादि नाशनम्॥७॥**

**हिन्दी अनुवाद**-ग्यारह पल से बनाए गए पात्र में दीपदान करने से भूतादि के उपद्रव नष्ट होते हैं। ["सर्वजन वशीकरण" में भी यह उपयोग सार्थक सिद्ध होता है।]

[ श्लोक ]

**त्रिंशतपलमिते पात्रे बुघ्नोच्छाये तु पूर्ववत्।**
**त्रिंशतपलमिते तैले क्षुद्र रोग विनाश कृत॥८॥**

हिन्दी अनुवाद-6 अंगुल की ऊँचाई वाले 30 पल के पात्र में 30 पल तेल का दीपदान करने से ''क्षुद्र रोग'' नष्ट होते हैं।

[ श्लोक ]

**त्रिंशतपलमिते पात्रे मानं चैव तु पुर्ववत्।**
**पञ्चाशतपलं गव्यं वश्ये चौर्य्यादिकर्मणि ॥९ ॥**

हिन्दी अनुवाद-6 अंगुल की ऊँचाई वाले 30 पल के पात्र में 50 पल घृत का दीपदान करने से राजवश्य एवं चोरी की शान्ति होती है।

[ श्लोक ]

**त्रिंशत्पलमिते पात्रे दिनान्ये कोनविंशति।**
**कन्याभिकांक्षी तैलेन प्रत्यहं दीपभाचरेत्॥**
**ईप्सितां लभते कन्या भैरवस्य प्रसादतः ॥१० ॥**

हिन्दी अनुवाद-30 पल के पात्र में 19 दिन तक प्रतिदिन तेल का दीपदान करने से कन्या प्राप्ति के इच्छुक को श्री भैरव की कृपा से इच्छित कन्या प्राप्त होती है।

[ श्लोक ]

**षष्टिपलमिते पात्रे बुघ्नोच्छाये नवाङ्गुलम् ॥११ ॥**
**अङ्गुलानि चतुर्विंशत्यायामे परिकल्पयेत्।**
**पञ्चसप्तमिते तैले सर्वशत्रु विनाशनम् ॥१२ ॥**

हिन्दी अनुवाद-नौ अंगुल की ऊँचाई वाले 60 पल के साथ चौबीस अंगुल चौड़े पात्र में 75 बत्तियां वाला दीपक जलाने से सर्वशत्रुओं का नाश होता है।

[ श्लोक ]

**द्विपञ्चाशत्पले पात्रे बुघ्नोच्छाये तु षष्टिवत्।**
**शतपलमिते तैले दीपाद् वैरि विनाशनम् ॥१३ ॥**

हिन्दी अनुवाद-नौ अंगुल की ऊँचाई वाले बावन पल के पात्र में एक सौ पल तेल भरकर दीपदान करने से शत्रु नाश होता है।

[ श्लोक ]

**सहस्त्रपल दीपे तु पांत्र शतपलं स्मृतम्।**
**शत्रुगृहीत राज्यस्य पुरः प्राप्तिश्च सुन्दरि।**
**सर्वकर्मणि सिद्धि स्याद् दीपे पल सहस्त्र के ॥१४॥**

हिन्दी अनुवाद-एक सौ पल के पात्र में एक सौ पल घृत से दीपदान करने पर

हे सुन्दरि। शत्रु के द्वारा छीने गये राज्य को पुनः प्राप्ति होती है तथा सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

## बत्ती बनाने की विधि

[ श्लोक ]

**तत्र त्रिः प्रक्षलितेन सूत्रेण वय-विद्वेशन-मारणोच्चाटन-स्तम्भन-शान्तिषु क्रमेण सितपीत माञ्जिष्ठ-कौसुम्भ-कृष्ण-कुर्बुर-वर्णेन तदलाभ सर्वत्र श्वेतेनैव सूत्रेण-कार्यं। तत्र पञ्चदश विंशत त्रिंशच्चवा रिशत-पञ्चास दष्टोत्तर शताष्टोत्तर सहस्त्रान्यतम संख्यका स्तन्तुकः॥ एकत्रिपञ्च सप्ताद्येकोत्तर शतपर्यन्तम् विष-मसंख्यावर्तीः पात्रे क्षिपेत्। नित्य दीपे तु द्विच-त्वरिंशदे कवि शतितन्तुभिर्वा विषमसंख्या वर्तीः पात्रे क्षिपेत्॥**

**हिन्दी अनुवाद**-दीपक की बत्तियां सूत या डोरे की बनती हैं। डोरे को तीन बार धोकर क्रमशः वशीकरण में श्वेत, विद्वेशन में पीत, मारण में हरा [मजीठ के समान], उच्चाटन में कुसुम्बी [केशरिया लाल], स्तम्भन में काला और शान्ति में चितकबरा रंग की बत्ती बनाएं तथा ये रंग न मिले तो सफेद सूत से बत्ती बनावें। फिर उस सूत के 15, 20, 30, 40, 50, 108 अथवा 1000 तन्तुओं की बत्ती बनाएं। ये तन्तु इकाई की संख्या में होनी चाहिए। नित्य दीप में 42, 21 अथवा विषम संख्या वाली बत्ती होनी चाहिए।

## बत्ती चलाने के लिए शलाका निर्माण विधि

[ श्लोक ]

**षोडशाड गुलमाना च सौवर्णी तु शलाकिका।**
**राजतौ दुम्बरी वाऽपि सुलक्षा बुध्नका तथा॥**
**तीक्ष्नाग्रा सरला मध्ये त्रिशूलेनाङ्किता तथा॥**

**हिन्दी अनुवाद**-16 अंगुल लम्बी सुवर्ण, चांदी अथवा उदुम्बर [उमर] की उत्तम दिखने वाली, सीधी, आगे से तीखी, मध्य में त्रिशूल से अंकित तथा मूल में स्थूल बत्ती चलाने की सलाई बनावें।

## दीपक का मुख विचार विधि

[ श्लोक ]

**पूर्वाभिमुखे तु सर्वाणितः स्तम्भोच्चाटन चोस्तथा।**
**रक्षाविद्वेशयोः कार्यं पश्चिमास्यं प्रदीपकम्॥**
**लक्ष्मी प्राप्ता वुत्तरास्यं मारणे दक्षिणा मुखम्॥**

**हिन्दी अनुवाद**-पूर्व दिशा में दीपक का मुख रखने से सर्वसुख प्राप्ति होती है। स्तम्भन, उच्चाटन, रक्षण तथा विद्वेषन में पश्चिम दिशा की ओर शिक्षक का मुख रखना चाहिए। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए उत्तर मुख तथा मारण में दक्षिण मुख दीपक रखना चाहिए।

## दीप शकुन विचार

"डमार तंत्र"-में दीप स्थापना के समय विविध रूप से शकुनों का ज्ञान दिया गया है, जिनमें कहा गया है कि- दीप स्थापना के समय अशुभ न बोलें। ब्राह्मण का आगमन शुभ है। मलेच्छ का आना, बिल्ली या चूहे का आना अशुभ है। इसी प्रकार दीप की ज्वाला यदि सीधी एवं शुद्ध हो तो उत्तम। तिरछी, धुएँ से युक्त, काली, चट-चट करने वाली, तत्काल बुझ जाने पर तथा दीप पात्र के ढुलक जाने पर अथवा घृत या तेल झरने को अशुभ कहा गया है। अतः सावधानी से यह कार्य करें।

## भगवान भैरव दीपदान पूजन विधि

पीछे पृष्ट पर वर्णित शुभ मुहुर्त्त में ही "दीपदान" पूजन कर्म आरम्भ करें। दीपदान कर्म के आरम्भ दिन से पूर्व वाले दिन सभी सामग्री जुटाकर वैदिक पंडित को निमंत्रित करें। पूजन वाले दिन निवास स्थान के पवित्र कमरे में आम लकड़ी से बना लाल रंग से रंगा सिंहासन स्थापित करें। यह स्थापना दक्षिण दिशा में करें। सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछाकर भगवान भैरव की तस्वीर स्थापित करें।

दीपवेदी विचार-

जहाँ दीपक की स्थापना करनी हो उस स्थान को शुद्ध कर सवा हाथ की सम चौरस चार अंगुल की ऊँचाई वाली दीपबेदी बनायें तथा उस पर कपिला गाय के गोबर से लीपकर लाल चन्दन से "अष्टदल कमल" बनावें। यह अष्टदल कमल चावल को लाल रंग से रंगाकर भी बना सकते हैं। उस पर तांबे की कलश स्थापित कर दीपक

उसके ऊपर स्थापित करें। पंडित द्वारा भगवान भैरव की षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न करावें। इस पूजन में-भैरव प्रणाम मंत्र, विनियोग, ऋष्यादि न्यास निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें-

### विनियोग मंत्र

**ॐ अस्य श्री बटुक भैरव दीपदान मंत्रस्य मन्मय ऋषिः पडिक्तश्छन्द आपदुद्वार बटुक भैरवो देवता बं बीजं ह्रीं शक्तिः प्रणवः कीलकम् मम सर्वमनोरथ सिद्धये दीपदाने विनियोगः।**

### ऋष्यादि न्यास

**मन्मथ ऋषये नमः [ शिरसि ]।**

**पडिक्तच्छन्दसे नमः [ मुखे ]।**

**आपदुद्दार बटुक भैरव देवतायै नमः [ हृदये ]।**

**बं बीजाय नमः [ गुह्ये ]।**

**ह्रीं शक्तये नमः [ पादयोः ]।**

**ॐ कीलकाय नमः [ नाभौ ]।**

**विनियोगाय नमः [ सर्वाङ्गे ]।**

**नोट**-इसके पश्चात् करन्यास, अंगन्यास, तथा मूलमंत्र न्यास श्री बटुक भैरव यंत्र साधना के अनुसार ही सम्पन्न करें।

तदनन्तर पूर्वोक्त दीप वेदी पर दीप की पूजा कर वेदी की आठों दिशाओं में खैर की लकड़ी के बने हुए कीलें गाड़ कर पूजा करें। आठों दिशाओं की पूजा विधि इस प्रकार है-

पहले आठों कीलों पर या उनके पास पूर्व दिशा से आरम्भ कर क्रम से काले माह, चने और दही में सिन्दूर डालकर थोड़ा सा वह अंश तथा पकौड़े का नैवेद्य बलि के रूप में अर्पित करें। फिर वहां दीपक जलाकर रखें और लाल चन्दन से मिले हुए अक्षत एवं करवीर के (कनेर) पुष्पों से - "अस्त्राय फट्"-बोलते हुए गन्धादि द्वारा [जल, अक्षत, चन्दन, कनेर पुष्प, धूप-दीप एवं नैवेद्य द्वारा] नीचे लिखित अनुसार पंचोपचार पूजन करें-

**1. पूर्व दिशा में**-सर्व प्रथम जयन्ती भैरव का पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए उन्हें नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं जयन्ती भैरव! एहि-एहि! इमं सदीप माषान्न-भक्तवलि गृहण 2 मां रक्ष-रक्ष अभीष्ठ कुरु स्वाहा,**

**॥ॐ जयन्ती भैरवाय नमः॥**

**2. आग्नेय कोण में**-अघोर भैरव का पूजन पंचोपचार करके निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं अघोर भैरव! एहि-एहि इमं सदीप भाषान्न-भक्तवलि गृहण 2 मां रक्ष-रक्ष अभीष्ठं कुरु-कुरु स्वाहा।**

**॥ॐ ह्रीं अघोर भैरवाय नमः ॥**

**3. नैऋत्य कोण में**-सर्वप्रथम ''भीषण भैरव'' का पंचोपचार पूजन करें फिर निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं भीषण भैरव! एहि-एहि इमं सदीप माषान्न-भक्तवर्लिं ग्रहण 2 मां रक्ष-रक्ष 2 अभीष्ट कुरू कुरू स्वाहा।**

**॥ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः ॥**

**4. पश्चिम दिशा में**-पश्चिम दिशा में असितांग भैरव का पंचोपचार पूजन कर निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें।

**ॐ ह्रीं असितांग भैरव! एहि-एहि इमं सदीप माषान्न भक्तवलिं गृहण 2 मां रक्ष 2 अभीष्टं कुरू-कुरू स्वाहा।**

**॥ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः ॥**

**5. वायव्य कोण में**-वायव्य कोण में श्री प्रचण्ड भैरव का पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं प्रचण्ड भैरव! एहि-एहि इमं सदी माषान्न भक्तवलि गृहण-2 मां रक्ष-रक्ष, अभीष्ट कुरु-कुरू स्वाहा ॥ॐ ह्रीं प्रचण्ड भैरवाय नमः ॥**

**6. उत्तर दिशा में**-उत्तर दिशा में कराल भैरव का पंचोपचार पूजन कर निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं कराल भैरव! एहि-एहि! इमं सदीप माषान्न भक्त बलिं गृहण-2 मां रक्ष 2 अभीष्ट कुरू-कुरू स्वाहा॥ॐ ह्रीं कराल भैरवाय नमः ॥**

**7. ईशान कोण में**-ईशान कोण में श्री कपाल भैरव का पंचोपचार पूजन कर निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं कपाल भैरव! एहि-एहि! इमं सदीप-माषान्न-भक्त बलि गृहण-2 मां रक्ष-रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा॥ ॐ ह्रीं कपाल भैरवाय नमः ॥**

8. दक्षिण दिशा में श्री चामीकर भैरव का पंचोपचार पूजन कर निम्न मंत्र द्वारा नमस्कार करें-

**ॐ ह्रीं चामीकर भैरव! एहि-एहि! इमं सदीप माषान्न भक्त बलि गृहण-गृहण मां रक्ष-रक्ष, अभीष्टं कुरु-कुरु स्वाहा।।ॐ श्री चामीकर भैरवाय नमः।।**

उपरोक्त विधि अनुसार दीपक सहित ''बलि'' समर्पण करके - गुरभ्यो नमः। परम गुरुभ्यो नमः। परागुत्पर गुरुभ्यो नमः। परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः। ग्लौं गणपतये नमः। क्षौं क्षेत्रपालाय नमः। इस प्रकार बोलते हुए नमस्कार करें।

**नोट**-तत्पश्चात् दीपपात्र में गायत्री मंत्र से गोघृत अथवा तेल भरकर वर्तिखा रखकर जितनी बत्तियां हो उतनी ही मंत्र की आवृत्ति करें। फिर मूल मंत्र बोलकर दीपक के अनुरूप शलाका रखें और दक्षिण की ओर धार वाली छूरी पास में रखकर अथवा गाड़कर - ''ॐ ह्रीं ह्रीं छुरिके मम शत्रुच्छेदिनि रिपून निर्हलय-2 मां पाहि-पाहि स्वाहा'' इस मंत्र से छूरी की पूजा करें।

निम्न मंत्र से ''शलाका'' का पूजन करें-

**।। ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वांगसुन्दर्ये शलाकायै नमः।।**

नोट-''गायत्री मंत्र'' से दीपक प्रज्जवलित करें।

**[ दीपक प्राण प्रतिष्ठा मंत्र ]**

**ॐ आं ह्रीं क्रों चं रं लं वं शं षं सं हौं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों प्राणा इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ॐ आं ह्रीं क्रों जीव इह स्थितः अस्य सर्वेइन्द्रियाणि बाङ् मनस्त्वक चक्षुः श्रोत जिह्वां घ्राणा पाणिपाद-पायू पस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।**

मंत्र से दीपक में अंगसहित देव की प्राण प्रतिष्ठा करके दीपक का निम्न मंत्र द्वारा पूजन करें।

**[ दीप पूजन मंत्र ]**

**ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञाय प्रचण्ड पराक्रमाय बटुकाय इमं दीपं गृहाण सर्व कार्याणि साधय-साधय, दुष्टान् नाशय-2, त्रासय-2, सर्वतो मम रक्षां कुरू-कुरू हुं फट् स्वाहा।।**

**[ दीप नमस्कार मंत्र ]**

**गृहाण दीप देवेश। बटुकेश महाप्रभो।**
**ममाभीष्टं कुरू क्षिप्रभापद्भ्यो मां समुद्धर।।**

अब "मूलमंत्र" बोलकर- "बटुकाय इमं द्वीपं निवेदयामि नमः" ऐसा कहते हुए जल छोड़ें।

"भो बटुक! मम सम्मुखो भव, मम कार्य कुरू-कुरू, इच्छितं देहि-देहि, मम सर्वविध्नान नाशय-2 स्वाहा।" [इस मंत्र से पुनः प्रणाम करें]

### [ श्री भैरव दण्ड पूजा ]

**नोट**-दीप पात्र के दाहिने भाग में चार अंगुल ऊपर के स्थान पर एक हाथ लम्बा दण्ड नीचे लिखित मंत्र पढ़कर स्थापित करें तथा पंचोपचार पूजन करें।

**॥ॐ ह्रीं भैरव दण्डाय नमः ॥**

### [ श्री भैरव दण्ड प्रार्थना मंत्र ]

**येण दण्डेण भो नाथ। कम्पते भुवन्त्रयम्।**
**तं गृहीत्वाऽथ भो स्वामिन्। शीघ्रं कार्य कुरूष्व मे॥**

**नोट**-उपरोक्त मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि अर्पित करें।

इसके पश्चात् संकल्पानुसार दीप जलाता रहें और यथाशक्ति भैरव मंत्र का जप करें, स्तोत्र का पाठ करें।

### [ दीप विसर्जन मंत्र ]

**नोट**-हाथ जोड़कर निम्न श्लोक का पाठ करें-

### [ श्लोक ]

**श्री भैरव नमस्तुभ्यं सत्वरं कार्यसाधक।**
**उत्सर्ययामि ते दीपं त्रायस्व भवसागरात्॥**
**मन्त्रेनाक्षार-हीनेन पुष्पेण विकलेन् वा।**
**पूजितोऽसि मया देव! तत्क्षमस्व मम प्रभो॥**

**नोट**-अब हाथ जोड़कर भगवान भैरव की प्रार्थना करें-

### [ श्री भैरव क्षमा प्रार्थना मंत्र ]

**यदुक्त देव भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।**
**निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण कृप्या प्रभो॥१॥**
**आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।**
**पूजां चैव न जानामि त्वं गति परमेश्वरः॥२॥**
**अपराध सस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।**
**दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरः॥३॥**
**यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्रहीनं च यद् भवेत्।**
**तत्सर्व क्षम्यतां देव। प्रसीद परमेश्वर॥४॥**

**क्षमस्व देव देवेश। क्षमस्व भुवनेश्वर।**
**तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥५ ॥**

**हिन्दी अनुवाद**-हे भैरव नाथ। मैंने भावपूर्वक जो स्तुति की और पत्र, पुष्प, फल, जल, नैवेद्य अर्पित किया है उसे ग्रहण करो। मैं आपके आवाहन, विसर्जन और पूजन विधान को नहीं जानता हूँ। अत: हे परमेश्वर आप ही मेरी गति हैं। मेरे द्वारा प्रतिदिन हजारों अपराध किए जाते हैं किन्तु हे परमेश्वर। "यह मेरा दास है-" ऐसा मानकर क्षमा करें। मेरे इस कार्य में जो अक्षर, पद या मात्रा सम्बन्धी त्रुटि हुई हो, उन सबको क्षमा करो तथा हे परमेश्वर! मुझ पर कृपा करो। हे देव देवेश। क्षमा करो। हे भुवनेश्वर। क्षमा करो। आपके चरण कमलों में मेरी अटल भक्ति बनी रहे। यही मेरी प्रार्थना है।

*॥ इति श्री भैरव दीप दान पूजन सम्पूर्णम ॥*

## [ एक प्रचलित दंत कथा ]
## श्री भैरव जी और माँ वैष्णो देवी

पाठकों! यह कथा "माँ वैष्णो देवी जी" के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रचलित है। इस कथा में जिस "भैरव देव" का वर्णन है वह "भगवान भैरव" नहीं बल्कि - "भैरवनाथ योगी" थे, जो बहुत बड़े तांत्रिक थे। इनका सम्बन्ध गुरू गोरखनाथ जी के शिष्यों से था। उनके अपने 360 शिष्य थे। उस तांत्रिक ने अपने प्रशंसकों और चाहने वालों को जब "माँ वैष्णों देवी" की ओर भागते देखा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी अपनी ही मान्यता कम होने लगी है।

इसी कारण उसे माँ वैष्णो देवी से चिढ़ सी होने लगी। वह ईर्ष्या की आग में इतना अंधा हो गया कि माँ वैष्णों देवी के हर भक्त को कष्ट पहुंचाने लगा। यही नहीं विष्णु भगवान के उपासकों को भी तंग करने लगा। चारों ओर यह खबर आग की भांति फैल गई कि "भैरव योगी" बहुत अत्याचार करने लगे हैं, उनसे कोई भी माँ भक्त बच नहीं पा रहा है।

आम आदमी की तो बात ही छोड़ो। उसके अत्याचारों से साधु संत धर्मात्मा लोग भी कांप उठे थे। उस योगी ने मांसाहार का इतना प्रचार कर दिया कि लोग अधर्म की राह पर चलते हुए मांसाहारी होने लगे और मांसाहारी लोग नशा करके तरह-तरह के अपराध भी करने लगे। अत्याचारों और अपराधों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। धर्म की धरती पर बढ़ते पाप देखकर सब देवि-देवताओं को दु:ख होने लगा था।

उन दिनों उस क्षेत्र में राज कुमारी चन्द्र भागा का राज्य चलता था। उसने जैसे ही

अपने राज्य में बढ़ते अत्याचारों और पापों को देखा तो दुःखद होकर उसने माँ दुर्गे से प्रार्थना की – "हे माँ दुर्गे! हे माँ शक्ति!! आप ही हमें इस पाप के नरक से बचाओ। देखो चारों ओर लोग अपराधी बनते जा रहे हैं। इस पाप की नगरी में भक्तों पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। यदि आपने इनका कोई उपाय न किया तो वह दिन दूर नहीं जब चारों ओर पापी ही पापी नजर आयेंगे। धर्म का नाश हो जायेगा। पाप का राज्य होगा। धर्म को बचाओ माँ दुर्गे। "

राजकुमारी की इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए माँ शक्ति ने चन्द्रभागा [चिनाव] नदी के तट पर अपना निवास बना लिया। माँ दुर्गे का निवास जैसे ही वहां पर हुआ वैसे ही उनके श्रद्धालु भक्त भागे-भागे आने लगे, वहां पर हर रोज हजारों भक्त माँ के दर्शनों को आते।

भैरव नाथ तांत्रिक ने जैसे ही माँ भक्तों की इतनी बड़ी संख्या को देखा तो उसकी अपनी गद्दी कांपने लगी और वह सोचने लगा कि – "अब इस गद्दी को कैसे बचाया जाये। उसके सारे के सारे उपासक तो देवी माँ की ओर भागे जा रहे हैं। ऐसे में वह करे तो क्या करे ?" यदि देवी माँ की भक्तों की संख्या इसी प्रकार से बढ़ती रही तो वह दिन दूर नहीं जब वह जीवित ही मृत घोषित हो जायेगा।

ऐसे में उसकी राक्षस बुद्धि में एक योजना आयी कि क्यों न मैं अपनी शक्ति से देवी की अग्नि परीक्षा लेकर सब लोगो् के सामने उसे हार मानने पर मजबूर कर दूँ। यह सोचकर भैरव तांत्रिक माँ के दरबार में और लोगों के साथ पहुँच गया। माँ दुर्गा तो अपने हर भक्त का स्वागत करती थी। ऐसे में भैरव तांत्रिक योगी को आते देखकर उन्होंने उसका भी पूरा-पूरा स्वागत किया। माँ के दरबार में सब लोग बराबर हैं, वहां पर कोई छोटा नहीं कोई बड़ा नहीं। माँ क्या यह जानती नहीं थी कि भैरव तांत्रिक जो एक सिद्ध योगी है, केवल परीक्षा लेने और सब के सामने उसे हराने की भावना लेकर आ रहा है।

माँ दुर्गा के सामने जाकर जैसे ही मांस और मद्य का उपयोग करने की बात की तो माँ ने बड़े ही धैर्य से योगी का सम्मान करते हुए कहा-

"हे बाबा गोरखनाथ जी के शिष्य। एक योगी होने के कारण मैं आपका सम्मान करती हूँ। परन्तु मैं यह बात कभी भी सहन नहीं कर सकती कि कोई मेरे दरबार में आकर मेरी ही मर्यादा को भंग करे।"

देवी के मुख से यह मधुर वाणी सुनकर भैरव योगी मन ही मन में कुछ डर से गए। माँ की शक्ति क़े आगे जैसे उनका सारा साहस टूट रहा हो। लेकिन जब मन में पाप हो तो अपनी हार मानना इतना सरल नहीं होता, तभी भैरव योगी ने आगे बढ़कर कहा- "माँ! मैंने तो सुना है आप अपने दरबार में आने वाले हर भक्त की इच्छा पूरी करती हैं।"

"हाँ मैं अपने हर भक्त की धर्म नीति के अनुसार इच्छा पूर्ण करती हूँ।"

"तो क्या आप मेरी भी इच्छा पूर्ण करेंगी ?"

"पहले अपनी इच्छा को स्पष्ट करो।" बिना स्पष्टीकरण के मैं आपको कोई वचन नहीं दे सकती।

तुम झूठी देवी हो। तुमने हम नाथों और सिद्धों के विरुद्ध प्रचार करके हमारे गुरू गोरखनाथ का अपमान किया है। तुम यह मत भूलो यह सारा क्षेत्र हमारा है। यहां पर हमारा राज्य चलता है। हम अपने किसी भी विरोधी को इस क्षेत्र में रहने नहीं देते और फिर तुम्हारे जैसी सुन्दरी हा - हा - हा - हा तुमने हम सिद्धों को बदनाम किया है हम तुम्हें हा - हा - हा - हा।

माँ दुर्गे ने अपनी आत्म शक्ति से यह जान लिया था कि इस योगी के मन में पाप आ चुका है, शराब के नशे में वह अन्धा हो गया है।

माँ दुर्गा चाहती तो अपनी शक्ति से वहीं पर भस्म कर सकती थी, परन्तु माँ किसी सिद्ध की हत्या करके अपने माथे पर पाप का टीका नहीं लगाना चाहती थी। इस समय उन्होंने अंतर्ध्यान होकर चले जाने में ही अपनी भलाई समझी।

देवी माँ को वहां से जाते देखकर भैरव योगी ने यह समझा कि देवी उसके डर से भाग रही है। तभी उसने भी भागकर माँ को पकड़ कर अपने अपमान का बदला लेने का प्रयास किया।

माँ की शक्ति को भैरव योगी कहां पहचान सकते थे फिर यह तो पाप और पुण्य का युद्ध था। धर्म और अधर्म का संघर्ष था।

माँ अपनी शक्ति से जम्मू से 10 कि. मी. दूर नगरकोट के स्थान पर जा पहुंची। जैसी ही माँ ने नगर कोट गाँव में प्रवेश किया तो नगर के बाहर कुछ कन्यायें खेल रही थी। माँ भी उनके साथ मिलकर खेलने लगी। थोड़ी देर तक खेलने के पश्चात् एक कन्या ने कहा - "मुझे तो बड़े जोर की भूख लग रही है।" उसके साथ अन्य कई लड़कियों ने भी कहा भूख तो हमें भी लग रही है। तभी देवी माँ ने अपनी दिव्य शक्ति से उन सब लड़कियों को स्वादिष्ट भोजन खिलाये। खाना खाने के पश्चात् सबको पानी की प्यास लगी तो कन्याओं ने उसी कन्या से कहा जो वास्तव में "माँ शक्ति" थी।

"बहन कहने को तो तुमने अपनी कृपा से हमें भोजन तो बहुत अच्छा खिला दिया, परन्तु पीने के लिए पानी तक नहीं दिया।"

"लो बहनों मैं तुम्हें सोने का कटोरा देती हूँ, जाओ आज तुम सब इस कटोरे में जी भरकर पानी पियो।"

"मगर बहन कटोरा तो तुमने दे दिया परन्तु पानी कहाँ है, यहाँ तो पीने का पानी मिलेगा नहीं।"

"पानी नहीं है-वे सामने जो तलैया है उससे पानी लेकर पी लो बहनों।"

"वह तलैया तो कब कि सूखी पड़ी है बहन।"

"अब वह तलैया सूखी हुई नहीं, तुम लोग वहां जाकर पानी पी लो।"

हुआ भी यही, जब सब कन्यायें उस सूखी तलैया के पास पहुंची तो वहां पर जल ही जल था। उस जल को पीकर सब लड़कियाँ खुशी से झूमती हुई कहने लगी- "कितना मीठा जल है, आनन्द आ गया। यह पानी नहीं अमृत है। हमें तो डर है कि यह फिर से सूख न जाय।"

"नहीं सूखेगा बहनों...यह तलैया कभी नहीं सूखेगा। आज से मैं इसे "कौल कन्धौली" का नाम देती हूँ।"

आज माँ वैष्णों देवी के सभी भक्त जानते हैं कि कौल कंधौली भी किसी तीर्थ स्थल से कम नहीं है, क्योंकि माँ दुर्गा कौल-कंधौली में ही रहना शुरू कर दी थीं।

माँ भक्तों को जैसे ही सूचना मिली कि दुर्गा माँ कौल कंधौली में रह रही है, बस फिर क्या था देश के कोने कोने से माँ के भक्त वहीं पर आने लगे थे।

वहीं पर माँ की एक पुजारिन "माई देवा" रहती थी, जो हर समय माँ की सेवा में पड़ी रहती। माँ की सेवा करना ही उसका एकमात्र धर्म था। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर माँ ने एक रात को उसे साक्षात अष्टभुजी रूप में अपने दर्शन दिए और साथ ही उसे यह वरदान भी दिया कि-

"लोग मेरी पूजा के साथ-साथ तुम्हारी भी पूजा किया करेंगे। मेरे साथ माई देवा का भी नाम होगा। मेरे भक्त पहले तुम्हारे दर्शन करेंगे उसके पश्चात् मेरे दर्शन करेंगे।"

माँ का वरदान पाकर माई देवा इतनी प्रसन्न हो गई कि उसने माँ के चरणों में ही अपने प्राण त्याग दिए। माई देवा का यह मंदिर आज भी भक्तजनों के लिए तीर्थ स्थल बना हुआ है। कुछ लोग इसे माई देवा का दर कहते हैं।

कोल कंधौल में देवी माँ के दर्शनों की बढ़ती भीड़ को देखकर चारों ओर के लोग एकदम से जागृत हो उठे थे।

भैरवनाथ योगी को भी यह खबर मिल गई कि देवी माँ उस पहाड़ में जाकर छुप गई है। इसका अर्थ है कि देवी अभी तक जीवित है। जब तक देवी जीवित रहेगी तब तक हम नाथों को कोई नहीं पूछेगा। हमारे सारे उपासक एक-एक करके देवी के उपासक बनते जा रहे हैं। अब या तो देवी रहेगी या हम। हम सिद्ध हैं, मांसाहारी हैं..हम गोरखनाथ के चेले हैं। हमारी शक्ति के आगे कोई शक्ति नहीं ठहर सकती। इन पहाड़ों में एक ही शक्ति रहेगी। हम या देवी।

क्रोध में भरा भैरवनाथ अपने 360 चेलों को लेकर जम्मू की और चल पड़ा। चलते-चलते वे सब हंसाली नाभ के गाँव में पहुंचे। वहां पर देवी भक्त पंडित श्रीधर रहते थे। गाँव में जाते ही भैरव नाथ को यह पता चल गया कि इधर ही एक बड़ा देवी भक्त पंडित श्रीधर रहता है तो वे अपने सारे चेलों को लेकर उनके घर पर जा पहुंचे और जाते ही पंडित जी से बोले-

"देखो ब्रह्मदेव। आज तुम्हारे द्वार पर पूरे 360 सिद्ध नाथ आए हैं, तुम्हें इन सबके खाने का प्रबन्ध करना होगा।"

"मगर पंडित जी की आवाज गले में ही फंसकर रह गई। हम नाथ हैं-गुरू गोरखनाथ के चेले। हम ब्राह्मण के घर से भूखे जायेंगे तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायेगा।"

"ऐसा शाप न दो नाथ। मैं गरीब हूं, मेरे में तो अपने खाने के लिए भी कुछ नहीं।"

"तुम तो देवी के भक्त हो ?"

"हाँ नाथ....।"

"फिर उस देवी की शक्ति को ही कहो न कि वे तुम्हारे घर में भोजन का प्रबन्ध करे, क्या तुम्हारी देवी में इतनी भी शक्ति नहीं जो हम सिद्धों के लिए तुम्हारे घर में भोजन ले आए ?"

"उसमें बहुत शक्ति है नाथ.....।"

"शक्ति है तो हमें भी उस शक्ति को दिखा दो। हमारे लिए खाने का प्रबन्ध यदि तुम नहीं कर सके तो समझ लेंगे कि तुम्हारी देवी झूठी है, पाखंड है, वह धोखा देती है, उसने हम सिद्धों की शक्ति को नहीं देखा।" आज हम देखेंगे उस देवी की शक्ति।

श्रीधर का सारा शरीर कांपने लगा। वह मन ही मन में देवी माँ की उपासना करते हुए कहने लगा-"हे माँ। आज मेरी लाज रख लो। इन सिद्धों से मुझे बचालो।" उसी समय यह आकाश वाणी हुई "भक्त चिन्ता मत करो। मैं इन सबके खाने का प्रबंध करूंगी, ये लोग मेरे भक्तों की परीक्षा लेने आए हैं, तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो।"

माता की ओर से की गई आकाशवाणी को सुनकर श्रीधर ने भैरवनाथ से जाकर कहा-

"महाराज। आप सबके खाने का प्रबन्ध मैं कर रहा हूँ। आप नहा-धोकर आएं तब तक खाना भी तैयार हो जाएगा।"

"देखते हैं तुम्हें हम भी कि तुममें और तुम्हारी देवी में कितनी शक्ति है ?" यह कहते हुए भैरवनाथ अपने चेलों को साथ लेकर स्नान करने चला गया।

इधर अपने आप ही श्रीधर की कुटिया में सोने-चांदी के बर्तनों में अनेकों प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तैयार अवस्था में भर गये। माँ की कृपा से भंडार के भंडार भोजन सामग्री वहां उपस्थित हो गये और अपने आप ही सोने चांदी के बर्तनों में खाने वालों के लिए सज गया। "भूमिका" नाम के स्थान पर भैरव नाम और उनके सारे चेलों को बैठकर खाना खिलाया गया। सिद्ध लोगों ने जीवन में पहली बार ऐसा स्वादिष्ट भोजन खाया था। क्या मजे ले-लेकर खाना खा रहे थे। वे लोग, यह तो देखते ही बनता था।

लेकिन, भैरवनाथ तो अन्दर ही अन्दर किसी नए "षड़यंत्र" की तैयारी में थे,

वे चाहते थे कि देवी भक्त श्रीधर को किसी प्रकार से बदनाम करें। तभी भैरव नाथ ने अचानक कहा-

"देखो देवी के भक्त, हम नाथ सिद्ध लोग है, हम तुम्हारे ये सब भोजन खाकर संतुष्ट नहीं, हमें तो मांसाहारी भोजन और शराब पीने को चाहिए।"

उसी समय "माँ वैष्णों देवी" प्रकट हुई। उसने भैरव नाथ को बड़े धैर्य से समझाते हुए कहा "देखो सिद्ध बाबा, यह वैष्णों देवी के भक्त का भंडारा है, यहां पर मांस, शराब जैसी मादक वस्तुओं का नाम लेना भी पाप है, इसलिए जो कुछ हमारे भंडारे से मिलता है उसे ही स्वीकार करें। इससे अधिक कोई आशा न रखें।"

माँ की ओर भैरव नाथ घूर-घूर कर देख रहा था, उसकी नजरों से पाप की परछाईयाँ फूट फूट कर देवी माँ की कोमल कंचन शरीर पर पड़ रही थी, पापी का हाथ माँ के शरीर की ओर बढ़ा। माँ शक्ति समझ गई कि सिद्ध भैरव नाथ भ्रष्ट हो चुका है। अब इससे बचने का एक ही रास्ता है कि यहाँ से भाग जाऊँ, नहीं तो भैरव नाथ को मारना ही पड़ेगा।

माँ शक्ति वहां से भाग खड़ी हुई, भैरव नाथ भी उनके पीछे भागने लगा। माँ वैष्णो देवी भागती हुई पहाड़ के उस स्थान पर जा पहुंची, जिसे आजकल "बाण गंगा" कहा जाता है। लेकिन भैरवनाथ तो पथभ्रष्ट हो चुका था, वह बिजली की तेजी के साथ वहां पर भी जा पहुंचा। उसने मां के निकट जाकर उन्हें पकड़ना चाहा तो उसी समय माँ अंर्तध्यान हो गई। भैरव नाथ हाथ मलता ही रह गया, परन्तु भैरव नाथ के मन में जो पाप भर गया था उसे कैसे निकाला जा सकता था। लोगों ने ठीक ही तो कहा है कि "पाप का घड़ा भरकर डूबता है।"

भैरव नाथ एक बार फिर से माँ वैष्णो देवी की तलाश करने लगा। माँ वैष्णो देवी पहाड़ों पर चलते-चलते थक सी गई थी। गर्मी के मारे माँ परेशान हो रही थी। एक स्थान पर पहुँचकर माँ ने सोचा कि अब स्नान कर लिया जाये। लेकिन पहाड़ पर पानी कहाँ था ? और पानी के बिना स्नान कहां किया जा सकता है। यही सोचकर माँ ने अपने धनुष को कंधे से उतारा और एक बाण पत्थरों के सीने में मारा तो वहां पर पानी की तेज धारा बह निकली। माँ ने पवित्र जल में स्नान किया और वहाँ पर बैठकर थोड़ा विश्राम करने लगी।

आज हम माँ भक्त उस स्थान को "बाण गंगा" के नाम से याद करते हैं, क्योंकि माँ ने वहां अपने केश भी धोए थे, इसलिए उसे "बाल गंगा" भी कहा जाता है।

माँ के पवित्र चरण उस स्थान पर कुछ समय के लिए पड़े थे, वहीं पर उन्होंने विश्राम किया इसलिए उनकी स्मृति में वहां एक छोटा सा मंदिर बना हुआ है।

माँ वैष्णो देवी ने अपने आप को भैरव नाथ की नजरों से बचाने के लिए "गर्भ गुफा" का सहारा लिया, क्योंकि भैरवनाथ आदकुमारी पहुंच चुका था। इस पवित्र स्थान पर भी माँ देवी ने कुछ देर विश्राम किया था।

भैरव नाथ के मस्तिष्क पर तो राक्षसी बुद्धि का अधिकार हो चुका था, वह माँ वैष्णो को ढूंढता हुआ उस गुफा तक जा पहुंचा।

माँ वैष्णो देवी उस गुफा से निकलकर अपनी त्रिकुट पर्वत वाली गुफा में फिर से जा पहुंची। इसे आजकल हमलोग "गर्भ गुफा" के नाम से जानते हैं।

"गर्भ गुफा" का अर्थ वही है जो गर्भाशय में इस संसार में आने से पूर्व बच्चे का होता है, वहां से निकल पाना कोई सरल बात नहीं। भैरव नाथ से बचने के लिए माँ के लिए यह गर्भगुफा किसी किले से कम सिद्ध नहीं हुई।

भैरवनाथ उस गुफा में आकर भटकता फिरता रहा। मगर उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि जाए तो कहां जाए ? किधर जाएं ?

माँ ने अपने आप को उस पापी से बचाने के लिए द्वार पर "लांगुर वीर" को पहरेदार बनाकर खड़ा कर दिया। उसे यह आदेश दिया कि-

"भैरव नाथ किसी भी कीमत पर उसकी गुफा में न आए।"

"मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करने के लिए वचनबद्ध हूँ माहेश्वरी।"

माँ अपनी गुफा में जैसे जाकर विराजी तो देवगण उन्हें पापी के हाथों से बचते देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे सब के सब माँ दुर्गे की पूजा के लिए उसी गुफा में आ गए। सब देवगणों ने मिलकर माँ का पूजन किया।

उधर भैरव नाथ ने भी हिम्मत नहीं हारी थी, वह अब भी माँ का पीछा करता उस गुफाओं में फिर रहा था। कुछ ही समय के पश्चात् वह उस गुफा के द्वार पर भी पहुंच गया तो द्वार पर खड़े "लांगुर वीर" ने उनसे पूछा-

"सिद्ध नाथ। आप यहां क्या करने आए हो ?"

"आपकी माता ने मुझे भोजन पर बुलाया है, मैं उनके निमंत्रण को पाकर ही आया हूँ। तुम अपनी मां से अंदर जाकर कहो कि आपने जो भैरव नाथ को मांस, मद्य का भोजन देना था, मैं उसके लिए ही यहां तक पहुंचा हूँ।"

लागुंर वीर ने जैसे ही उसके मुख से ये शब्द सुने तो उसे एकदम से क्रोध आ गया। क्रोध में भरा लांगुर वीर बोला - "ओ-दुष्ट पापी! तुम यथाशीघ्र यहां से चला जा अन्यथा मै तेरा सिर काटकर पहाड़ों में फैंक दूंगा।"

"ओ पागल लांगूर, क्या तुम नहीं जानता कि मैं एक तपस्वी साधक हूँ, मैंने अपनी तपस्या के बल पर यह वरदान प्राप्त कर रखा है कि मुझे इस संसार में कोई नहीं मार सकता, तू भला मुझे क्या मारेगा।" "मैं अन्दर जाऊंगा जरूर जाऊँगा, तुम्हारी देवी के हाथों से मद्य पिऊँगा और उसके हाथों का बना स्वादिष्ट मांस खाऊँगा।"

"तुम अन्दर नहीं जा सकते।"

"मैं अन्दर जाऊँगा।"

"जब तक मैं इस द्वार पर खड़ा हूँ तुम अंदर नहीं जा सकते।"

"मैं अन्दर जाऊँगा और जरूर जाऊँगा।"

बस इसी बात को लेकर दोनों में युद्ध होने लगा। उन दोनों के लड़ने की आंवाजें सुनकर माँ वैष्णो देवी भी वहां पर आ गयी थी।

लांगुर वीर और भैरव में खूब खुलकर युद्ध होने लगा, लेकिन भैरव हार मानने वाला नहीं था, उसने अपने भाले से जैसे ही लंगूर को मारना चाहा तो ठीक उसी समय मां वैष्णों ने अपने त्रिशूल से भैरव का सिर काटकर उसके शरीर से अलग करके फैंक दिया।

भैरव का सारा घमण्ड टूट कर चकना चूर हुआ। माँ की कृपा से उसके अंदर का सोया हुआ सिद्धनाथ जाग उठा और वह अपने आप कहने लगा-

''हे माँ! मुझ पापी को क्षमा कर देना, मैं ही आपका सबसे बड़ा अपराधी हूँ। इसमें मेरा भी दोष क्या है असल में मेरी बुद्धि ही भ्रष्ट हो गयी थी। माँ मुझे क्षमा कर दो, तुम माँ हो, मैं आपका पुत्र हूँ, पुत्र भूल करते हैं माँ क्षमा करती आयी है, एक बार अपने मुख से यह कह दो माँ कि मैंने तुम्हें माफ किया ताकि मैं आराम से मर सकूं, इससे मेरी मुक्ति होगी।''

भैरवनाथ को रोते देखकर माँ को उस पर दया आ गई। माँ जानती थी कि भैरव नाथ बहुत बड़ा सिद्ध है-इससे जो जाप हुआ है उसमें उसकी राक्षसी बुद्धि का दोष है, तभी माँ ने कहा-

भैरवनाथ! तुमने अपनी भूल मान ली अत: तुम्हें मैं क्षमा करते हुए वरदान देती हूँ कि अब मेरे साथ-साथ लोग तुम्हारी भी ''उपासना'' करेंगे। जो लोग दर्शन को आयेंगे वे आपके भी दर्शन किया करेंगे अन्यथा उनकी उपासना पूरी नहीं मानी जायेगी। मैं तुम्हें ''अमर'' कर रही हूँ भैरव नाथ, क्योंकि तुमने अपनी भूल स्वीकार करके अपने सिर को मेरे पांव में रख दिया। अब मैं तुम्हारे इस सिर को उस पवित्र स्थान पर पहुंचा रही हूँ जहां पर तुम ''अमर भैरव'' कहलाओगे। यह कहते हुए माँ वैष्णवी ने अपनी शक्ति से उस सिर को वहां से दूर एक पहाड़ी पर पहुंचा दिया।

अब आप वहां स्मृति के रूप में ''भैरव जी'' के मंदिर को देखते हैं। माँ के दर्शन करने वाले भक्त वापसी पर भैरव के मंदिर के दर्शन करके आते हैं।

पाठकों! यह उपरोक्त कथा श्री ''भैरव नाथ योगी'' जी से सम्बन्धित है, भगवान भैरव से नहीं, क्योंकि भगवान भैरव तो साक्षात ''रूद्र'' ही है अन्य नहीं।

पाठकों! अब मैं इस ग्रन्थ को यहीं ''विराम'' देता हूँ। आप इस महा ग्रन्थ से भगवान भैरव की साधना उपासना कर जीवन सफल बनावें और साधना में ''गुरू कवच सिद्ध यंत्र'' की आवश्यकता अनुभव करे तो पत्राचार करें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ-

लेखक तांत्रिक एवं ज्योतिषाचार्य,
**वाई. एन. झा. ''तूफान''**
H. No. 61, टोबरी मुहल्ला,
नजदीक-देवी तालाब हॉस्पीटल,
टांडा रोड, जालंधर सिटी।
फोन-0181-490311

# श्री बटुक भैरव की आरती



आरती कीजै श्री बटुक भैरव की। विपदा विदारण भक्त हृदय की॥
हाथ त्रिशूल गले मुण्डमाला। डमरू खड्ग त्रिनेत्र विशाला॥
राजत चन्द्रकला शिव नीकी। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
क्षेत्रपाल शमशान के वासी। व्यालपवीत हाथ यम फांसी॥
शोभित रूप दिगम्बर नीकी। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
जयशंकर प्रियबन्धन हारी। बलिमुकनाथ शत्रुलयकारी॥
वाहन स्वान जगत के फीकी। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
व्याघ्र चर्म परिहत योगिनपति। काशी द्वारपाल भैरव पति॥
पशुपति भिक्षुक भेष बटुक की। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
मूसल दक्षिण अङ्ग बहन्ता। खप्परधारी योगिन कन्ता॥
अष्टमूर्ति भूधर योगी की। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
दिगम्बर बटुकेश कृपाला। काल शमन कंकाल कपाला॥
नाश करत शक्ति दुष्टन की। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥
बटुक भैरव की जो आरती गावै। व्याघ्र चर्म रुद्राक्ष चढ़ावै॥
रक्षा करत प्रभु ताके घर की। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
सभी भक्त यह आरती गावत। बिल्व पत्र फल लै नित आवत॥
आरती करत काल भैरव की। आरती कीजै श्री बटुक भैरव की॥

# भैरवदेव की मधुर आरती



ॐ जय भैरव बाबा।
स्वामी जय भैरव बाबा॥

नमो विश्व भुतेश भुजंगी मंजुल कहलावा।
उमानन्द अमरेश विमोचन जनपद सिरनावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

काशी के कुतवाल आपको सकल जगत ध्यावा।
श्वान सवारी बटुकनाथ प्रभु मद पी हरषावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

रवि के दिन जग भोग लगावै मोदक मन भावा।
भीषण भीम कृपालु त्रिलोचन खप्पर भर खावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

शेखर चन्द्र कृपालु शशी प्रभु मस्तक चमकावा।
गलमुण्डन की माल सुशोभित सुन्दर दरसावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

नमो नमो आनन्द कन्द प्रभु लटकत मठ झावा।
कर्ष तुण्ड शिव कपिल त्र्यम्बक यश जग में छावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

जो जन तुम्हरो ध्यान लगावत संकट नहिं पावा।
छीतर मल जन शरण तुम्हारी आरति प्रभु गावा।
ॐ जय भैरव बाबा।

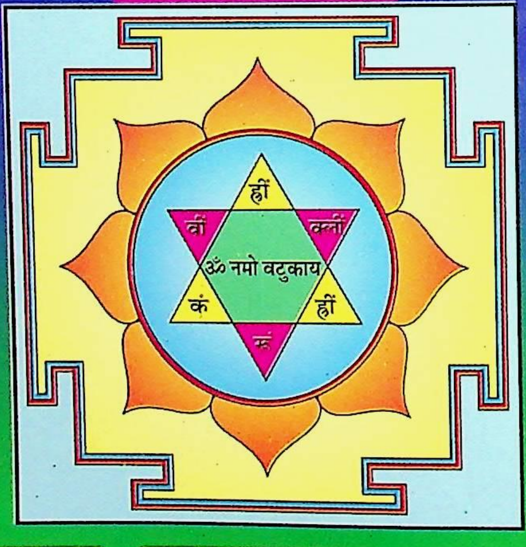
॥ इति शुभम् ॥

# भैरव सिद्धि



भैरव की उपासना करने वाले जातक को चाहिए कि [illegible] मुहू[illegible] में प्रातः काल उठ कर दैनिक नित्य कर्मों से निवृत होकर रात[illegible] [illegible] में भस्म त्रिपुण्ड धारण कर रुद्राक्ष की माला गले में धारण कर कूर्मचक्र में संशोधित अपने आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाए। सर्वप्रथम गणेशादि देवों का स्मरण कर अपने गुरुदेव का ध्यान करता हुआ- 'ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं' इस मूल मंत्र से - तीन चार बार आचमन करे, मूल मन्त्र से प्राणायाम करे।

॥श्री भैरव यन्त्रम्॥




**अमित पॉकेट बुक्स**